श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन, [illegible] मंदिर [illegible] (उ.प्र.)

तीर्थंकर पार्श्वनाथ की अद्भुत प्रतिमायें

5. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, बरियावाला के नन्हें जैन मंदिर के पास, हनुमानताल जबलपुर, मध्यप्रदेश में ऊपरी मंजिल पर स्थित, द्वितीय वेदिका पर सफेद संगमरमर का पद्मासनस्थ एवं नौ सर्प फणावलियों से युक्त जिनबिम्ब है, जिसके पादपीठ पर ऊपर की ओर सूँड/शुंड उठाये हुये 'हाथी' खड़ा हुआ दिखता है (चित्र क्र. 5)।

संकलन: निर्यापक मुनि श्री अभयसागर जी महाराज, मुनि श्री प्रशांतसागर जी महाराज, मुनि श्री [illegible] जी महाराज, मुनि श्री निर्वेगसागर जी महाराज

[illegible] - www.sanskarsagar.org/knowledge

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		मई 2025	
16	शुक्रवार	चतुर्थी	मूल
17	शनिवार	पंचमी	पूर्वाषाढ़
18	रविवार	षष्ठी	उत्तराषाढ़
19	सोमवार	सप्तमी	श्रवण
20	मंगलवार	अष्टमी	धनिष्ठा
21	बुधवार	नवमी	शतभिषा
22	गुरुवार	दशमी	पूर्वाभाद्रपद
23	शुक्रवार	एकादशी	उत्तराभाद्रपद
24	शनिवार	द्वादशी	रेवती
25	रविवार	त्रयोदशी	अश्विनी
26	सोमवार	चतुर्दशी	भरणी/कृत्तिका
27	मंगलवार	अमावस/प्रतिपदा	रोहिणी
28	बुधवार	द्वितीया	मृगशिरा
29	गुरुवार	तृतीया	आर्द्रा
30	शुक्रवार	चतुर्थी	पुनर्वसु
31	शनिवार	पंचमी	पुष्य
		जून 2025	
1	रविवार	षष्ठी	आश्लेषा
2	सोमवार	सप्तमी	मघा
3	मंगलवार	अष्टमी	पूर्वाफाल्गुनी
4	बुधवार	नवमी	उत्तराफाल्गुनी
5	गुरुवार	दशमी	हस्त दिन/रात
6	शुक्रवार	एकादशी	हस्त
7	शनिवार	द्वादशी	चित्रा
8	रविवार	त्रयोदशी	स्वाती
9	सोमवार	त्रयोदशी	विशाखा
10	मंगलवार	चतुर्दशी	अनुराधा
11	बुधवार	पूर्णिमा	ज्येष्ठा
12	गुरुवार	प्रतिपदा	मूल
13	शुक्रवार	द्वितीया	पूर्वाषाढ़
14	शनिवार	तृतीया	उत्तराषाढ़
15	रविवार	चतुर्थी	श्रवण

तीर्थंकर कल्याणक

16 मई : भगवान [illegible] जी गर्भ कल्याणक
22 मई : भगवान विमलनाथ जी गर्भ कल्याणक
24 मई : भगवान अनंतनाथ जन्म तप कल्याणक
26 मई : भगवान शांतिनाथ जन्म तप मोक्ष कल्याणक
27 मई : भगवान अजितनाथ जी गर्भ कल्याणक
30 मई : भगवान धर्मनाथ जी मोक्ष कल्याणक
07 जून : भगवान सुपार्श्वनाथ जी जन्म तप कल्याणक
13 जून : भगवान अजितनाथ जी गर्भ कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

26 मई: [illegible] दिवस
27 मई: सोलह दिवसीय शुक्ल पक्ष प्रारंभ/रोहिणी व्रत
31 मई: श्रुत पंचमी जिनवाणी दिवस
11 जून: सोलह दिवसीय शुक्ल पक्ष पूर्ण
11 जून: संत शिरोमणि दिवस आचार्य श्री विद्यासागर

सर्वार्थ सिद्धि

16 मई:	05/45 बजे	से 16/52 बजे तक	।
19 मई:	05/45 बजे	से 19/29 बजे तक	।
23 मई:	16/02 बजे	से 29/43 बजे तक	।
25 मई:	05/43 बजे	से 11/12 बजे तक	।
28 मई:	05/42 बजे	से 24/29 बजे तक	।
29 मई:	22/38 बजे	से 29/42 बजे तक	।
30 मई:	05/42 बजे	से 21/29 बजे तक	।
07 जून:	09/40 बजे	से 29/41 बजे तक	।
09 जून:	15/31 बजे	से 29/41 बजे तक	।
14 जून:	24/22 बजे	से 29/42 बजे तक	।

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभ: मई-18,23,25,28 जून-5,6
मशीनरी प्रारंभ: मई-15 जून-5,11
वाहन खरीदने: मई-24,26,31 जून-6

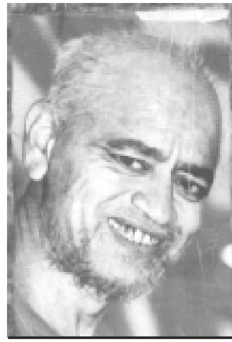

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 313 • मई 2025
• वीर नि.संवत 2551-52 • विक्रम सं. 2082 • शक सं. 1945

लेख

• आहार दान दिवस के संदर्भ में संस्कृति और सभ्यता के तीर्थंकर ऋषभदेव 08
• निर्ग्रन्थ प्रतिमाः परम्परा एवं वैशिष्ट्य 13
• राष्ट्रीय लुप्तप्राय प्रजाति दिवस 19
• अष्ट सहस्री में मंगलाचरण में श्रद्धा और गुणज्ञता 20
• श्रुताराधना महोत्सव 21
• गोत्र विचार 22
• अंतरिक्ष पार्श्वनाथ बस्ती मंदिर और दिगम्बर 27
• द्रव्य लिंगी मुनि का स्वरूप और प्रकार 30
• द्रव्यलिंगी मात्र मिथ्यादृष्टि ही नहीं सम्यग्दृष्टि भी होते हैं 31
• पट्टाचार पद प्रतिष्ठा संस्कार महोत्सव 34
• सम्हालों प्रकृति से गति 46
• श्रमण शतक में मंगल भावना 48
• **वरिष्ठ नागरिकः** प्रेम ही सुखी जीवन की राह है 58
• किडनी में पथरी? अब और नहीं ! किड़नी रोग पथरी लक्षण व उपचार 59

बाल कहानी

• शक काला जादू का 63

कविता

• समता धरते 12
• मजबूरी 24
• और न कोई सहारा 29
• ऋषभदेव को सदा प्रणाम 33
• मोक्षमार्ग की श्रेष्ठ साधना 44
• मिथ्यामत नहीं मानो 61

कहानी

• प्रतिभा दब गई 50

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 25
चलो देखें यात्रा : 34 • आगम दर्शन :35 • माथा पच्ची : 36 • पुराण प्रेरणा : 37
• कैरियर गाइड : 38 • दुनिया भर की बातें : 39 • इसे भी जानिये: 44
•दिशा बोध : 45• हमारे गौरव : 55 • वरिष्ठ नागरिक : 58 • हास्य तरंग-पाककला : 62
• बाल संस्कार डेस्क : 63 • संस्कार गीत व बाल कविता : 64 • समाचार : 65

प्रतियोगिताएं

: वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–6232967108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826593189

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
डॉ.ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8450088410

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, इंदौर –9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

✻ आंतरिक सज्जा ✻
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: 2100/-	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: 5001/-	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: 11000/-	(सदैव)
-परम संरक्षक	: 15001/-	(सदैव)

अपने शहर के
• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –संस्कार सागर
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
• भारतीय स्टेट बैंक –ब्र. जिनेश मलैया
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
•आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–3193601
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों आजमी आबू एस पी विधायक ने औरंगजेब को कहा कि औरंगजेब क्रूर नहीं थी उसने मंदिर ही नही मस्जिद भी तोड़ी वह महान था। इस तरह औरंगजेब को महिमा मंडित करने का महाराष्ट्र की राजनीति गरम हुई। जिसमें कहा गया कि इस देश की नायक नही हो सकता है। अतः आर.एस.एस ने कहा औरंगजेब आज अप्रारूपगिक है उसकी चर्चा करना ही गलत है। देश को तोड़ने वाले को सदैव दर किनार करना चाहिए। औरंगजेब को सुनकर भी हर कौम को अपनी एकता शांति बनाये रखना परम कर्तव्य है।

एकता जैन, गुना

• सम्पादक महोदय, देवशास्त्र गुरु की त्रिवेणी श्रवणबेलगोला शीर्षक से लेख संस्कार सागर के अप्रेल अंक में प्रकाशित हुआ। इस लेख के माध्यम से तीर्थ क्षेत्र के 32 जिनालयों का परिचय सहज रूप से प्राप्त हुए एतर्थ ब्र. समता जी का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ तथा संस्कृति संरक्षण में दिगम्बर जैन तीर्थ श्रवणबेलगोला के योगदान को याद कर अंतर मन से अभिभूत हो गया। श्रवणबेलगोला मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त की साधना भूमि है यह बहुत बड़े गौरव की बात है। तथा भद्रबाहु जैसे महान आचार्य की समाधि भूमि भी यह तीर्थ है। लेख ने मेरे मन पर ऐसा रेखचित्र तैयार किया कि कुछ समय तो ऐसा लगा जेसे मैं श्रवण बेलगोला में ही हूँ। लेखिका को पुनः धन्यवाद।

अभिषेक जैन, सतना

• सम्पादक महोदय, विगत माह 14 मार्च को दिल्ली उच्च न्यायालय न्यायाधीश यशवंत वर्मा के घर में आग लगी इसके बंगले से भारी मात्रा में नगद राशी भी मिली तथा उनकी बदली इलाहाबाद हाईकोर्ट हुई परंतु बार एशोशियेसन के अध्यक्ष ने कहा हम न्यायाधीश वर्मा का स्वागत नही करेंगे। इस वाक्य से यह लगता है कि भ्रष्टाचारी कोई भी हो उसका स्वागत नही करना ईमानदारी का स्वागत ही होगा इससे यह संदेश अवश्य जायेगा कि भारत पर आज भी ईमानदारी जिंदा है।

नमन जैन, सावरमति गुजरात

• सम्पादक महोदय, विगत माह संस्कार सागर के अप्रैल माह के अंक में जैन रामायणें शीर्षक से प्रो. डी.एल. नरसिंहाचार्य एम.ए. के लेख को पढ़ा। लेखक की विद्वता को देखकर में आश्चर्य में पड़ गया जैन रामायणों की व्यपकता और काव्य धर्मिता सदैव सराहनीय मानी गई है भगवान जैनें के स्वाभाविक इष्ट देवता है भले ही भगवान राम का नाम तीर्थंकरों की सूची में नहीं परंतु वे जेनों के लिए तीर्थंकरों से कम भी नही है। जैन रामायणों से जैन धर्म की उदारता एवं सार्वभौमिकता का प्रमाण मिलता है। आचार्य विमलसूरि, आचार्य रविषेण की काव्य शैली ने जैन धर्म में रामचंद्र के उदप्त चरित्र को जैन मानस के समक्ष प्रस्तुत करके रावण जैसे की विद्वतता का सम्मान किया है लेख सुबोध हृदय स्पर्शी है।

राजकुमार जैन, इंदौर

भक्ति तरंग
खरी पहचान

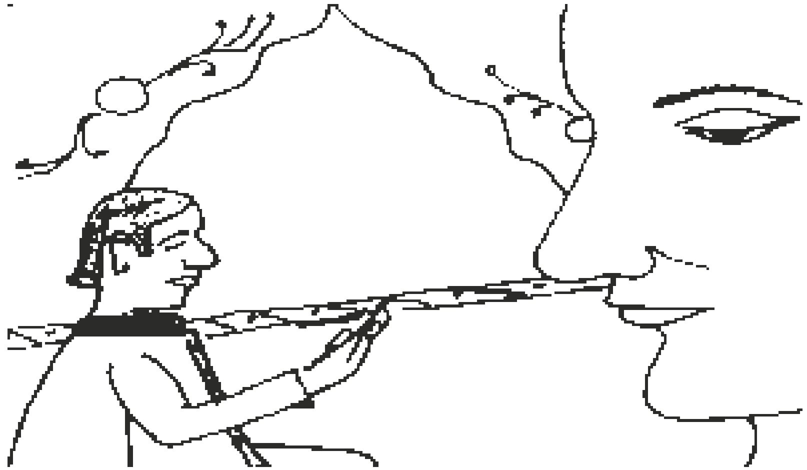

अब हम आतम को पहिचान्यौ ।। टेक ।।
जब ही सेती मोह सुमर बल, खिनक ए क मे भान्यौ ।।अब।।
राग विरोध-विभाव भाजे झर, ममता भाव पलान्यौ ।
दरसन जान चरन में चेतन, भेद रहित पर वान्यौ ।। अब ।। 1।।
जिहि हम अवर न देख्यो, देख्यो सो झर धान्यौ ।
ताजौ कहो कहैं कैसे करि, जा जानै जिन जान्यौ ।।अब ।।2।।
पूरब भाव सुपनवत देखे, अपनो अनुभव तान्यौ ।
द्यानत ता अनुभव स्वादत ही, जनम सफल करि मान्यौ ।। अब ।।3।।

अहो ! अब हमने आत्मा को पहिचान लिया है जब से हमने मोह नाम के प्रबल शत्रु को एक क्षण में जान लिया है।

राग-द्वेष रूपी विभावों को भयकर मोहरूपी भाव का हमने नाश कर दिया है और अब अपने चित्त में सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र द्वारा भेद रहित एक मात्र अपने चैतन्य स्वरूप को जान लिया है।

इसे देखने-जानने के बाद अब इसके अतिरिक्त हमने किसी को भी नही देखा और जो अपने इस चैतन्य स्वरूप को देखा जाना पहचाना, उसका ही श्रद्धान विश्वास किया है।

अब तक रहे भाव सब स्वपन के समान थे। अब मात्र अपनी आत्मा का अनुभव है। द्यानतराय कहते हैं कि उस अनुभव के स्वाद में , रस ही में शान्ति है, उसी में अपना जन्म सफल माना गया है।

अटपटे सवाल

भूषण शाह नाम के एक कवि विद्वान द्वारा सम्पादित पुस्तिका **वीर के वंशज कौन** में असंबद्ध मुद्दे उठाकर समाज को भ्रमित करने का कुत्सित प्रयास किया गया है भगवान महावीर वंश की बात करने के पहले यदि उनकी साधना की बात करे तो भगवान महावीर ने सदैव नग्न साधना की है उनके देव दूष्य की बात करना एक कल्पना के सिवाय और कुछ नहीं है।

भगवान ऋषभदेव की नग्न साधना का उल्लेख पुराण साहित्य में उपलब्ध है तथा भगवान महावीर के संबंध श्वेताम्बर मत भी स्पष्ट नहीं है श्वेताम्बर आगम में भगवान महावीर देव दूष्य को लेकर तीन बातें सामने आती है।

भगवान महावीर 1 वर्ष तक देव दूष्य के साथ रहे। इसके बाद वे नग्न साधन में लीन रहे अब उनके देवदूष्य का क्या हुआ।

1. कुछ लोगों का कहना है कि जिसने भगवान महावीर के कंधे पर वस्त्र डाला था उसने उसी दिन वापिस ले लिया।

2. किन्ही का कहना है कि 21 महिने में वह वस्त्र छिन्न भिन्न हो गया।

3. कुछ का कहना है कि एक वर्ष बाद भगवान महावीर के कंधे का वस्त्र खंडलिक ग्रहण ने ले लिया।

4. कुछ कहते है कि उनका वस्त्र हवा में उड़ गया।

इस प्रकार अनेक मत होने से भगवान महावीर ने वस्त्र ग्रहण किया इसमें कोई सत्य तत्त्व दिखाई नहीं देता यदि भगवान ने सचेल लिंग को प्रकट करने के लिए वस्त्र ग्रहण किया था तो उन्हें उसका विनाश नष्ट क्यों हुआ। वस्त्र उन्हें सदा धारण करना चाहिये था।

इस पुस्तिका के माध्यम से कहा गया है कि सब तीर्थंकर सवस्त्र थे। जबकि श्वेताम्बर आगम स्वयं कहता है कि प्रथम और अंतिम तीर्थंकर अचेलक धर्म के प्रर्वतन थे अब यदि भूषण शाह कहते है अन्य तीर्थंकर सवस्त्र थे तो वीर भगवान की तरह उनके वस्त्र त्याग का काल क्यों नहीं कहा ? हाँ यह कहना ठीक हो सकता है कि जब भगवान ध्यान में सब परिग्रह त्यागकर स्थिर हुए होंगे तब उनके विचार ऊपर उपसर्ग ही हुआ भूषण शाह को कल्पसूत्र में वर्णित उन दस नियमों को नहीं भूलना चाहिये जो प्रस्तुत गाथा में स्थित कल्प के रूप में वर्णित है।

अचेलक्कुद्देस्सिय सिज्जायर रायपिंड किइकम्मे।
वय जेट्ठ पडिक्कमणे मासं पज्जोसवण कप्पो।। कल्पसूत्र

इन कल्पों में महाव्रतों को गिना देने पर भी अचेलक कल्प को पृथक् और सर्वप्रथम गिनाया है। इससे ही भगवान महावीर के धर्म की अचेलक नग्न साधन की सिद्धि होती है।

भूषण शाह अधिक अपलाप करने से कोई लाभ नहीं होने वाला है क्योंकि सवस्त्र रूप से किसी भी तीर्थंकर ने साधना नही की है आपकी अपने आगम का पुनरावलोकन करना चाहिये। क्योंकि वस्त्र संयम का साधन नही है शीत और लज्जा की बाधा को सहन करने में असमर्थ साधक औषधि के रूप वस्त्र से वमीय है इस तरह से श्वेताम्बर साहित्य में वर्णन मिलता हे। पिण्डनिर्युक्ति में वस्त्र धावन की विधि में वस्त्र को हिंसा का पर्यायवाची कहा है।

वस्त्र परिग्रह हिंसा भय जैसे मानसिक विकारों को पैदा करता है अतः निष्कर्ष में हम कहते हैं कि भगवान महावीर ने अचेलक धर्म का पालन ही किया है। अतः साधना की दृष्टि से दिगम्बर ही भगवान महावीर के वंशज है परंतु ऐसे अटपटे सवाल खड़े करने के जैन समाज की एकता ही खंडित होगी आज का समय बटने का नहीं है हम बेटेंगे तो कटेंगे।

आहार दान दिवस के संदर्भ में

संस्कृति और सभ्यता के तीर्थंकर ऋषभदेव

❊ डॉ. सुनील जैन (संचय) ललितपुर ❊

चैत्रकृष्ण नवमी को प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव (आदिनाथ) का जन्म हुआ था। राजा नाभिराय और उनकी पत्नी रानी मरूदेवी से चैत्रकृष्ण नवमी के दिन मति, श्रुत और अवधिज्ञान के धारक पुत्र का जन्म अयोध्या में राजघराने में हुआ था। इन्द्रों ने बालक का सुमेरु पर्वत पर अभिषेक महोत्सव करके ऋषभ यह नाम रखा। जैन परम्परा में मान्य चौबीस तीर्थंकरों की श्रृंखला में भगवान ऋषभदेव का नाम प्रथम स्थान पर एवं अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी हैं।

तीर्थंकर ऋषभदेव भारतीय संस्कृति के आद्य प्रणेता माने जाते हैं। वेदों, उपनिषदो और पुराणों में समागत उनके उल्लेख यह कहने के लिए पर्याप्त हैं कि ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने मानव समुदाय को कृषि, लेखन, व्यापार, शिल्प, युद्ध और विद्या की शिक्षा दी। किसी भी व्यक्ति और समुदाय के लिए इन प्रकल्पों की शिक्षायें आगे बढ़ाने के लिए अनिवार्य होती हैं। विश्व के प्राचीनतम लिपिबद्ध धर्म ग्रंथों में से एक वेद में तथा श्रीमद्भागवत इत्यादि में आये भगवान ऋषभदेव के उल्लेख तथा विश्व की लगभग समस्त संस्कृतियों में ऋषभदेव के किसी न किसी रूप में उपस्थिति जैन धर्म की प्राचीनता और भगवान ऋषभदेव की सर्वमान्य स्थिति को व्यक्त करती है।

9वीं शती के आचार्य जिनसेन के आदिपुराण में तीर्थंकर ऋषभदेव के जीवन चरित्र का विस्तार से वर्णन है। भारतीय संस्कृति के इतिहास में ऋषभदेव ही एक ऐसे आराध्यदेव हैं जिसे वैदिक संस्कृति तथा श्रमण संस्कृति में समान महत्व प्राप्त है।

यह गौरव की बात है कि इन्हीं प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र भरत के नाम से इस देश का नामकरण भारतवर्ष इन्हीं की प्रसिद्धि के कारण विख्यात हुआ। इतना ही नहीं, अपितु कुछ विद्वान भी संभवतः इस तथ्य से अपरिचित होंगे कि आर्यखण्ड रूप इस भारतवर्ष का एक प्राचीन नाम नाभिखण्ड अजनाभवर्ष भी इन्हीं ऋषभदेव के पिता नाभिराय के नाम से प्रसिद्ध था।

जैन धर्म के प्रवर्तक प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव इस विश्व के लिए उज्जवल प्रकाश हैं। उन्होंने कर्मो पर विजय प्राप्त कर दुनिया को त्याग का मार्ग बताया। भगवान ऋषभदेव की शिक्षाएं मानवता के कल्याण के लिए हैं उनके उपदेश आज भी समाज के विघटन, शोषण, साम्प्रदायिक विद्वेष एवं पर्यावरण प्रदूषण को रोकने में सक्षम एवं प्रासंगिक हैं। भारतीय संस्कृति के प्रणेता एवं जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की जनकल्याणकारी शिक्षा द्वारा प्रतिपादित जीवन शैली आज के चुनौती भरे माहौल में उनके सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता है।

सामाजिक संरचना में उन्होंने प्रजाजनों का श्रेणियों में विभाजित करते हुए उनको अपने-अपने कर्तव्य अधिकार तथा उपलब्धियों के बारे में प्रथम मार्गदर्शन किया। सर्वागीण विकास के मूल आधारभूत तत्वों का विवेचन कर वास्तविक समाजवादी व्यवस्था का बोध कराया। प्रत्येक वर्ण व्यवस्था में पूर्ण सामंजस्य निर्मित करने हेतु तथा उनके निर्वाह के लिए आवश्यक मार्गदर्शक सिद्धांत, प्रतिपादन करते हुए स्वयं उसका प्रयोग या निर्माण करके प्रात्याक्षिक भी किया। अश्व परीक्षा, आयुध निर्माण, रत्न परीक्षा, पशु पालन आदि बहत्तर कलाओं का ज्ञान प्रदर्शित किया। उनके द्वारा प्रदत्त शिक्षाओं का वर्गीकरण कुछ इस प्रकार से किया जा सकता है।

1. असि-शस्त्र विद्या, 2. मसि-पशुपालन, 3. कृषि-खेती,वृक्ष, लता वेली, आयुर्वेद, 4. विद्या-पढ़ना लिखना, 5. वाणिज्य-व्यापार, वाणिज्य 6. शिल्प-सभी प्रकार के कला कारी कार्य।

जैन परंपरा के अनुसार तीर्थंकर ऋषभदेव ने कृषि का सूत्रपात किया। अनेकानेक शिल्पों की अवधारणा की। कृषि और उद्योग मे अद्भुत सामंजस्य स्थापित किया कि धरती पर स्वर्ग उत्तर आया। कर्मयोग की वह रसधारा बही कि उजड़ते और वीरान होते जन जीवन में सब ओर नव बसंत खिल उठा। जनता ने अपना स्वामी उन्हें माना और धीरे-धीरे बदलते हुए समय के अनुसार वर्ण व्यवस्था, दण्ड व्यवस्था, विवाह आदि सामाजिक व्यवस्था का निर्माण हुआ। ऋषभदेव ने महिला साक्षरता तथा स्त्री समानता पर भी महत्वपूर्ण कार्य किया है। अपनी दोनों पुत्रियों को ब्राह्मी को अक्षर ज्ञान के साथ-साथ व्याकरण, छंद, अलंकार, रूपक, उपमा आदि के साथ स्त्रियोचित अनेक गुणों के ज्ञान से अलंकृत किया। लिपि विद्या को ऋषभदेव ने विशेष रूप से ब्राह्मी को सिखाया। इसी के आधार पर उस लिपि का नाम ब्राह्मी लिपी पड़ गया। ब्राह्मी लिपी विश्व की आद्य लिपी है। दूसरी पुत्री सुंदरी को अंकगणतीय ज्ञान से पुरुस्कृत किया। आज भी उनके द्वार निर्मित व्याकरण शास्त्र तथा गणितिय सिद्धांतों ने महानतम ग्रंथों में स्थान प्राप्त किया है। आज जब भारत सरकार बेटी पढ़ाओ, बेटी बढ़ाओं का अभियान चला रही है। ऐसी में ऋषभदेव द्वारा अपनी पुत्रियों को दी गयी शिक्षा और अधिक प्रासंगिक हो जाती है। उनके द्वारा दी गयी बेटियों के शिक्षा संदेश को यदि अमल में लाया जाय तो इस अभियान में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलेगे।

प्रशासनिक कार्य में इस भारत भूमि को उन्होंने राज्य, नगर, खेट, कर्वट, मटम्ब, द्रोणमुख तथा संवहन में विभाजित कर सुयोग्य प्रशासनिक, न्यायिक अधिकारों से युक्त राजा, माण्डलिक, किलेदार, नगर प्रमुख आदि के सुपुर्द किया। आपने आदर्श दण्ड संहिता का भी प्रावधान कुशलता पूर्वक किया।

तीर्थंकर ऋषभदेव अध्यात्म विद्या के भी जनक रहे है। उनके पुत्र भरत और बाहुबली का कथन इस तथ्य का प्रमाण है कि संसारी व्यक्ति कितना रागी-द्वेषी रहता है जो अपने सहोदर के भी अधिकार को स्वीकार नही कर पाता। दोनों भाईयों के बीच हुआ युद्ध हर परिवार के युद्ध का प्रतिबिम्ब है। बाहुबली का स्वाभिमान हर व्यक्ति के स्वाभिमान का दिग्दर्शक है। निरासक्त व्यक्ति की यह आध्यात्मिक दृष्टि है।

तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की जीवन शैली, दर्शन एवं आदर्शों का प्रचार-प्रसार भारतीय युवा पीढ़ी के लिए और भी अधिक प्रासंगिक और महत्वपूर्ण है क्योंकि पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से इनमें भौतिकवादी विचारों एवं आदर्शों को आगे ले जाने का मार्ग प्रशस्त हो रहा है जिसे पुरजोर प्रयास से साथ रोकना अनिवार्य है। पाश्चात्य सभ्यता का यह मार्ग निःसंदेह भारतीय संस्कृति और सभ्यता के मार्ग से काफी भिन्न है ओर संभवतः हमारे मानवीय मूल्यों के विपरीत भी है।

आज मानवता के सम्मुख भौतिकवादी चुनौतियों के कारण नाना प्रकार के सामाजिक एवं मानसिक तनाव तथा संकट व्यक्तिगत, सामाजिक एवं भूमण्डल स्तर पर दृष्टिगोचर हो रहे हैं। भगवान ऋषभदेव द्वारा बताई गई जीवन शैली की हमारी सामाजिक एवं राजनैतिक व्यवस्था में काफी प्रासंगिकता एवं महत्ता है। उनके द्वारा प्रतिपादित ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न क्षेत्रों में ऐसी झलकियां मिलती हैं जिन्हें रेखांकित करके हम अपने सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन की गुणवत्ता को बढ़ा सकते हैं।

तीर्थंकर ऋषभदेव द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत तथा शिक्षाएं आज पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक और उपयोगी है तथा भविष्य के विश्व संस्कृति के लिए आधार हैं।

दिगम्बर परम्परा में श्रुतावतार

❊ श्रीमति सुषमा जैन, भिलाई ❊

भारतीय संस्कृति में अनेक सामाजिक धार्मिक एवं राष्ट्रीय पर्वों को बड़े उत्साह से मनाने की गौरवशाली परंपरा रही है। श्रुत पंचमी एक अनूठा धार्मिक नैमितिक पर्व है जिसमें व्यक्ति विशेष की नही ज्ञान की आराधना पूजा की जाती है। अंतिम तीर्थेश महावीर स्वामी के निर्वाण होने के लगभग 600 वर्ष बाद से ही ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी को शास्त्र (जिनवाणी) की पूजा कर सामूहित रूप से हम श्रुत आराधना का यह पर्व मनाते आ रहे हैं ।

यह मानुष पर्याय, सुकुल सुनिवो जिनवाणी।
इस विधि गए न मिले सुमणि, ज्यो उदधि समानी ।। छहढ़ाला

पंडित प्रवर दौलतराम जी की छहढ़ाला की ये पंक्तियाँ हमारी मनुष्य पर्याय की और यहाँ मिली वर्तमान की अनुकूलताओं की दुर्लभता स्पष्ट कर रही हैं। हम यदि चाहे तो अपनी जीवन पद्धति सम्यक बनाकर अपना भविष्य सुधार सकते हैं। वर्तमान में मिली अनूकुलता अर्थात् देवशास्त्र गुरु की शरण हमे प्राप्त है, पूर्वभवों में निश्चित ही हमने सद्कर्म किए होंगे। जिससे हमें चिंतामणि रत्न तुल्य जिनधर्म की शरण मिली। अभी हम अपना जीवन भगवान महावीर के उपदेशानुसार अहिंसामय बनाएँ तो हमारा वर्तमान तो सुखद रहेगा ही साथ ही भविष्य भी अच्छा हो जाएगा अर्थात् मोक्षमार्ग के पथिक बनने की पात्रता हममें आ जायेगी। तीर्थंकर भगवंतों के जब चार घातिया कर्मो का नाश हो जाता है तो अनन्त चतुष्टय प्रगट हो जाता है। हम उन्हें तीर्थंकर भगवान वीतरागी सर्वज्ञ और हितोपदेशी रूप मानकर उनकी आराधना करने लगते हैं। वे केवली भगवान जब समवशरण में विराजते हैं वहाँ प्राणी मात्र के कल्याण हेतु भगवन का उपदेश होता है। अर्थात् दिव्यध्वनि खिरती है जो ओंकार ध्वनि होती है उसे गणधर देव ग्रहण कर शब्दरूप प्रस्तुत करते हैं। तीर्थंकर भगवंतों की यही (दिव्य ध्वनि) वाणी ही शास्त्र और जिनवाणी कही गई। भगवान की यही कल्याणकारी वाणी सरस्वती, शारदा, जगत कल्याणी, माँ जिनवाणी शास्त्र, श्रुत कही गई हैं। आज हम देव शास्त्र गुरु तीनों की समान रूप अराधना करते हैं।

आचार्य भगवंतों ने हमें जो क्रम बताया यह भी हमारे आत्मकल्याण में सहायक हैं इस क्रम में शास्त्र को बीच में रखा है वह मध्य दीपक की तरह उपयोगी है। हमारी वर्तमान स्थिति यह बताती है कि अनादि काल से निरंतर संसार शरीर और भोगों में लिप्त रहकर अपने भव भ्रमण को बढ़ाते ही रहे। वर्तमान में देव शास्त्र गुरु की शरण में सम्यक पुरुषार्थ करके सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चारित्र का उपाय करें तो प्रथमतः हमें शास्त्र को बीच मे रखना होगा क्योंकि इस काल में हम इतना सौभाग्य लेकर नही आए कि भगवान के साक्षात दर्शन हमें मिलें। अभी तो हैं

सो उनकी प्रतिकृति जिनबिम्ब है हमें शास्त्र से ही जानकारी मिलती है कि भगवान कैसे थे कैसे उनका गुणानुवाद करके पाप से विरत होकर व्रती बनके अपनी-अपनी भूमिका के अनुसार आचरण करके सद्गृहस्थ व्रती श्रावक एवं साधु बनकर मोक्ष मार्ग पर चलकर शिवसुख को प्राप्त कर सकते हैं । यही शास्त्र या जिनवाणी हमें गुरु का स्वरूप भी बताते है ताकि हम सद्गुरु की शरण में जाकर जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर सकें।

ये जिनवाणी तीर्थंकर भगवंतो का दिया हुआ अनुपम उपहार है। जिसमें प्राणी मात्र के कल्याण का उपाय बताया भगवान महावीर के निर्वाण के बाद श्रुत पंरपरा से कई वर्षो तक जीवंत रही। भगवान महावीर के निर्वाण के बाद तीन अनुबद्ध केवली हुए। भगवान के प्रथम गणधर श्री इन्द्रभूति गौतम केवली हुए। भगवान के प्रथम गणधर श्री इन्द्रभूति गौतम स्वामी को केवलज्ञान हुआ वे चतुर्विध संघ के नायक रहे बारह वर्ष तक संघ गौतम स्वामी के नेतृत्व में रहा। उसके पश्चात् सुधर्माचार्य को केवलज्ञान हुआ और बारह वर्ष तक उन्होंने चतुर्विध संघ का नेतृत्व किया उसके बाद जम्बूस्वामी को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई और लगभग 39 वर्षो तक जम्बूस्वामी ने संघ का नेतृत्व किया। मथुरा चौरासी से निर्माण को प्राप्त किया। बाद के सौ वर्षों में पाँच श्रुतकेवली हुए इन्हें पूर्ण श्रुतज्ञान था। श्रुतकेवली श्री विष्णुकुमार जी, श्रीनंदि मित्र जी, श्री अपराजित जी, श्री गोवर्धन जी, और अंतिम श्रुतकेवली श्री भद्रबाहु स्वामी हुए। इनके बाद 183 वर्षों तक ग्यारह अंग और दस पूर्व के ज्ञाता होते रहे फिर 200 वर्षों तक मात्र कोई-कोई आचार्य एक अंग के ज्ञाता रहे बाकी खण्डज्ञान के ज्ञाता हुए यह श्रुतज्ञान की परंपरा रही।

भगवान महावीर के निर्वाण के लगभग 600 वर्ष के पश्चात् आचार्य श्री माघनंदी जी के शिष्य श्रीधरसेनाचार्य हुए। गिरनार पर्वत की गुफा में रहते हुए उनके मन में श्रुत संरक्षण का विचार आया। उन्होंने निमित्त ज्ञान से अपनी अल्पायु जानकार महिमा नगरी में होने वाले यति सम्मेलन में आचर्य अर्हद्बली के पास श्रुत संरक्षण हेतु योग्य शिष्यों को भेजने के लिए एक पत्र भेजा। पत्र पढ़कर आचार्य अर्हद्बली ने मुनिराज नरवाहन और मुनिराज सुबुद्धि को ज्ञान प्राप्त करने हेतु आचार्य धरसेनाचार्य जी के पास भेजा। गुरु ने दोनों शिष्यों की परीक्षा हेतु दो विद्याएँ सिद्ध करने दी। भगवान नेमिनाथ की निर्वाण स्थली गिरनार पर्वत पर विद्या सिद्ध करने बैठे दोनों मुनिराजों ने मंत्र शुद्ध कर विद्या सिद्ध कर ली। परीक्षा में उत्तीर्ण शिष्यों को योग्य जानकर आचार्य श्रीधरसेनाचार्य ने विद्या अध्ययन कराना प्रारंभ किया। अध्ययन पूर्ण होने पर भूतजाति के देवों द्वारा मुनियों की पूजा करने पर नरवाहन मुनि का नाम भूतबलि तथा सुबुद्धि मुनिराज की दंतपंक्ति सुव्यवस्थित होने से उनका नाम पुष्पदंत रखा गया।

श्री धरसेनाचार्य महाराज से शिक्षा प्राप्त कर श्री पुष्पदंत महाराज ने जिनवाणी का लेखन प्रारंभ किया और पाँच खण्ड सूत्र रूप में लिखे दूसरे शिष्य श्री भूतबलि महाराज ने छठों खण्ड विस्तार से लिखा यह षट्खण्डागम कहलाया। षटखण्डागम की रचना ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी

कहलाया तब से आज तक यह पवित्र दिन श्रुत आराधना पर्व के रूप में हम मनाते चले आ रहे हैं । श्री धरसेनाचार्य के ही समकालीन श्री गुणधर महाराज ने कषाय प्राभृत की रचना करी षटखण्डागम के पुस्तकारूढ होने के बाद कई आचार्यों ने उसकी टीकाएँ लिखी । आचार्य कुंदकुंद देव आचार्य समन्तभद्र स्वामी और आचार्य बप्पदेव आदि के द्वारा टीकाएँ लिखने का उल्लेख मिलता है । सातवीं-आठवीं शताब्दी ईस्वी में आचार्य श्री वीरसेन महाराज ने षटखण्डागम में से पाँच खण्डों पर (धवला) टीका लिखी जो धवला जी कहलाई। छठे खण्ड पर महाबंध की रचना हुई जो महाधवला जी कहलाई। आचार्य श्री गुणधर महाराज के कषाय प्राभृत पर पाँचवी-छठी शताब्दीं श्री यतिवृषभाचार्य ने चूर्णि-सूत्र लिखे। आचार्य वीरसेन स्वामी ने (चूणिसूत्र) इसकी टीका लिखने का प्रारंभ किया जिसके उनके शिष्य आचार्य श्री जिनसेन महाराज ने पूरा किया जो जयधवला जी कहलाई । आचार्य भगवंतों के अथक श्रमसाध्य प्रयासों का ही फल है कि आज हमें भगवान की वाणी ग्रंथ रूप में उपलब्ध है।

यह हमारा सौभाग्य है कि भगवान की अनमोल वाणी जो आज तक सुरक्षित रूप में जिनवाणी रूप हमें मिली है श्रुतपंचमी के दिन सरस्वती पूजन कर हम श्रुत आराधना करें । वास्तविक पूजा तो वह होगी जब हम उसे कण्ठ में धारण करें और चिंतन मनन करते हुए उस रूप आचरण करने का सदैव प्रयास करें। शास्त्रों की साज सज्जा और सुरक्षा तो हमारा कर्तव्य है ही साथ ही नई पीढ़ी को ज्ञान देकर उनमें धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण करें।

कविता

समता धरते

संस्कार फीचर्स

गर्मी के दिन कैसे कटते, तन से खून पसीने बहते
चलती गरम हवाएँ दिन भर, साये साये लू चलती जल हर
पथिक भक्ति हो छाँव पकड़ते, सड़क अघोषित कर्फ्यू लगते
जल की चाहत बढ़ती जाती, पी-पी पानी प्यास न जाती
कभी रात में बिजली जाती, फिर तो आफत जी पर आती
सूरज दस्तक जल्दी देता, तन का पानी चूस भी लेता
प्रदूषण भी ताप बढ़ाता, जीना भी मुश्किल हो जाता
ठंडी हवा अगर चल जाती, मन में फिर मस्ती छा जाती
मुनि दिगम्बर गरमी सहजे, एक बार जल भी जन लेते
गरमी की परवाह न करते, तप करते मन समता धरते

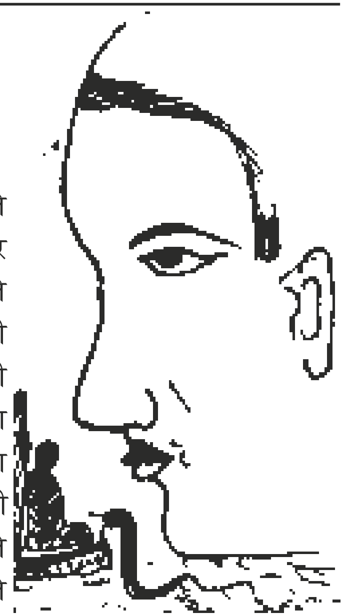

निर्ग्रन्थ प्रतिमाः परम्परा एवं वैशिष्ट्य

✲ डॉ. सुदीप जैन ✲

ईट, पत्थर एवं लकड़ी से सभी भवन बनते हैं, किन्तु इन्हीं में से कुछ भवन जिस कारण विशेष से पूजन से पूजनीय होकर 'मंदिर' या 'चैत्यागृह/चैत्यालय' संज्ञा पा जाते हैं, उस कारण विशेष का नाम 'प्रतिमा' है। इसे 'चैत्य' भी कहा जाता है। सामान्यतः तो किसी भी व्यक्ति की लकड़ी प्रस्तर अथवा धातु से निर्मित प्रतिकृति को 'प्रतिमा' कहा जाता है, किन्तु भारतवर्ष में 'प्रतिमा' का अर्थ 'टके सरे भाजी, टके सेर खाजा' जैसा कभी नही रहा है कि हर किसी की अनुकृति को 'प्रतिमा' कह दिया जाये । कभी भी व्यक्ति की प्रतिकृति को अंग्रेजी भाषा के 'स्टेच्यू' शब्द एवं हिन्दी के 'मूर्ति' शब्द से अभिहित किया जा सकता है, परंतु भारतीय परंपरा के अनुसार 'प्रतिमा' शब्द का प्रयोग अतिविशिष्ट गुणों से युक्त 'परमात्मा' पद को प्राप्त व्यक्ति-विशेष की प्रतिकृति के लिए किया जाता है । इस 'प्रतिमा' के स्वरूप, निर्माण परम्परा एवं वैशिष्ट्य को यहाँ रेखांकित करने का प्रयत्न किया गया है।

'प्रतिमा' शब्द का अर्थ

'प्रतिमीयते इति प्रतिमा' इस व्युत्पत्ति के अनुसार 'प्रति' उपसर्ग के साथ 'मां' धातु के साथ 'अङ्' प्रत्यय का विधान करके फिर स्त्रीत्वसूचक 'टाप्' प्रत्यय लगाने पर (प्रति, मा, अङ्, टाप्) प्रतिमा शब्द निष्पन्न होता है। मेदिनीकांश के अनुसार इसका अर्थ अनुकृति किया गया है। रघुवंश महाकाव्य में इसे **'प्रतिबिम्ब'** शब्द से भी संकेतित किया गया है। अमरकोश में इसके प्रतिमान, प्रतिबिंब, प्रतियातना, प्रतिच्छाया, प्रतिकृति, अर्च्या एवं प्रतिनिधिः- ये सात पर्यायवाची नाम गिनाये गये हैं । आचार्य हेमचन्द्र सूरि ने इसके प्रतिच्छन्दः, प्रतिकायः प्रतिरूपं- ये नामान्तर और गिनाये हैं । दंसणपाहुड की टीका में कहा गया है-

''सा प्रतिमा प्रतियातना प्रतिबिम्बं प्रतिकृति :''

अर्थात् प्रतिमा, प्रतियातना, प्रतिबिम्ब एवं प्रतिकृति- ये सब एकार्थवाचक नाम हैं । 'भगवती आराधना' में कहा गया है कि- 'चैत्यं प्रतिबिम्बमिति यावत् । कस्य ? प्रत्यासत्तेः श्रुतयोरेवार्हतासिद्धयोः प्रतिबिम्बग्रहणम्।'

अर्थः- 'चत्यं' अर्थात् 'प्रतिबिम्ब' या 'प्रतिमा' । वैत्य शब्द से प्रस्तुत प्रसंग में अरिहंतों और सिद्धों की प्रतिमाओं का ग्रहण समझना चाहिए।

प्रतिमा की परंपरा- 'मूर्ति' से 'मूर्तिमान' को एवं 'प्रतिमा' से 'परमात्मा' का पूजा करने की दृष्टि मूलतः जैन दृष्टि रही है। भारत की प्राचीन दो ही परम्परायें रही है- ब्राह्मण परम्परा एवं श्रमण परम्परा। इनमें से ब्राह्मण या वैदिक परम्परा में मूल में 'प्रतिमा' में 'परमात्मा' की कल्पना ही नहीं थी, अतः वे प्रतिमा को पूजते ही नहीं थे। 'यजुर्वेद (32/13) में स्पष्ट कहा गया

''न तस्य प्रतिमा अस्ति ।'' अर्थात् उस परमात्मा की कोई प्रतिमा नहीं है ।

'श्वेतास्वतरोपनिषद्' (4/19) में यही वाक्य प्राप्त होता है। उपनिषत्कार इसका कारण स्पष्ट करते हुए लिखते हैं ''एको देवः सर्वभूतेषु गूढः'' अर्थात् वह एक अद्वितीय परम ब्रह्म परमात्मा समस्त तत्त्वों में व्याप्त है, अतः उसे किसी प्रतिमा विशेष तक सीमित करने का कोई औचित्य नहीं है।

इसी बात की पुष्टि करते हुये आदि शंकराचार्य लिखते हैं-

''**न प्रतीके न हिंसा**'' अर्थात् किसी भी प्रतिमा आदि प्रतीक उस ब्रह्मतत्त्व की सत्ता सीमित नहीं है। फिर भी वैदिक ऋचाओं में जिन देवताओं की स्तुतियाँ की गयी है, उनमें उन देवताओं के आकार प्रकार, सौन्दर्य, वस्त्राभूषण एवं आयुध आदि की स्पष्टतः चर्चा प्राप्त होती है। अतः प्रतीत होता है कि प्रारंभ में वैदिक लोग कल्पना शक्ति के द्वारा अपने आराध्य का वैचारिक बिम्ब बनाकर उसकी पूजा करते थे, भौतिक प्रतिमा बनाकर उसके माध्यम से परमात्मा की अर्चना करने की परम्परा उनमें बहुत बाद में आयी है। 'वराहमिहिर' ने पाँचवी शताब्दी ई. में विभिन्न देवताओं की मूर्तियों एवं उनकी पूजा का वर्णन किया है, जो श्रमण परम्परा का प्रभाव ज्ञात होता है।

श्रमण परम्परा (जैन परम्परा) में 'प्रतिमा'- निर्माण एवं उसके माध्यम से परमात्मा की आराधना की परम्परा अति प्राचीनकाल से चली आ रही है। कहा जाता है कि आदि ब्रह्मा तीर्थंकर ऋषभदेव के ज्येष्ठपुत्र प्रथम चक्रवर्ती भरत (जिनके नाम पर इस देश का नाम 'भारतवर्ष' पड़ा) ने सर्वप्रथम 'अरिहंत' की प्रतिमा बनाकर उसकी पूजा करने की सूत्रपात इस युग में किया था। ईसा पूर्व 2400-2000 को एक मूर्ति का अंश हड़प्पा की खुदाई में प्राप्त हुआ है, जिसे प्रख्यात पुरातत्ववेत्ता प्रो. टी.एन. रामचन्द्रन ने जैन तीर्थंकर की 'मूर्ति' बतलाया है। ऐतिहासिक रूप से ईसापूर्व द्वितीय शताब्दी के सम्राट खारवेल के शिलालेख में कलिंग-जिन (अग्रजिन-वृषभदेव) की प्रतिमा का उल्लेख प्राप्त होता है, जिसे पुष्यमित्र शुंग ले गया था ओर सम्राट खारबेल ने उस पर विजय प्राप्त करके सादर उस जिन प्रतिमा को पुनः प्राप्त करके उसकी वंदना-पूजा की थी एवं वापस कलिंगदेश ले गया था।

''**नंदराजनीतं कलिंगजिननं संनिवेसं अंग-मंगधती कलिंग आनेति हय-गय-संग-वाहण-सहस्सेहिं मगधवासिणं च पादे वंदापयति।**''

अर्थ-नंदराजा (के सेनापति पुष्यमित्र शुंग) के द्वारा कलिंग से ले जायी गयी जिनमूर्ति (अग्रजिन-वृषभदेव) को (मैं ने इस युद्ध में सादर पुनः प्राप्त किया और उसे) संस्थापित करके मैंने अंगदेश और मगधदेश की सम्पत्ति प्राप्त की। हजारों घोड़े, हाथियां, सैनिकों एवं (रथ) आदि वाहनों-सहित-मगधवासियों ने मेरी चरण-वंदना की है।

एक कुषाण युगीन निर्ग्रन्थ जैन प्रतिमा मथुरा के 'कंकाली टीला' से प्राप्त हुई थी, जो कि आज भी मथुरा के राजकीय संग्रहालय में विद्यमान है। इस मूर्ति के बारे में एक लेख प्राप्त होता है, जो निम्नानुसार है-

''**सिद्धं.... उसभ प्रतिमा वर्मये धीतु (गुल्हा)**
ये जयदासस्य कुटुंबिनिये दानं।''

अर्थ- सिद्धं गुलहो, जो कि वर्मा की पुत्री और जयदास की पत्नी थी, ने एक (भगवान ऋषभदेव की) प्रतिमा समर्पित की थी।

एक अन्य अतिप्राचीन मौर्यकालीन निर्ग्रन्थ जैनमूर्ति आज भी पटना के राष्ट्रीय संग्रहालय में विद्यमान है।

जैन शास्त्रों में भी अति प्राचीन काल से प्रतिमा-पूजा का विधान प्राप्त होता है। ईसा पूर्व काली 'प्रतिक्रमणसूत्र' में श्रमण एवं श्रावक- दोनों के लिए 'चैत्य' (प्रतिमा) की भक्ति करने का विधान प्राप्त होता है। ईसापूर्व प्रथम शताब्दी के **आचार्य कुन्दकुन्द** ने भी 'चैत्य' (प्रतिमा) की भक्ति करने का निर्देश दिया है। आचार्य रविषेण (8वीं शताब्दी ई.) ने लिखा है कि 'जो जिनेन्द्र परमात्मा के आकार के अनुरूप जिनबिम्ब (प्रतिमा) बनवाकर उसकी पूजा स्तुति करता है, उसके लिए इस लोक में कुछ भी दुर्लभ नहीं हैः-'

''**जिनबिम्ब जिनाकारं जिनपूजा जिनस्तुतिम्।**
यः करोति जनस्तस्य न किंचिद् दुर्लभं भवेत।।''

आचार्य जटासिंहनन्दि (छठवीं शताब्दी ई.) ने भी जिनबिम्ब के निर्माण की महिमा बतलाते हुए उसकी प्रेरणा दी है। **आचार्य अमितगति, आचार्य पद्मनन्दि, आचार्य वसुनन्दि** ने भी जिनबिम्ब (प्रतिमा) के निर्माण का श्रेष्ठ फल बताते हुए इन्हें बनवाना श्रावकों का कर्तव्य बताया है। **पंडित शिवआशाधरसूरि** ने तो जिन-बिम्ब (प्रतिमा) आदि का निर्माण कराना पाक्षिक श्रावको (अर्थात् जिन्हें जिनधर्म का पक्ष भी है, उनका) कर्तव्य बतलाया है। **पांडे राजमल्ल जी** ने भी अरिहंत एवं सिद्ध की जिनप्रतिमायें आदि बनवाने का विधान करते हुए लिखा है कि 'जिनबिम्ब-महोत्सव' करने में कदापि शिथिलता नहीं करनी चाहिए।

श्रमण परम्परा में प्रतिमा-निर्माण की महिमा

जैसा कि ऊपर कई आचार्यों के कथनों में स्पष्ट कहा गया है कि प्रतिमा बनवाने का बड़ा महत्त्व है, इसी तथ्य को और अधिक स्पष्ट करते हुए **आचार्य शिवार्य** लिखते है कि- ''अरिहंत आदि की प्रतिमा के दर्शन से उनके गुणों का स्मरण हो जाता है। इस स्मरण से नवीन अशुभ कर्मों का 'संवर' हो जाता है। इस प्रकार समस्त इष्ट पुरुषार्थ की सिद्धि करने में जिनबिम्ब कारण होते है, उनकी उपासना अवश्य करनी चाहिए। वे आगे पुनः लिखते हैं कि- ''चैत्य'' (प्रतिमा)की भक्ति आत्म स्वरूप की प्राप्ति में सहायक होती है, अतः चैत्यभक्ति सदा करनी चाहिए।''

श्रमण-परम्परा में 'प्रतिमा' का स्वरूप

श्रमण-परम्परा में 'प्रतिमा' का स्वरूप निर्वस्त्र, निराभरण, प्रशान्तमुद्रा एवं दिगम्बर रूप ही

माना गया है। जैन प्रतिमा के स्वरूप के बारे में वैदिक आचार्य वराहमिहिर लिखते हैं-

''आजानु-लम्बबाहुः श्रीवत्साङ्क-प्रशान्तमूर्तिश्च
दिग्वासस्तरूणो रूपवाश्च कार्योऽर्हतां देवः ।।''

अर्थ- तीर्थंकर अरिहंत की प्रतिमा घुटनों तक लम्ब हाथों वाली, वक्षस्थली के मध्य 'श्रीवत्स' के चिह्न से युक्त, प्रशान्तमुद्रावाली एवं युवावस्था सम्पन्न दिगम्बर ही बनवानी चाहिए।

अन्यत्र भी जैन परम्परा में प्रतिमा की स्वरूप ऐसा ही बताया है।

''उत्तम दशतालेन देवाङ्गैः स मानयेत् ।
चतुर्विंशतितीर्थानां दशतालेन कारयेत ।।
निरभरणसर्वांग निर्वस्त्रांग मनोहरम् ।
समवक्षः स्थले हेमवर्णः श्रीवत्स-लाञ्छनम् ।।''

अर्थ- उत्तम देवताओं का शरीर दशताल-प्रमाण माना गया है, अतः चौबीसों तीर्थंकरों की प्रतिमायें भी दशताल-प्रमाण बनवानी चाहिए। वे प्रतिमायें आभूषण-रहित निर्वस्त्र-दिगम्बर, मनोहारी, समान वक्षस्थल (स्त्री आकार से रहित), स्वर्ण के वर्णवाली एवं श्रीवत्स के चिह्नवाली होनी चाहिए।

आचार्य पूज्यपाद देवनन्दि (5वीं शताब्दी ई.) में लिखाः-

''विगतायुधाः विक्रियाविभूषाः
प्रकृतिस्थाः कृतिनां जिनेश्वराणाम् ।
प्रतिमा प्रतिमागृहेषु कान्त्या प्रतिमाः
कल्मष शान्तयेऽभिवंदे ।।''

अर्थ- जिनेश्वरों का प्रतिमा आयुधों से रहित, विक्रिया (आभूषणों एवं श्रृंगारिक या आक्रोशमयों राग-द्वेषसूचक मुखमुद्राओं) से रहित प्राकृतिक (जन्मजात दिगम्बर रूप वाली) एवं कान्तिवान् होनी चाहिये।

वे पुनः लिखते हे-

''निराभरण-भासुरं विगतराग-वेगोदयात् ।
निरम्बर-मनोहरं प्रकृतिरूप-निर्दोषतः ।।''

अर्थ- जिनेन्द्र प्रतिमा आभूषण-रहित, चमकदार, राग-द्वेष भावों से रहित, वस्त्ररहित होते हुए भी मनोहारी एवं प्राकृतिक रूप से निर्दोष होनी चाहिए।

इतना ही नहीं गणधर (गणेश) की प्रतिमायें भी दिगम्बर एवं प्रशान्त मुद्रावली होती हैं। यह तथ्य वैदिक संस्कृति में भी स्वीकार किया गया है-

''श्यामवर्ण तथा शक्तिं धारयन्तं दिगम्बरम् ।
दिगम्बरां सुवदनां भुजद्वय-समन्विताम् ।

विघ्नेश्वरीति ख्यातां सर्वावयव-सुन्दरीम् ।।''

अर्थ- विघ्नेश्वर के नाम से प्रसिद्ध गणधर (गणेश) की प्रतिमा श्यामवर्णी , शक्ति सम्पन्ना, दिगम्बर मुद्रा वाली, सुन्दर मुखाकृति, दो हाथों वाली तथा समस्त अवयवों से सुन्दर होनी चाहिए।

'वसुनन्दि-प्रतिष्ठापाठ' में भी जिन प्रतिमा का परिचय देते हुए निम्नानुसार लिखा है कि

(1) लक्षण- जिनेन्द्र की प्रतिमा सर्व सुलक्षणों से युक्त बनानी चाहिए। वह सीधी, लम्बायमान, सुंदर संस्थान, तरूण अंगवाली व **दिगम्बर** होनी चाहिये। श्रीवत्स लक्षण से भूषित वक्षस्थल और घुटने तक लम्बायमान बाहुबली होनी चाहिये। काँख आदि अंग रोमहीन होने चाहिये तथा मूँछ व झुर्रियों आदि से रहित होने चाहिए।

(2) माप- प्रतिमा की अपनी अंगुली के माप से वह 108 अंगुल की होनी चाहिये, चित्र में या लेपमय शिला आदि में प्रत्येक अंग का माप, प्रमाण व उन्मान नीचे व ऊपर सर्व और यथाकथित रूप से लगा लेना चाहिये। ऊपर से नीचे तक सौल डालकर शिला पर सीधे निशा लगाने चाहिए। प्रतिमा की तौल या माप निम्न प्रकार जानने चाहिए। उसका मुख उसकी अपनी अंगुली के माप से 12 अंगुल या एक बालिशत होना चाहिए और उसी मान से अन्य भी नौ प्रकार का माप जानना चाहिए।

(3) मुद्रा- लक्षणों से संयुक्त भी प्रतिमा यदि नेत्र रहित ही या मुँदी हुई आँख वाली हो, तो शोभा नहीं देती, इसलिए उसे उसकी आँख खुली रखनी चाहिए। अर्थात् न तो अत्यंत मुँदी हुई होनी चाहिए और न अत्यंत फटी हुई। ऊपर-नीचे अथवा दायें-बायें दृष्टि नहीं चाहिए और इसी प्रकार मध्य व अधोभाग भी वीतरागता प्रदर्शक होने चाहिए।

जिन-प्रतिमा के प्रमुख लक्षणों की सार्थकता बतलाते हुए धवलाकार आचार्य वीरसेन स्वामी लिखते हैं-

1. निरायुध होने से क्रोध, माना, माया, लोभ, जन्म, जरा, मरण, भय और हिंसा के अभाव का सूचक हैं। 2. स्पन्दरहित नेत्र दृष्टि होने से तीनों वेदों के उदय के अभाव का ज्ञापक हैं। 3. निराभरण होने से राग का अभाव। 4. भृकुटीरहित होने से क्रोध का अभाव। 5. गमन, नृत्य, विदारण, अक्षसूत्र, 5. जटामुकुट और नरमुण्डमाला न धारण करने से मोह का अभाव। 6. वस्त्ररहित होने से लाभ का अभाव। 7. अग्नि, विष, अशनि और वज्रायुधादिको से बाधा न होने के कारण घातिया कर्मों का अभाव। 8. कुटिल अवलोकन के अभाव से ज्ञानावरण व दर्शनावरण का पूर्ण अभाव। 9. गमन, प्रभामण्डल, त्रिलोकव्यापी सुरभि से अमानुपता। इस कारण ऐसा शरीर राग-द्वेष एवं मोह का अभाव का ज्ञापक हैं। (इस वीतरागता से ही उनकी सत्यभाषा प्रामाणिकता सिद्ध होती हैं।)

यहाँ यह प्रश्न संभावित है कि जिन प्रतिमा दिगम्बर ही बनाने का विधान समस्त आचार्यों ने क्यों किया ? तो इसका समाधान यही है कि चूँकि जिनेन्द्र परमात्मा निर्विकार दिगम्बर ही हुये हैं, अतः उनकी प्रतिमा भी तदनुरूप बनाने का प्रावधान समस्त जैन एंव जैनेतर ग्रंथों में प्राप्त होता यह कोई पूर्वाग्रह-प्रेरित कथन नहीं है, अपितु प्रमाणपुष्ट निष्पक्ष यथार्थ तथ्य की प्रस्तुति मात्र है। जैनेतरों के ग्रंथों में प्रायः सर्वत्र ही जैन तीर्थंकरों एवं अरिहंतों को दिगम्बर ही माना गया है। प्रसिद्ध बौद्ध आचार्य धर्मकीर्ति लिखते हैं-

''**ऋषभवर्द्धमानादिः दिगम्बराणां शास्ता सर्वज्ञ आप्तश्चेति।**''

अर्थात् ऋषभदेव से लेकर वर्द्धमान महावीर-पर्यन्त चौबीसों तीर्थंकरों दिगम्बरों के अनुशास्ता, सर्वज्ञ एवं आत्मपुरुष थे।

वे जैनों को दिगम्बर के साथ साथ दिन में ही अपनी जीवनचर्या करने वाले बताते हैं- **आह्नीकाः दिगम्बराः**

अर्थात् जैन श्रमण दिगम्बर एवं आह्नीक (दिन में चर्या करने वाले) होते हैं।

'वाल्मीकि रामायण' में भी श्रमणों को दिगम्बर ही कहा गया है-

''**श्रमणाः दिगम्बराः श्रमणाः वातवासना इति**''

अन्य वैदिक ग्रंथों में भी जैनों को दिगम्बर कहा गया है।

यथा-

''**यथाजातरूपधरो निग्रन्थों निष्परिग्रहाः।**''

अर्थ-जैन श्रमण नवजात बालक के समान निर्विकार दिगम्बर रूपवाले, निर्ग्रन्थ, निष्परिग्रही होते हैं। यहाँ तक कि **श्वेतम्बराचार्य हरिभद्रसूरि** ने भी जैनों को मूलरूप में निर्ग्रन्थ दिगम्बर ही माना है-

''**निर्ग्रन्थ-एतेन मूलसंघादि-दिगम्बराः।**''

अर्थ- 'निर्ग्रन्थ' इस शब्द से मूलसंघ आदि दिगम्बर ही ग्रहण किये जाते हैं।

परम नास्तिक चार्वाकों ने भी जैन श्रमणों को नग्न ही कहा है- ''**नग्न श्रमणक-दुर्बुद्धे**''

चूँकि नग्न दिगम्बर रूप को परम मंगलमय माना गया है, अतः जैन श्रमण परममंगल रूप नग्नता को ही अंगीकार करते हैं।

इसीलिए 'प्रतिमा' को पूज्य को प्रमाणित करने के लिए इन्द्रनन्दि भट्टारक ने स्पष्ट कहा है कि ''मूलसंघ'' के अन्तर्गत आने वाले नन्दिसंघ, सेनसंघ, देवसंघ और सिंहसंघ-इन संघों के अंतर्गत प्रतिष्ठित जिनबिम्ब ही नमस्कार करने योग्य अन्य संघों के नहीं, क्योंकि वे न्याय, नियम से विरूद्ध है। चूंकि उक्त चारों संघ मूल दिगम्बर जैन परम्परा के हैं , अतः इनकी आम्नाय में प्रतिमा का भी निर्दोष स्वरूप सुरक्षित रहा है।

राष्ट्रीय लुप्तप्राय प्रजाति दिवसः 19 मई

❊ डॉ. अरविन्द प्रेमचंद जैन, भोपाल❊

हर साल राष्ट्रीय लुप्तप्राय प्रजाति दिवस के लिए नई थीम की घोषणा की जाती है। थीम पर्यावरण और वन्यजीव संरक्षण के संदेश को फैलाने के इर्द-गिर्द घूमती है। राष्ट्रीय लुप्तप्राय प्रजाति दिवस 2023 की थीम है लुप्तप्राय प्रजाति अधिनियम की 50वीं वर्षगांठ मनाना।

ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन का सबसे बड़ा असर धरती पर रहे जीव-जंतुओं के लिए खतरा वन चुका है तेजी से बढ़ते तापमान के मद्देनजर धरती से कई जीव-जंतु विलुप्त होने की कगार पर हैं, इसी मुद्दे पर लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने हर साल राष्ट्रीय लुप्तप्राय दिवस मनाने का ऐलान किया। इस साल राष्ट्रीय लुप्तप्राय प्रजाति दिवस 19 मई को मनाया जाने वाला है ऐसे में राष्ट्रीय लुप्तप्राय प्रजाति दिवस मनाने के इतिहास और इसके वास्तविक महत्व को समझना सभी के लिए आवश्यक हो जाता है।

संकटग्रस्त जातियाँ वे जातियाँ है, जिनके संरक्षण के उपाय नहीं किये गये तो वे निकट भविष्य में समाप्त हो जायेंगी। जैसे-गैण्डा, गोडावन आदि।

सभी पादप भारत में संकटग्रस्त हैं, राउवॉल्फिया सरपेन्टिना (सर्पगन्धा) सेन्टलम एल्बम (चंदन लकड़ी) और साइकस बेड्डोनी, जिसका कारण इनका औषधीय एवं व्यावसायिक महत्व है।

डोडो (रैफस कुकुलैटस) हिंद महासागर के द्वीप मॉरीशश का स्थानीय पक्षी था। यह पक्षी वर्ग में होते हुए थी थलचर था, क्योंकि इसमें उड़ने की क्षमता नहीं थी। 17वीं सदी के अंत तक यह पक्षी मानव द्वारा अत्याधिक शिकार किये जाने के कारण विलुप्त हो गया।

आमतौर पर पृथ्वी को प्रकृति और जीव-जंतुओं का समागम कहा जाता है, पृथ्वी की उत्पत्ति से लेकर वर्तमान काल तक, यहां अनगिनत जीव-जंतुओं का भंडार मौजूद हैं वहीं समय के साथ कुछ जीव-जंतु पृथ्वी से विलुप्त भी हो जाते हैं, डायनॉसोर इसका सबसे बड़ा उदाहरण है, इसी मुद्दे पर लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए हर साल मई के तीसरे शुक्रवार को राष्ट्रीय लुप्तप्राय प्रजाति दिवस मनाया जाता है, इस साल भी राष्ट्रीय लुप्तप्राय प्रजाति दिवस 19 मई को मनाया जाता है। हालांकि क्या आप इस दिन को मनाने के महत्व और इसके इतिहास से वाकिफ हैं ।

दरअसल पृथ्वी पर मौजूद पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और कीड़े-मकौड़े जीव-जंतुओं की फेहरिस्त में शामिल हैं, हालांकि समय के साथ पेड़ों की कटाई, तेजी से कम होते जंगल और जलवायु परिवर्तन के चलते जीव-जंतुओं की कई प्रजातियां पृथ्वी से विलुप्त होने की कगार पर हैं, इसी गंभीर मुद्दे से लोगों को अवगत कराने के लिए हर साल राष्ट्रीय लुप्तप्राय प्रजाति दिवस मनाया जाता है।

इतिहासः सबसे पहले 1960 के दशक में लोगों ने धरती से लगातार लुप्त हो रही कई प्रजातियों पर ध्यान केन्द्रित करना शुरु किया, जिसके बाद 1972 में पहली बार अमेरिका में लुप्तप्राय प्रजातियों के संरक्षण के लिए कानून अस्तित्व में आया, वहीं तेजी से बढ़ती ग्लोबल वार्मिंग क्लाइमेंट चेंज के मद्देनजर संयुक्त राष्ट्र संघ ने साल 2006 में मई के तीसरे शुक्रवार को लुप्तप्राय प्रजाति दिवस के रूप में मनाने का एलान किया। जिसके बाद हर साल इसी दिन को राष्ट्रीय लुप्तप्राय प्रजाति दिवस मनाया जाने लगा।

अष्ट सहस्री में मंगलाचरण में श्रद्धा और गुणज्ञता

❊ एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज ❊

ग्रंथ लेखन के पूर्व परमात्मा के गुणों का स्मरण करते हुए श्रद्धा समर्पण के साथ मंगलाचरण करने की परम्परा जैन आचार्यों ने अपने दर्शन महिमा को स्पष्ट करने का माध्यम बनाया है। मम् गालयति इति मंगलः अथवा मंगलायति इति मंगलः। जो मम अर्थात् पाप को गलाता है अथवा अहंकार ममकार रूप पाप को लगाने वाला, नष्ट करने वाला मंगल होता है या फिर मंगल अर्थात् सुख शांति को प्राप्त करने वाला मंगल होता है। मंगल के पर्यायवाची शब्द पुण्य, पूत, पवित्र, प्रशस्त, भद्र, शिव क्षेम कल्याण शुभ सौख्य ये सभी एकार्थ वाचक शब्द हैं।

जो ज्ञानावरणी आदि मल को गला देता है। वह ही मंगल है। नाम स्थापना द्रव्य क्षेत्र काल भाव से मंगल के 6 भेद होते हैं तथा मंगलाचरण निबद्ध अनिबद्ध रूप से भी होता हैं जो ग्रंथ के प्रारंभ में ग्रंथकार के द्वारा इष्ट देवता को नमस्कार किया जाता है वह निबद्ध मंगलाचरण कहा जाता है। जो ग्रंथ के प्रारंभ में ग्रंथकार द्वारा नमस्कार किया जाता है उसे अनिबद्ध मंगलाचरण कहते है। मंगल के छह अधिकार होते हैं। 1. मंगल, 2. मंगलकर्ता, 3. मंगल करने योग्य, 4. मंगल का उपाय, 5. मंगल के भेद और 6. मंगल का फल।

जिन भगवान के नाम ग्रहण मात्र से विघ्न नष्ट हो जाते हैं। पाप खंडित होते हैं। दुष्ट देव आदि उपद्रव नहीं कर सकते हैं और इष्ट फल की प्राप्ति होती है शिष्टाचार का पालन होता है एवं अंतिम प्रयोजन मोक्ष की प्राप्ति होती है। नास्तिकता का परिहार होता है। शिष्य का अभ्युदय होता है। श्रोता वक्ता को आरोग्य की प्राप्ति होने से विघ्न नहीं होते हैं विद्या ग्रहण और विद्या का फल प्राप्त होता है। आदि मंगल से शिष्य को विद्या की प्राप्ति होती है और अंत में मंगल करने से विद्या का फल प्राप्त होता है।

अष्टसहस्री ग्रंथ प्रारंभ करते हुए आचार्य विद्यानंदी जी ने मंगलाचरण करते हुए लिखा है।

श्री वर्धमान मभिबन्ध समंतभद्र मुद्भूत बोध महिमानमनिन्धवाचम्।
शास्त्रावतार रचित स्तुति गोचराप्त मीमांसितं कृतिरत्नङ्क्रियते मायस्य ॥

जो समंतभद्र अर्थात् सब प्रकार से कल्याण स्वरूप हैं। उत्पन्न हुए केवलज्ञान की महिमा प्रगट हुई है। जिनके वचन निर्दोष रूप अनेकांतमय हैं ऐसे श्री अर्थात् अंतरंग लक्ष्मी अनंत चतुष्टय रूप हैं तथा बहिरंग समवशरण रूप लक्ष्मी जिन्हें प्राप्त हुए ऐसे वर्धमान अर्थात् जिनके तत्त्वज्ञान की निरंतर वृद्धि होती ऐसे तीर्थंकर महावीर को नमस्कार करके शास्त्रावतार रूप आप्त मीमांसा रूप स्तुति ग्रंथ को मेरे द्वारा अलंकृत किया जायेगा।

प्रस्तुत वसंतिलका छन्द के माध्यम से आचार्य विद्यानंदी जी ने वर्धमान भगवान तीर्थंकर के लिए कल्याण स्वरूप होने से समन्तभद्र विशेषण से युक्त किया है। अनेकांतमय निर्दोषमय निर्दोष वचन से विभूषित मानकर अंतरंग बहिरंग लक्ष्मी अर्थात्- केवलज्ञान एवं समवशरण लक्ष्मी का स्वामी घोषित करके अर्हंत परमात्मा का स्तवन किया है। तथा वीतराग सर्वज्ञ हितोपदेशी आप्त की आराधना उपरान्त देवागम स्तोत्र अथवा आप्त मीमांसा ग्रंथ नामक ग्रंथ रचना की प्रतिज्ञा की है।

गद्यांश के अंतर्गत आचार्य विद्यानंदी जी श्रेय मोक्ष रूप इष्टदेवता की स्तुति करते हैं वर्धमान परमेश्वर जिनेश्वर तीर्थंकरों का समुदाय श्रीसमन्तभद्र आचार्य के निर्दोषवचन रूप की

स्तुति ही सर्व कल्याणकारी है क्योंकि आप्त मीमांसा अलंकार टीका करने में वे सब आश्रय भूत हैं इनमें से किसी की स्तुती न करने पर प्रस्तुत ग्रंथ की टीका सम्पन्न नहीं हो सकती है। इस ग्रंथ के वृत्तिकार आचार्य भट्ट अकलंक देव ने **उद्दीपीकृत** शब्द से अष्टशती ग्रंथ में मंगलाचरण किया अष्टसहस्री ग्रंथ की टीका अष्टशती के विषय के आधार पर की गई।

ग्रंथकार आचार्य विद्यानंदी जी ने मंगलाचरण को आगे बढ़ाते हुए कहा श्रद्धा और भगवान के गुणों का यदि ज्ञान नहीं है तो कैसे भी उनकी परीक्षा नहीं की जा सकती है। यदि श्रद्धा और गुणज्ञता में से किसी एक की भी कमी रहती है तो परीक्षा संभव नहीं होती है। शास्त्र के प्रारंभ में रचित स्तुति के विषय को प्राप्त आप्त मीमांसा रूप देवागम इस नाम का यह ग्रंथ है। क्योंकि मंगलपूर्वक स्तव ही शास्त्र के आदि में रचित स्तुति कहलाती है जिसके पूर्व में मंगल है उसे मंगल पुरस्सर कहते हैं और शास्त्र रचना के प्रारंभ में रचित मंगल पुरुस्सर स्तव कहलाता है। उस स्तुति के विषय भूत परम आप्त भगवान हैं उनके मोक्ष मार्ग के नेता आदि गुणों की परीक्षा करना ही आप्त मीमांसा का विषय है। मोक्ष शास्त्र तत्त्वार्थ सूत्र के प्रारंभ में मोक्ष के लिए जो कारणभूत हैं ऐसे आप्त की स्तुति मंगलाचरण में की है। स्वामी समन्तभद्र जी ने वही प्रश्न उठाया हैं कि मोक्षमार्ग ही आत्मा का हित है यह स्वीकार करने वाले शिष्यों को सच्चे और झूठे उपदेश की पहचान कैसे होगी अतः आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने आप्त मीमांसा की रचना करते हुए श्रद्धा और गुणवता से मन को युक्त करते हुए आचार्य समन्तभद्र देव भगवान ने प्रश्न किया है कि हे समन्तभद्र मैं देवागम आदि से युक्त हूँ तुम मेरी स्तुति क्यों नहीं करते हो इसी प्रश्न के आधार पर आप्त मीमांसा की रचना हुई है।

उपसंहार-आचार्य विद्यानन्दि जी ने अष्टसहस्री के मंगलाचरण में स्तुति और स्तव का स्वरूप स्पष्ट करते हुए स्वामी समन्तभद्र को महान तार्किक विद्वान और परीक्षक घोषित किया है। मंगलाचरण पठनीय और बोधगम्य है।

श्रुताराधना महोत्सव

दिनांक 25 मई से 1 जून 2025

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विजयनगर इंदौर

शिविर-कातंत्र रूपमाला (पंचसंधि) ❊ जैन विद्या संस्कार शिक्षण शिविर

श्री 1008 समवशरण महामंडल विधान ❊ श्रुतस्कंध विधान ❊ आचार्य छत्तीसी विधान

एवं आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के चरण स्थापना एवं 111 रथों द्वारा देवशास्त्र गुरु यात्रा

निर्देशन : ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़, ब्र. सुरेश मलैया, ब्र. जिनेश मलैया इंदौर

प्रशिक्षण: बाल ब्र. प्रदीप शास्त्री पियुष जबलपुर

विधानाचार्य: बाल ब्र. संजीव भैया कटंगी ❊ **संयोजक:** डॉ. ब्र. समता मारौरा इंदौर

नोटः जो भी इस शिविर में लाभ लेना चाहता है वह सूचना 15 मई 2025 तक ब्र. जिनेश मलैया व्हाट्सअप नं. 8989505108 पर देकर असुविधा से बचे। बाहर से पधारे हुये शिक्षणार्थियों को आवास एवं भोजन व्यवस्था निःशुल्क रखी गई है।

जैन विद्या संस्कार शिक्षण शिविर में सभी वर्ग के लिए प्राथमिक प्रथम, छहढ़ाला की कक्षा रहेगी। फार्म कार्यालय से प्राप्त कर शीघ्र भरकर दें।

गोत्र विचार

※ लेखक- पं. फूलचन्द्र सिद्धांत शास्त्री ※

अनेकांत की गत किरण नं. 8 में जो मेरे गोत्र विचार शीर्षक लेख का आद्य भाग प्रकाशित हुआ है उसे पढ़कर अनेक विद्वान् पाठकों ने कुछ और ज्ञातव्य बातों पर प्रकाश डालने के लिए लिखा है। उनकी सूचनाओं का संकलन निम्न प्रकार से किया जा सकता हैं-

1. संतान जो आपने अर्थ किया है वह मननीय है उस पर थोड़ा और प्रकाश डालिये।

2. गोत्र कर्म जीव विपाकी है, अतः उसका शरीर नो कर्म द्रव्यकर्म कैसे हो सकता है।

3. देवों के केवल उच्च गोत्र का और तिर्यंच तथा नारकियों के नीच गोत्र का ही उदय होता है, अतः इनके गोत्र के अवान्तर भेदों का परस्पर संक्रमण नहीं हो सकता। हाँ मनुष्यों के दोनों गोत्रों का उदय होता है इसलिए इनके दोनों का संक्रमण सम्भव है।

4. सत्ता में स्थित द्रव्य का उदयावलि में आये हुए द्रव्य में संक्रमण होता है।

अब आगे इनका क्रम से विचार करते हैं -

1. धवला में उच्च गोत्र का लक्षण करते समय एक आर्यप्रत्ययाभिधानव्यवहारनिबन्धानाम् यह वाक्य आया है जिससे आचार्य सादृश्य सामान्य की ओर ईशारा किया है। इससे मालूम होता है कि गोत्र में समान आचार वालों की संतान ली गई है। यद्यपि आचार मोहनीय के उद्बादि से होता है पर जीवों में आचार की अपेक्षा समानता का एक रूपता बनाये रखना और उसकी परम्परा चलाना वह गोत्रकर्म का कार्य है। प्रत्येक जीव का आचार अपने अपने चारित्रमोहनीय के हीनाधिक उदयादि के अनुसार हीनाधिक भी होगा पर इस व्यक्तिगत हीनाधिकता के रहते हुए जो उन जीवों के उसकी समानता देखी जाती है उसकी उस समानता की परम्परा का प्रयोजन गोत्र कर्म है और इसी अर्थ में संतान शब्द चरितार्थ है। इससे मालूम होता है कि समान निर्माण का गोत्र कर्म मुख्य अंग है यदि गोत्र को समाज का पर्यायवाची भी कहा जाये तो कोई अव्युक्ति न होगी। फरक केवल कारण और कार्य का है। गोत्र अदृश्य भाव है जो कि कारण है और समाज दृश्यफल है- जो कि उसका कार्य हैं। यद्यपि यह कहा जा सकता है कि यह काम तो जातिकर्म से भी होता है। जैसे मनुष्य जाति नाम कर्म के उदय से सब मनुष्य एक है और इसलिए उनका एक समाज हुआ। फिर गोत्र कर्म की क्या अवश्यकता ? सो इसका यह समाधान है कि जाति तो पर्याय अपेक्षा नियामक है और गोत्र व्यवहार की अपेक्षा अतः इन दोनों में भेद है। यही संभव है कि हमने गोत्र का अर्थ व्यवहार परम्परा या व्यवहार वालों की परम्परा किया है।

2. गोत्र कर्म जीव विपाकी है फिर भी उसका जो धर्म अन्य कर्म शरीर को मान लेने में कोई आपत्ति नहीं। हाँ, एक या अवश्य है कि उच्च और नीच गोत्र का उदय भव के समय में होता है और शरीर की प्राप्ति प्रथम समय में कर चौथे समय तक किसी समय में होती है। अतः प्रारंभ में शरीर उच्च और नीच गोत्र के उदय का भव्यभिधारी कारण नहीं है। यही सबक हैकि सिद्धांत शास्त्रों में गोत्र को भवप्रत्यय और गुणप्रत्यय स्वीकार किया हैं। गोत्र के तीनों भेदों में से नीच गोत्र तो भवप्रत्यय ही है और उच्च गोत्र भव प्रत्यय तथा गुण प्रत्यय दोनों प्रकार का होता है इसका यह अभिप्राय है कि जिस भव में जिस गोत्र के उदय की संभावना है उसमें उसी का उदय होता है अन्य का नहीं। अन्यत्र तो एक-एक गोत्र के उदय की ही व्यवस्था है। पर कर्मभूमि के मनुष्य ऐसे हैं जिनके किसी भी गोत्र का उदय हो सकता है। हाँ यदि कोई उच्च गोत्री जीव नांच आचार वाले जीवों की परम्परा में उत्पन्न हो गया और समझदार होने पर उसका उस परम्परा के प्रति अनुराग बढ़ गया तो उसके उच्च गोत्र के स्थान में नीच गोत्र का उदय हो जायेगा। और यदि उसने उस परम्परा का त्याग कर दिया तो उसके उच्च गोत्र का ही उदय बना रहेगा। इसी प्रकार नीच गोत्र के सम्बंध में भी समझना चाहिये। नेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती ने इसी अर्थ में उच्च और नीच शरीर को उच्च और नीच गोत्र का नोकर्मद्रव्यकर्म कहा है। यदि हम ऐसा न मानकर इसके विपरीत उनके कथन का अर्थ करें जैसा कि वर्तमान में किया जाता है तो उनकी की हुई सारी व्यवस्था खटाई में पढ़ जाती है। उदाहरण के लिए नेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती स्त्रीवेद, पुरुषवेद और नपुंसकवेद के उदय के लिये स्त्री, पुरुष और नपुंसक शरीर नोकर्मद्रव्य कर्म कहा है। अब यदि यह ऐकान्तिक व्यवस्था मान ली जाये तो वेद के नौ अंग ही नहीं बन सकते है और कारण के पहले कार्य की उत्पत्ति माननी पढती है। यहाँ यह विषय संक्षेप में लिखा है अन्यत्र में इसका विस्तार से विचार करने वाला हूँ। इस लिये जितना लिखा उससे सारा विषय साफ तो नहीं होता फिर भी उससे चिन्तको को चिंतन और व्यवस्था की दिशा मिल जाती है।

3. संक्रमण बंध का ही एक भेद है। अंतर केवल इतना ही है कि बंध नये कर्मों का होता है और संक्रमण सत्ता में स्थित कर्मों का। उसका प्रभाव उदय पर कुछ भी नहीं पड़ता है अतः जो भाई यह समझे बेठे हैं कि जिसका जहां संक्रमण होता है उसका वहां कार्य अवश्य होता होगा, उनकी यह धारणा गलत है। अब किस गति में किस गोत्र का संक्रमण होता है इसके लिए हमें बंध पर ध्यान देना चाहिये, क्योंकि बंधकाल में ही, उसमें अन्य सजातीय प्रकृति का संक्रमण होता है ऐसा नियम है। चारों गति के जीवों के दोनों गोत्रों का बंध होता है अतः दोनों का संक्रमण भी होता है। जब उच्च गोत्र को बंध होगा तब उसमें नीच गोत्र का संक्रमण होगा और

जब नीच गोत्र का बंध होगा तब उसमें उच्च गोत्र का संक्रमण होगा। इससे यह निश्चय हो गया कि संक्रमण उदय से कोई संबध नहीं । हाँ, यदि संक्रमण से स्थिति और अनुभाग का उत्कर्षण और अपकर्षण लिया जावे तो इसके विषय में ऐसा नियम है कि उत्कर्षण तो बंधकाल में ही होता है पर अपकर्षण बंधकाल में भी होता है और बंधकाल के बिना भी होता है। किंतु उदय वाली प्रकृतियों में उदय निषेक तक होता है जिसे उदीरणा कहते हैंः और अनुदयरूप प्रकृतियों में उदयावलि से बाह्य निषेकों तक ही होता है। सो चारों गतियों में जहाँ जिस गोत्र का उदय हो वहाँ उसी की उदीरणा होती है अन्य की नहीं। इस प्रकार इस कथन से यह निश्चित हो गया कि चारों गतियों में दोनों गोत्रों का संक्रमण होता है, पर उसका उदय से कोई संबंध नहीं।

4. सत्ता में स्थित द्रव्य का उदयावलि में निक्षिप्त होना इसी का नाम उदीरणा है सो यह क्रिया उदय वाली प्रकृति में ही होती है अन्य में नहीं, क्योंकि उदीरणा उदय की अविनाभाविनी है। इसे पर प्रकृति संक्रमण नहीं करना चाहिये। संक्रमण तो एक प्रकृति के निषेकों का अन्य सजातीय प्रकृति के निषेध रूप हो जाना कहलाता है। जिसका विशेष खुलासा हम ऊपर कर आये हैं।

मेरी इच्छा है कि इस विषय पर लोग खूब विचार करें और लेखो द्वारा अपने अपने विचारो को व्यक्त करें।

कविता

मजबूरी

✲ संस्कार फीचर्स ✲

मजदूरों की है मजबूरी, उनकी सुख से बहुत है दूरी
मजदूरों का शोष हो तो, पूँजीपति का पोषण होता
फिर समाज में दूरी बढ़ती, बढ़ते झगड़े और डकैती
जब चुनाव का मौका आता, रूपया पैसा बाँटा जाता
मजदूरों को छला ही जाता, धनिकों को पैसा मिल जाता
नेता का चेहरा खिल जाता, नेता को फिर पद मिल जाता
मजदूरों का घर लुट जाता, खून पसीना मजदूरों का
महल बना नेता धनिकों का, मजदूरों की लाश उठाते
धनिक शिरोमणि बन इठलाते, आओ बदले दृश्य ये सारा
सम वितरण धन जब हो सारा, सुखद श्रम जय जीवन प्यारा
श्रम कल्याण समृद्धि द्वारा।

संयम स्वास्थ्य योग

सेहत दायक आँवले का शर्बत

सामग्री- 1 किलो चीनी, 20 छोटी चम्मच आँवला का ताजा रस या चूर्ण, 300 ग्राम पानी।

विधि-चीनी, पानी और आँवले के रस को मिलाकर एक उबाल दें। स्टील के बर्तन में छानकर, ठण्डा कर शबर्त वाली साफ खाली बोतलों में भरकर रखें।

उपयोग-इसे गर्मी के मौसम मे शीतल पेय की तरह पानी मिलाकर पियें।

आँवला पाचक- आँवलों को उबलते पानी में 10 मिनिट रखकर, उबालकर उसकी फाँके अलग कर ले। इन फाँको को थोड़ा सुखा लें। अब इन पर थोड़ा नींबू का रस निचोड़कर मिलाकर सुखा लें। इन सूखी फाँको को सौंफ, सुपारी आदि की जगह साल भर खाया जा सकता है।

आँवला की पाचक गोलियाँ-

सामग्री- 1. हरा ताजा आँवला 250 ग्राम, 2. सिका हुआ पिसा हुआ जीरा दो चम्मच, 3. अदरक छिली हुई ताजा 15 ग्राम, 4. सेंधा नमक पिसा हुआ स्वादानुसार।

बनाने की विधि- आँवलों को कपड़े में बांधकर उबलते हुए पानी की भाप में पकायें। जब आँवले पककर मुलायम हो जाये तो इन्हें ठण्डा करके पीसे और गुठली की फेंक दें। इसमें सेंधा नमक, जीरा, अदरक मिलाकर पुनः पीस लें और गोलियां बनाकर सुखा लें।

सेवन विधि व उपयोग- दो गोली तीन बार चूंसे या चबाकर ठण्डा पानी पियें। ये गोलियाँ बहुत ही स्वादिष्ट और पाचक (हाजमेदार) होती हैं। विटामिन सी का भण्डार दवा की दवा, स्वाद का मजा ही मजा।

आँवले का बिना तेल का खट्टा मीठा अचार- एक किलो आँवला उबालकर गुठली निकालकर कस लें, बुरादा बना लें। चालीस ग्राम सेंधा नमक, एक छोटी चम्मच मोटा कुटा हुआ गर्म मसाला, चार छोटी चम्मच पिसी सौंफ , एक चम्मच भुना-पिसा जीरा, 5 चम्मच गन्ने या जाबुन का सिरका।

विधि-ऊपर बताये कसे आँवलों पर सभी सामग्री डालकर मिलाकर सूखे मर्तबान या जार में भरकर ढक्कन लगाकर 3 दिन धूप में रखें। खाने योग्य अचार तैयार है। यह बिना तेल का अचार पोषक गुणों से भरपूर है।

ध्यान रहे कि आँवले के सभी उत्पाद समय के साथ गहरे भूरे रंग के होते जाते हैं ।

यह आँवले में उपस्थित कुछ रसायनों के कारण होता है जो हानिकारक नहीं है। अतः इसे खराब समझ कर फेंकना नही चाहिए। सिर्फ ध्यान यह रखना है कि इनमें किसी भी प्रकार की फफूँद न लगे व खाने में वाँछित खुशबू व स्वाद रहें।

उपर्युक्त सभी व्यंजन बनाने में किसी भी रासायनिक पदार्थ का प्रयोग नहीं किया गया है। रासायनिक पदार्थों के उपयोग से आँवले के गुण कम हो जाते हैं । अतः हमें प्राकृतिक रूप से ही

ऑवले के उत्पादों के सेवन से आँवले से वांछित लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

आँवला के तत्त्व

क्लोरी	प्रोटीन	कैल्शियम	लोहा	विटामिन	थायोमिन	रिकोफ्लोबिन	नियासीन	विटामिन सी
मि.ग्रा.	मि.ग्रा.	मि.ग्रा.	मि.ग्रा.	मि.ग्रा.	मि.ग्रा.	मि.ग्रा.	मि.ग्रा.	मि.ग्रा.
0.8	0.5	50	1.2	9	0.03	0.01	0.2	600

आँवले में पोषक तत्त्व

आँवले के गूदे में जल 81.2 प्रतिशत, कार्बोहाईट्रेट 14.1 प्रतिशत, खनिज लवण 0.7 प्रतिशत, रेशा 3.4 प्रतिशत, वसा 0.1 प्रतिशत और फॉस्फोरस 0.02 प्रतिशत होता है। आँवले में कई विटामिन होते हैं, जिनके प्रमुख हैं- विटामिन सी यानि स्कॉर्बिक एसिड। आँवले में गैलिक एसिड, टैनिन और आल्बयुमिन भी मौजूद होते है।

हस्तमैथुन- हस्तमैथुन से धातु पतली हो गई हो तो युवको सलाह है कि हस्तमैथुन की आदत को छोड़ दें। ऑवले तथा हल्दी को समान मात्रा में पीसकर, घी डालकर सेकें और भूनें। सिकने के बाद इसमें दानों के वजल के बराबर पिसी हुई मिश्री मिला लें। एक छोटी चम्मच भरकर सुबह-शाम गर्म दूध से फंकी लें तो धातु दुर्बल दूर होगा।

पेशाब में धातु- जाती हो तो दो चम्मच आँवले का रस, दो चम्मच चासनी के साथ मिलाकर पी जायें। इससे पेशाब में धातु जाना बंद हो जाता है। यह शक्तिप्रद टॉनिक भी है। पुराना बुखार, गला बैठना, श्वेत प्रदर, रक्त प्रदर, प्रदर खाँसी, खाँसी, गठिया, घुटने का दर्द, आँखे, नेत्र-ज्योतिवर्धक, बच्चों के दाँत के रोग, चक्कर आना, उच्च रक्तचाप, रक्त की गर्मी, आँखों के रोग आदि में विधिनुसार लाभ मिलेगा।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।

2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।

3) प्रथम खुराक लेने के बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-3193601 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

अंतरिक्ष पार्श्वनाथ बस्ती मंदिर और दिगम्बरत्व

❊ एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज ❊

अंतरिक्ष पार्श्वनाथ की मूर्ति पूर्ण दिगम्बर काले पत्थर की 2 फिट की ऊँची अतिशयवान 2 अंगुल जमीन से ऊपर हवा में है। शिरपुर गाँव के बीचों बीच अंतरिक्ष पार्श्वनाथ का बस्ती मंदिर मुगल काल के पहले राजा ऐल के द्वारा बनवाया हुआ है।

इस मंदिर के दिगम्बर होने निम्न प्रमाण है।

1. अंतरिक्ष पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन बस्ती मंदिर में 16 में से 15 वेदी दिगम्बर परंपरा की है।
2. मंदिर की मुडेर कायोत्सर्ग मुद्रा में नग्न दिगम्बर मूर्ति उत्कीर्ण है।
3. मंदिर के ध्वजारोहण का अधिकार मात्र दिगम्बर जैन को ही है। वर्ष में 5 बार ध्वजारोहण करते है। (1) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को (2) आषाढ़ शुक्ल 14 को (3) भाद्रपद शुक्ल 5 को (4) दशहरे के दिन और (5) कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को।
4. घंटा, कलश, रजत ध्वजदंड पर दिगम्बर शब्द अंकित है।
5. गादि अलमारियाँ दिगम्बर मूर्ति यंत्र सभी श्वेताम्बर आने से पहले है।
6. शिरपुर बस्ती में कोई भी श्वेताम्बर घर मूल निवासी नही है जबकि 1913 की पुस्तक भा. दिगम्बर जैन यात्रा दर्पण में दिगम्बर जनों की संख्या 188 और घर 40 का उल्लेख मिलता है।
7. बस्ती मंदिर में तीन दिगम्बर गुरु गादि, क्षेत्रपाल, पद्मावती की मूर्ति दिगम्बर जैन जिन्हें श्वेताम्बर झगड़ा करके अपना अपना अधिकार जताने का झूठा प्रयास करते रहते है।
8. क्षेत्रपाल भोयरे में नग्न दिगम्बर प्राचीन मूर्ति विद्यमान है।

बस्ती मंदिर पूर्ण रूप से मजबूत पत्थरों का बना है, किन्तु श्वेताम्बर पक्ष दिगम्बर अधिकार की 3 नं. धर्मशाला को दिखाकर मंदिर को जीर्ण शीर्ण बताने का प्रपंच रच रहा है उनका लक्ष्य दिगम्बरत्व के साक्ष्य समाप्त करना है।

बस्ती मंदिर रचना

1. बस्ती मंदिर के तीन तल है।
2. बस्ती मंदिर में 45 दिगम्बर जिनबिम्ब है।
3. विवाद मात्र अंतरिक्ष पार्श्वनाथ मूर्ति का है।
4. दिगंबरी आम्नाय की तीन गादियां है।
5. दो प्रवेश द्वार।
6. खिड़कियाँ सीढ़ी भोयरे प्राचीनता का आभास होता है।
7. मंदिर में एक शिखर है।

8. एक नक्कार खाना है।

9. ऊपर छत पर जाने का रास्ता पूर्व दिशा में बनी सीढ़ियों से हे।

10. क्षेत्रपाल का भोवरा अलग से क्षेत्रपाल को मणिभद्र लोग कहते है जबकि क्षेत्रपाल में मणिभद्र कोई लक्षण नहीं है।

11 मुडेर पर नग्न मूर्तियाँ दिगम्बरत्व का परिचय देती है।

12 दिगम्बर गादि में 18 फोटो लगे हुए है अलमारी और गुप्त भंडार की 2 तिजोरी है।

13 मंदिर में आचार्य कुंदकुंद के 2 चित्र तथा गोम्मटेश्वर बाहुबली के 2 चित्र मंदिर में लगे हैं।

14 अंतरिक्ष पार्श्वनाथ के दर्शन हेतु एक झरोखा है।

15 दिगम्बर का शास्त्र भंडार 2 अलमारियों में है।

16 श्वेताम्बर जन को पद्मावती माता एवं क्षेत्रपाल की पूजन करने से दिगम्बर लोग रोकते है तथा उनके सामने से मार्ग नहीं बनने देते है।

17 श्वेताम्बर जन जबरदस्ती करके दिगम्बर मूर्ति छूने का प्रयास करते है, जबकि उनके द्वारा दिगम्बर मूर्ति छूने का निषेध है।

18 समय सारणी मात्र अंतरिक्ष पार्श्वनाथ की मूर्ति पर ही लागू होती है अन्य दिगम्बर मूर्ति वेदी के दर्शन दिगम्बर श्रावक कभी भी कर सकते है।

19 प्राचीन ताम्बे का नगाड़ा जिसमें दिगम्बर शब्द उल्लिखित है, यह नगाड़ा 46 व्यास का है।

20 कांसे/पीतल का घंटा है, जिस पर दिगम्बर शब्द लिखा है 18 व्यास का है। ओंकारदास सं. 1944।

अंतरिक्ष पार्श्वनाथ की मूर्ति के संबंध से श्वेताम्बरी गप्पोष्टक

गप्प नं. 1- श्वेताम्बर अंतरिक्ष पार्श्वनाथ की मूर्ति को 11 लाख 80 हजार वर्ष प्राचीन कहते हुए एक गप्प ठोंकते

सच यह है कि श्वेताम्बर कहते है राक्षस वंशी राजा खरदूषण भटक गया था उसका पूजन का नियम था अतः उसने रेत और गोबर से मूर्ति बनाई और पूजन करके कुंए में डाल दी इससे आधार बनाकर अंतरिक्षण पार्श्वनाथ की मूत्रि रामायण कालीन सिद्ध होती है, परंतु रामचंद का जन्म 5414 ईसा पूर्व का माना गया खगोलीय गणना के अनुसार में भी रामायण काल 5000 से 10000 ईसा पूर्व मान्य है युग गणना अनुसार भी रामचंद जी का काल 11 लाख 80 हजार वर्ष कहीं से कहीं तक सिद्ध नही होता है अतः हम कह सकते है श्वेताम्बर मत की प्राचीनता सिद्ध करने के जूनून में अंतरिक्ष पार्श्वनाथ की मूर्ति को श्वेतांबरीय अति प्राचीन साबित करने के चक्कर गप्प मारते श्वेतांबरी नजर आ रहे है।

कुछ सवाल

1. खरदूषण मुनिसुव्रत तीर्थंकर काल में हुआ फिर उसने पार्श्वनाथ की मूर्ति क्यों बनाई ?

2. खरदूषण को यह कैसे ज्ञात हुआ कि भगवान पार्श्वनाथ पर उपसर्ग होगा और उसने अंतरिक्ष पार्श्वनाथ की मूर्ति पर फणावली किस ज्ञान के अनुसार बनाई ?

इन सवालों का जवाब एक ही होगा यह श्वेतांबरी गप्प।

गप्प नं. 2- खरदूषण ने रेत गोबर की अंतरिक्ष पार्श्वनाथ की मूर्ति कुंए में डाल दी।

अब सवाल यह है कि रेत गोबर की मूर्ति इतने दिन तक कुंए के पानी में सुरक्षित कैसे रही गली क्यों नही ?

इस पर एक और श्वेतांबरी गप्प की मूर्ति की रक्षा यक्ष देव ने की

- अब सवाल यह आता है कि यक्ष देव ने मूति पानी से ऊपर क्यों नहीं निकाली ? जब यक्ष रक्षा कर सकता है तो वह जल से बाहर लाकर ऊपर क्यों नहीं निकाल सकता है।
- अब सवाल यह है की अंतरिक्ष पार्श्वनाथ की मूर्ति किस कुंए से निकाली ?

  इस सवाल के जवाब दो तरह से प्राप्त होते है कुछ श्वेतांबरीय साधु कहते है कि वट वृक्ष के नीचे बने शिरपुर के कुएँ से निकाली तो कुछ श्वेतांबरी संत विद्वान कहते है अंतरिक्ष पार्श्वनाथ की मूर्ति हिंगोली के कुंए से निकली
- अगली गप्प

  भ। अंतरिक्ष पार्श्वनाथ मूर्ति की प्रतिष्ठा 1142 में प.पू. अभयदेव सूरी के सान्निध्य में माघ सुदी 5 जिवय मुहूर्त में हुई।

  जीण तिथ्थस्स के 15 खंड के पृ. 218 पर अभय देव की समाधि स्वर्गवास कपड़बंज गुजरात में 1139 में हो गया ऐसा लिखा है।

  तब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि समाधि (मृत्यु) के तीन वर्ष बाद वे अभयदेव सूरी प्रतिष्ठा सान्निध्य देने शिरपुर कैसे और किस रूप में आये।

कविता

और न कोई सहारा

✻ संस्कार फीचर्स ✻

मेरा शरण प्रभु पारस है, और न कोई सहारा
स्वारथ की दुनिया खारी है, देख रे माया पसारा
माया ठगनी सबको खाये, कोई नहीं बच पाये
झूठे रिश्ते नाते सारे, संयोगी दुख पाये
पारस प्रभु शिरपुर वाले ही, मुक्त करें तन कारा
समता धारी क्षमा स्वभावी, सत्य तत्त्व के उपदेशक
करूणा निधि प्रभु जगदीश्वर, जिन आगम के संस्थापक
अंतरीक्ष प्रभु पार्श्वनाथ ने किया ज्ञान उजयारा ।

द्रव्य लिंगी मुनि का स्वरूप और प्रकार

✻ एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज ✻

तदेतमूलहेतोः स्यात्कारणं सहकोरकम्।
यद्बाह्यं देशकालादिः तपश्च बाहिङ्गकम्॥

सम्यक्त्वं वस्तुतः सूक्ष्मं, केवलज्ञानगोचरम्।
गोचरं स्वावधि स्वान्तः पर्ययः ज्ञानयोर्द्वयोः ॥375॥
न गोचरं मतिज्ञान-श्रुतज्ञान द्वयोर्मनाक्।
नापिदेशावधेस्तत, विषयानुपलब्धितः ॥376॥

भावसंयतस्तासां सवाससामध्यविरुद्ध इति चेत्, न
तीसा भावसंयमोऽस्ति भावासंयमा विनाभाविवस्त्रापायुदानान्यथानुपयन्तेः।

णिच्चेलपाठिपत्तं उक्इट्टं परमनिलवरिदेहि।
एक्को वि मोक्खमग्गोसेसा य अमकाया सव्वे ॥10॥

णवि सिज्झइ पत्थधरो जिणसासण जइ वि होई तित्थयरो।
णग्गो विमोल्खमग्गो सेसाउम्मग्गया सव्वे ॥23॥

द्रव्यतिंगमिदं ज्ञेयं भावलिंगस्यकारणं। (षटप्राभृत संग्रह 129)

द्रव्यलिंग सामास्थाय भावलिंगी भवेद्यतिः।

श्री समयसार गाथा 265 व टीका में

श्री समयसार गाथा 283-285 में

द्रव्यलिंग समास्थान भावलिंगो भवेधतिः।
विना तेन न बन्धः स्यान्नाताव्रतधरोऽपि सन्॥1॥

द्रव्यलिंगमिदं ज्ञेयं भावलिंगस्य कारणं।
तद्ध्यात्कबटतं स्पष्टं न नेत्र विषयं यतः ॥2॥

मुद्रा सर्वज्ञ मान्या स्यान्निर्मुदो नैव मान्यते।
राजमुद्राधरोडत्यन्तहीनवच्छास्त्र निर्णय ॥3॥

सम्माइट्ठी खवयसम्माइट्ठी असजदसम्माइट्ठि-पहुडि
जाय आजोगिकेवलित्ति ॥145॥ धवल पु. पृ. 396

(मोक्षामार्ग प्रकाशक पृ. 416-417 सस्ती ग्रंथमाला)

अंतोकोडाकोडी विट्ठारो ठिदिरसाण जं करणं।
पाउग्गल द्धिणमा भव्वाभव्वेसु सामण्णा ॥7॥ (लब्धिसार)
यथा पूज्य जिनेन्द्राणां रूपं लेपादि निर्मितम्।
तथा पूर्व मुनिच्छायाः पूज्या संप्रति संयताः ॥697॥
उल्लस्सेण अद्धपोग्गलपरियहं देसुणं ॥11॥धवल पु. 5 पृ. 14
चत्तारि वारमुवसमसेढि समरूहदि खविदकर्म्मसो।
बत्तीसं वाराइं सजममुवलहिय णिव्वदि ॥619॥ (गो.क.)

द्रव्यलिङ्गी मात्र मिथ्यादृष्टि ही नहीं सम्यग्दृष्टि भी होते हैं

✻ ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर

साधु आदि के बाह्य वेष को लिङ्ग कहते है जैन आगम अनुसार लिङ्ग तीन प्रकार के होते है मुनि, आर्यिका और उत्कृष्ट श्रावकों ये तीनों लिङ्ग ही द्रव्य-भाव के भेद से दो प्रकार के हो जाते हैं। शरीर का वेष और यथाजात दिगम्बर रूप द्रव्य लिङ्ग कहलाता है यह द्रव्य लिङ्ग भेद रत्नत्रय रूप होता है तथा अन्तरङ्ग की वीतरागता भावलिङ्ग है जो अभेद रत्नत्रय रूप निर्विकल्प समाधि रूप होता है। द्रव्यलिङ्ग से तात्पर्य मात्र मिथ्यादृष्टि से नहीं है अपितु क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीवों की गणना भी द्रव्यलिङ्ग में की गई है। अष्टपाहुड के भावपाहुड में गाथा 44 में ऋषभदेव के पुत्र बाहुबली की गणना द्रव्यलिङ्ग में की गई है जबकि वे क्षायिक-सम्यग्दृष्टि थे एवं बल ऋद्धि के धारक थे। फिर भी उन्हें भाव कषाय के कारण कलुष परिणाम रूप होकर कुछ समय तक आतापन योग धारण कर तपस्या में स्थित हुए थे। फिर भी उन्हें भावशुद्धि के बिना सिद्धि भी प्राप्ति नहीं हुई।

देहादिचत्तसंगो माणकसाएण कलुसिओ धीर।
अत्तावणेण जादो बाहुबली कित्तियं कालं ॥44॥ भा.पा.

इस बाहुबली के उदाहरण से यह बात सिद्ध होती है कि द्रव्य लिङ्ग मिथ्यादृष्टि रूप में होता है, असंयत सम्यग्दृष्टि के रूप में होता है, देशव्रती के रूप के भी भावलिङ्ग होता है तथा प्रमत्त संयत के रूप में भी द्रव्यलिङ्ग होता है निवृत्ति रूप अभेद रत्नत्रय जब तक प्राप्त नहीं होता है। तब तक भावलिङ्ग की प्राप्ति नहीं होती है।

द्रव्यलिङ्ग के निषेध का कारण आचार्यों ने स्पष्ट किया है कि शिष्य द्रव्य लिङ्ग निषिध्य ही है ऐसा मत मानों किन्तु भावलिङ्ग से रहित यतियों को यहां सम्बोधन किया गया है, वह यह है हे तपोधन। द्रव्यलिङ्ग मात्र से सन्तोष मत करो किन्तु द्रव्यलिङ्ग के आधार से निर्विकल्प रूप समाधि की भावना करे। भावलिङ्ग रहित द्रव्यलिङ्ग निषिध है न कि भावलिङ्ग सहित। द्रव्यलिङ्ग का आधार भूत तो यह देह है उसका ममत्व निषिध्य है। समयसार तात्पर्य वृत्ति 414 गा. अहोशिष्य। द्रव्यलिङ्ग निषिद्धमेवेत्ति त्व मा ज्ञानीति किन्तु भावलिङ्ग रहितानां यतीनां सम्बोधनं कृतं। कथं इति चेत् अहो तपोधना! द्रव्यलिङ्ग मात्रेण सन्तोषं मा कुरुत। किन्तु द्रव्यलिङ्गधारेण निर्विकल्पसमाधि रूपभावानां कुरुत। भावलिङ्ग रहितं द्रव्यलिङ्ग निषिद्ध न भावलिङ्ग सहितं। कथं। इति चेत् द्रव्यलिङ्गाधारभूतो योऽसौ देहस्तस्य ममत्वं निषिदं।

पण्डित जयचन्द्र जी छाबड़ा जी ने समयसार की 411 गाथा में लिखा है कि यहां मुनि श्रावक के व्रत छुड़ाने का उपदेश नहीं है तो केवल द्रव्य लिङ्ग को ही मोक्षमार्ग मानकर भेषधारण करते हैं उनको द्रव्यलिङ्ग का पक्ष छुडाया है कि वेष मात्र से मोक्ष नहीं है।

द्रव्यलिङ्ग धारण करने की आवश्यकता इसलिए होती है कि जो वस्त्रादि ग्रंथ से संयुक्त है वे निर्ग्रन्थ नहीं कहे जा सकते। बाह्य परिग्रह के सद्भाव होने पर अन्तरङ्ग परिग्रह के अभाव का

कोई कारण नहीं बनाता है। भावलिङ्ग से द्रव्यलिङ्ग और द्रव्यलिङ्ग से भावलिङ्ग होता है अतः दोनों को ही प्रमाण मानना चाहिए। एकान्त मत से सब कुछ नष्ट हो जाता है।

बाह्यतप, अध्यात्म तप का साधक होता है। बिना बाह्य तप के अध्यात्म तप या अन्तरङ्ग तप की कल्पना करना ही व्यर्थ होती है जिसने बाह्य तप की उपेक्षा या द्रव्यलिङ्ग की उपेक्षा की हैं, वे मात्र भावलिङ्ग का अथवा अंतरङ्ग तप का सपना देख सकते हैं । परंतु वे उसे साकार नहीं कर सकते। आचार्य समन्तभद्र देव कुन्थुसागर भगवान का स्तवन करते हुए कहा है- बाह्य तपः परम दुश्चर मा चरस्त्वं माध्यात्मिकस्य तपसः परिबृंहणार्थम्।

ध्यानं निरस्य कलुष-द्वय मुत्तरस्मिन् ध्यानद्वये ववृत्तिषेऽति-शयोपपन्ने ॥83॥

भरत चक्रवर्ती ने भी द्रव्यलिङ्ग धारण किया था इस सन्दर्भ में तीन ग्रंथों के प्रमाण उपलब्ध होते हैं। समयसार की तात्पर्य वृत्ति की गाथा 414 मे लिखा है जो दीक्षा के बाद घड़ी काल में ही भरत चक्रवर्ती आदि ने मोक्ष प्राप्त किया है। उन्होंने भी निर्ग्रन्थ रूप से हीमोक्ष प्रदान किया है किन्तु समय थोड़ा होने के कारण उनका परिग्रह त्याग लोग नही जानते है।

येऽपि घटिका द्वयेन मोक्षं गता भरतचक्रवर्त्यादयस्सेऽपि निर्ग्रन्थरूपेणैव परं किन्तु तेषां परिग्रह त्यागं लोका न जानन्ति स्तोत्र कालत्वादिति भावार्थः।

परमात्म प्रकाश के दूसरे अध्याय के 52वें दोहे मं आचार्य ब्रह्मदेव सूरि जी ने टीका करते हुए लिखा है कि भरतेश्वर ने दीक्षा धारण की केशलुञ्चन किया तथा हिंसादि पांच पापों का त्याग करते हुए महाव्रतों को स्वीकार किया फिर अन्तर्मुहूर्त में निज शुद्धात्मा का ध्यान करके निर्विकल्प हुए फिर उन्होंने केवलज्ञान प्राप्त किया। परंतु उसका समय बहुत कम होने से महाव्रत की प्रसिद्धि नहीं हो पाई।

भावलिंगी संत पंचमकाल में ही होते हैं ऐसा आचार्य कुंदकुंद स्वामी ने मोक्ष पाहुड़ 76 एवं 77 गाथा में इस प्रकार कहा है।

भरहे दुस्समकाले धम्मज्झाणं हवेइ साहुस्स।
तं अप्पसहावठिदे ण हु मण्णइ सो वि अण्णाणी ॥76॥

गाथार्थ- भरत क्षेत्र में दुःषमनामक पञ्चम काल में मुनि के धर्म्य-ध्यान होता है तथा वह धर्म्यध्यान आत्मा भाव में स्थित साधु के होता है तथा वह धर्म्यध्यान आत्म स्वभाव में स्थित साधु के होता है ऐसा जो नहीं मानता हुए अज्ञानी है॥76॥

विशेषार्थ- भरत क्षेत्र में क्रम-क्रम में उत्सर्पिणी और अपसर्पिणी के छह कालों का परिवर्तन होता रहता है। उस समय यही दुःषमा नाम का अपसर्पिणी का पाँचवीं काल चल रहा है। यह ठीक है कि इस समय यहाँ मोक्षमार्ग का चलन नहीं है अर्थात् इस काल का उत्पन्न हुआमनुष्य मोक्ष प्राप्त नही कर सकता तथापित धर्म्यध्यान का निषेध नहीं है जो मुनि इस समय की आत्म भावना से तन्मय है उसे धर्म्यध्यान हो सकता है ऐसा जो नहीं मानता है वह पुरुष पापी, अज्ञानी तथा जिनागम के ज्ञान से रहित है॥76॥

अज्ज वि तिरयणसुद्धा अप्पा झाएवि लहहि इंदत्तं।
लोयतियदेवत्त तत्थ चुआ णिव्वुदिं जंति ॥77॥

गाथार्थ- आज भी रत्नत्रय से शुद्धता को प्राप्त हुये मनुष्य आत्मा का ध्यान कर इन्द्र पद तथा लौकान्तिक देवों के पद को प्राप्त होते हैं और वहाँ से च्युत होकर निर्वाण को प्राप्त होते हैं॥77॥

विशेषार्थ- आज भी पञ्चम काल में उत्पन्न सैनी पञ्चेन्द्रिय जीव उत्तम कुल आदि सामग्री को प्राप्त होकर वैराग्य वश दीक्षा धारण करते हैं तथा रत्नत्रय से शुद्ध रहते हैं अर्थात् निर्दोष सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र के धारक रहते हैं । जो कहते हैं कि इस समय महाव्रती नहीं है वे नास्तिक हैं उन्हें जिनशासन से बाह्य जानना चाहिए। रत्नत्रय की शुद्धता को प्राप्त हुये निकट भव्य जीव आज भी इस पंचम काल के समय भी इन्द्रपद को प्राप्त होते हैं। न केवल इन्द्रत्व पद को ही प्राप्त होते हैं किन्तु कितने हो मुनि अल्पश्रुत के ज्ञाता होकर भी आत्म भावना के बल से लौकान्तिक देवों का पद प्राप्त करते हैं। पञ्चम स्वर्ग के अंत में अंतिम प्रदेशों में लौकान्तिक देवों के विमान हैं उनमें उत्पन्न होने से वे लौकान्तिक कहलाता है इन्हें सुरमुनि-देवर्षि भी कहते है वे स्वर्ग में स्थित रहते हुए भी ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं- स्त्री से रहित होते है और तीर्थंकरों को सम्बोधने के समय मनुष्य लोक में आते हैं अन्यथा अपने स्थान में ही स्थित रहते हैं।

कविता

ऋषभदेव को सदा प्रणाम

✲ संस्कार फीचर्स ✲

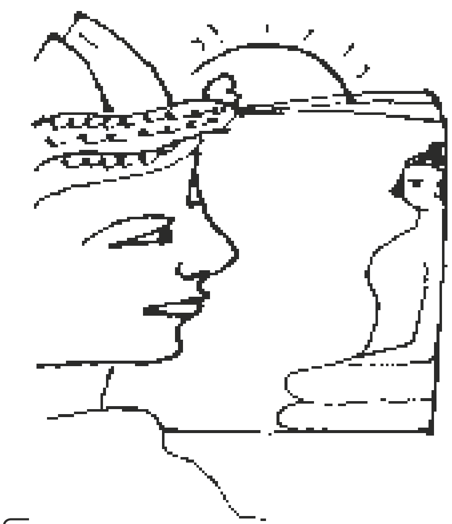

ऋषियों का संदेश, दिगम्बर सच्चा सुंदर भेष
शांति का पथ है यह अविकार
यही है काय विजय आधार
चिंता शोक मिटाये हर दम
पाग तपस्या सच्चा शम दम
यम अरू नियम योग पल जाता
ध्यान समाधि अवसर आता
ऋषभदेव की नग्न साधना
अक्षय पद की श्रेष्ठ भावना
जन गण मन के देव ऋषभ जी
वेद पुराण गुण गाये ऋषभ जी
कैलाश शिखर शिव जिनका धाम
ऋषभदेव को सदा प्रणाम

चलो देखें यात्रा

अहमदाबाद

अनेक वर्षो से गुजरात की राजधानी अहमदाबाद रही है। अहमदाबाद सुल्तान के द्वारा स्थापित इस नगरी में गुजरातर की सांस्कृतिक सजक देखने मिलती है।

यहाँ के प्रमुख पर्यटन स्थलों के आकर्षण में साइंस सिटी, झूलवी मिनारें, अदलाज बाव, रानी-नौ, हजरा, रानी सिपरी कब्र, जामा मस्जिद, कांकरिया झली, सरखेजरोजा, साबरमती नदी के किनारे गांधी आश्रम व रीवर फ्रंट भी दर्शनीय व प्रमुख आकर्षण है। प्रमुख आकर्षणों के साथ-साथ यहां प्रमुख रेस्टोरेन्ट गोरधन थाल, सरखेल गांधी नगर, अतिथि विशाल में स्वादिष्ट भोजन के साथ प्रमुख हैं। ■

पट्टाचार पद प्रतिष्ठा संस्कार महोत्सव

इंदौर-आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज जी के समाधि के उपरांत आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी का पट्टाचार्य पद सुमतिधाम गोधा स्टेट इंदौर में दिनांक 27 अप्रैल से 2 मई तक मनाया जायेगा। जिसमें लगभग 300 से अधिक साधु उपस्थित होने की संभावना हैं पट्टाचार्य पद 30 अप्रैल अक्षय तृतीया के दिन दिया जायेगा।

आगम दर्शन

आचार्य अपराजित का दिगम्बरत्व पक्ष

दिगंबरत्व के संदर्भ में आचार्य विजय अपराजित जी ने विजयोदन टीका लिखते हुए दिगंबरत्व की महिमा का बखान किया है और उन्होंने कहाँ है नग्नता में दोष तो कोई नही है पर अपरिमित गुण है। सर्वप्रथम भगवती आराधना के 44वीं गाथा में टीकाकार कहते हैं कि वस्त्रहीन यति के सर्व परिग्रह का त्याग होने से त्याग धर्म में साधक प्रवृत्त होता है। त्याग धर्म के बाद वह आंकिचन्य धर्म में भी प्रवृत्त होता है। नग्नता में आरंभ का अभाव होने से असंयम पूर्ण रूप से नष्ट हो जाता है। असत्य भाषण का प्रसंग नग्नता के साथ नहीं बनता है। नग्नता से लघुतारूप विनयरूप भी प्रकट होता है। तथा अचौर्य व्रत का परिपालन पुर्णरूपेण होता है। निर्दोष प्रकृति के साथ रागादिक कामवासना का त्याग होने से परिणामों में निर्मलता आती है जिससे ब्रह्मचर्य का निर्दोष पालन होता है। उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव धर्म की प्राप्ती होती है। उपसर्ग एवं परिषह सहन करने की ताकत आत्मा में प्रगट हो जाती है। नग्नता से घोर तप करने की शक्ति आने से तप धर्म का पालन होता है। अचेलता एवं दिगंबरत्व की महिमा बताते हुए आचार्य बताते हैं दिगंबरत्व से निम्न गुण प्रकट होते है। 1. संयम की शुद्धी, 2. इंद्रियविजय, 3. लोभादिक कषायों का अभाव, 4. ध्यान और स्वाध्याय में निर्विघ्नता, 5. परिग्रह त्याग का निश्चल पालन, 6. आत्मा की निर्मलता, 7. शरीर का अनादर करना, 8. स्वतंत्रता प्रकट होना, 9. मन की विशुद्धी प्रकट होना, 10. निर्भयता प्रकट होना, 11. अप्रतिलेखन नामक गुण प्रकट होना।

चौदह प्रकार के उपकरण रखने वाले (उपादयों से युक्त) श्वेतांबर साधुओं को बहुत संशोधन करना पड़ता है। परंतु दिगंबर साधुओं को इन सब संशोधन की आवश्यकता नहीं पडती है। कपड़े को धोना, सिलना आदी कुत्सित कार्य करने पड़ते है। निर्वस्त्र साधु में लाघव गुण होता है। उन्हें खड़े रहने में, बैठे रहने में भ्रमण करने में वायु के समान अप्रतिबध्धता होती है। तीर्थंकर का चारित्र अचेलता में ही रहता है। सभी जिन, तीर्थंकर वस्त्रहीन होकर ही तप करते है। जिन प्रतिमा और तीर्थंकर के अनुयायी गणधर भी निर्वस्त्र ही है। अतः हम कह सकते है नग्नता में आत्मबल और आत्मशक्ती प्रकट होती है। अतः नग्नता में गुणों का भंडार है। नग्नता में दोष कोई भी नहीं है।

अचेलो यतिस्त्यागख्ये धर्मे प्रवृत्तो भवति । आकिंचनाख्ये अपि धर्मे समुधतो भवति.. असत्यारम्भे कृतो ऽसंयमः।

.. न निमित्तमस्त्यनृताभिधानस्यं। ... रागादि के व्यक्ते भावविशुद्धिमयं ब्रम्हचर्यमपि विशुद्धतम भवति।... चोत्तमाक्षमा व्यवतिष्ठते।... मादर्वमपि तत्र सन्निहितं। ... आर्जवता भवति सोढाश्चोपसर्गाः निश्चेलतामभ्युपगच्छता । तपोऽपि घोरमनुष्ठित भवति । एवमचेलत्वोपदेशेन दशविधधर्माख्यानं कृतं भवति संक्षेपेण। अन्यथा प्रकम्यते अचेलताप्रशंसा। संयमशुद्धिधरेको गुणः। ... इन्द्रियविजयो द्वितीयः। ... कषायभावश्च गुणोऽचे लतायाः। ध्यानस्वाध्याययोरविघ्नता च। ... ग्रंथत्यागश्च गुणः। ... शरीर... आदरस्त्ययक्तः। ... स्ववशता च गुणः। ... चेतोविशुद्धिप्रकटनं च गुणोऽचेलतायां...। निर्भयता च गुण...। अप्रति लेखनता च गुणः । चर्तुदशविधं उपधि, गृहतां बहुप्रतिलेखनता न तथाचेलस्य। परिकर्मवर्जन च गुणः। रञ्जनं इत्यादिकमनेकं परिकर्म सचेलस्य। स्वस्थ वस्त्रप्रावरणादेः स्वयं प्रक्षालनं सीवनं वा कुत्सितं कर्म, विभुषा, मुर्च्छा च। लाघवं गुणः। अचेलोऽल्पोपाधिः स्थानसनगमनादिकासु क्रियासु वायुवाद-प्रतीब्द्धो, लघुर्भविति नेतरः । तीर्थकराचरितत्वं च गुण... जिनाः सर्व एवाचेलाभूत । भविष्यन्तश्च । ...प्रतिमास्तीर्थंकरमार्गानुयायिनश्च गणधर इति ते ऽप्यचेलास्तच्छिप्याश्च तथैवेति सिद्धमचेलत्वम्। ... अतिगूढबलवीर्यता च गुणः ।... इत्थं चेले दोषा अचेलतायां अपरिमिता गुणाः इति। (भ. आ/वि./न्य/ 610-611/4)

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
अप्रैल 2025

ये संस्कार अमर रहें

प्रथम-

संस्कार जिन धर्म सत्य के
व्यसन मुक्त जीवन संयम के
कितना भी क्यों न समर रहे
गुरु के ये संस्कार अमर रहे

प्रेमलता जैन, इंदौर

द्वितीय-

मान सा चित्र संस्कार निराले
चारित्र धन के ये रखवाले
जिन वृष जिन गुरु सबल रहे
उत्तम ये संस्कार अमर रहें

सुमन जैन, सागर

तृतीय-

नन्हा बीज बने वट भारी
संस्कार की जीवन क्यारी
निज पर में यह सौरभ भरे
माँ गुरु ये संस्कार अमर रहे

नीतू जैन, भिण्ड

वर्ग पहेली क्र. 305
मार्च 2025 के विजेता

प्रथम : सुदेश जैन, इंदौर
द्वितीय : आशा जैन, सागर
तृतीय : अर्पिता जैन, भोपाल

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. आ द् अ द्द् अ ढ् ण् आ अ ल् अ र् ष् द
2. ई ओ अ स् आ क् अ र् अ प् र् व् न् त् त् र् सं
3. क् इ ओ त् इ आ य् ग् त् इ आ इ न् द् ए द् श प्र
4. स् अ र् अ आ आ ट् आ स् अ व् इ र् अ उ र् प् अ व् द् य् ग वि
5. अ स् क् आ र् अ आ स् ग् अ र् सं

परिणाम :
अगस्त 2022: (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश (3) कुन्दकुन्द वाणी (4) अर्हत वचन (5) शोधादर्श

पुराण प्रेरणा

शुभभाव से मानवीय उपकारे

तदेवोपकृतं पुंसा यत् सद्भादर्शनम् ।।

मनुष्य को जो शुभ भाव को दिखाना है वही तो उनका उपकार है।

दृष्टश्रुतानुभूतं हि नव धृतिकरं नृणाम ।।

देखी सुनी और अनुभव में आयी नूतन वस्तु की मनुष्यों को सुखदायक होती है।

शास्त्रव्यसनमन्येषां व्यसनानां हि बाधकम्।

शास्त्र का व्यसन अन्य व्यसनों का बाधक है।

अक्षरस्यापि चैकस्य पदार्थस्य पदस्य वा।
क्षतारं विस्मरन पापी किं पुनधर्मदेशिनम् ।।

एक अक्षर आधे पद अथवा एक पद को भी देने वाले गुरु को जो भूल जाता है वह भी जब पापी है तब धर्मोपदेश के दाता को भूल जाने वाले मनुष्य का तो कहना ही क्या है ?

पापकूपे निमठनेभ्यो धर्महस्तावलम्बनम्।
ददता कः समो लोके संसारोत्तारिणानृणाम ।।

जो पापरूपी कुएँ में डुबे हुए मनुष्यों के लिए धर्मरूपी हाथ का सहारा देता है तथा संसार-सागर से पार करने वाला है उस मनुष्य के समान संसार में मनुष्यों के बीच दुसरा कौन है ?

स्त्रीणां प्राणयकोपस्य प्रणानो हि निवर्तकः ।।

सपत्नी के देखने में आसक्ति होने से पति के सापराध होने पर भी हाथ जोड़कर किया हुआ नमस्कार स्त्रियों के मान को दुर कर देता है।

कुतो लुब्धस्य सत्यता।

लोभी मनुष्य के सत्यता कैसी हो सकती है।

केरियर

मनोविज्ञान कोर्सेस में कल्पवृक्ष

बदलते लाइफस्टाइल के साथ साइकोलॉजी सबजेक्ट में केरियर बनाने की संभावनाएं भी बढ़ती जा रही है। साइकोलॉजी ट्रीटमेंट बिना दवाइयों का सेवन किए और सोच में परिवर्तन लाने पर आधारित है। मनोविज्ञान ऐसा क्षेत्र है जिसमें प्रत्येक आयुवर्ग के लोग विशेषज्ञता हासिल कर अपना केरियर बना सकते है। इसमें मानव मन और व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।

कोर्सेस - 1. मनोविज्ञानी, 2. शैक्षिक मनोवैज्ञानिक, 3. मनोचिकित्सक, 4. मानव संसाधन प्रबंधक, 5. समाजसेवक, 6. मीडिया भुमिकाए, 7. काउंसलेर

अवधि- बैचलर डिग्री इन साइकोलॉजी- 4 साल

मास्टर डिग्री इन साइकोलॉजी- 2 साल

पीएचडी- 5 साल से 7 से 8 साल तक

फीस- 21000 से लेकर 13 लाख तक

नौकरी- मनोविज्ञानी, मनोचिकित्सक, समाज सेवक, काउंसलर शैक्षिक मनोविज्ञानिक, मानव संसाधन प्रबंधक, अध्यापक अनुसंधान भुमिकाए, मीडिया भुमिकाए

वेतन- 25000 से लेकर 50000 पर महीना

इंस्टीट्यूट- सेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ काउंसीलिंग, मुंबई

इंस्टीट्यूट ऑफ साइको मैनेजमेंट, नागपुर

फर्म्युसन कॉलेज, पूणे

डिपार्टमेंट ऑफ साइकोलॉजी, कलकत्ता

टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस, मुंबई

डिपार्टमेंट ऑफ साइकोलॉजी युनिवर्सिटी, हैदराबाद

■ 1 मार्च

- जादवपुर विश्वविद्यालय में शिक्षा मंत्री व्रत्यवसु की गाड़ी छात्रों ने तोड़ी मंत्री को दो घंटे तक बंधक बनाकर रखा।

- तुहिनकांत पाण्डेय ने सेबी चैयरमैन का कार्यभार सम्हाला।

- सुकमा (छ.ग.) सुरक्षाबल और नक्सली मुठभेड़ में 2 नक्सली ढ़ेर हुए।

■ 2 मार्च

- राजगढ़ (म.प्र.) प्रदेश के मंत्री प्रहलाद पटेल मुफ्त की योजना से लोगों को भीख मांगने की आदत पड़ गई है।

- बसपा नेत्री मायावती ने अपने भतीजे आकाश आनंद से सभी जिम्मेदारियाँ छीनी।

- दक्षिण अमेरिका के देश उरुग्वे के नये राष्ट्रपति यामंदु ओर्सी ने पद भार संभाला।

■ 3 मार्च

- मुम्बईः विधायक अब्बू आजमी ने कहाँ औरंगजेब क्रूर शासक नहीं था।

-गिरः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जंगल सफारी शेरों की तस्वीरें खींची और विश्ववन्य जीव दिवस मनाया।

- कांग्रेस प्रवक्ता शमा मोहम्मद ने रोहित शर्मा को मोटा कहा। शमा की आलोचना बीसीसीआई ने की।

■ 4 मार्च

- महाराष्ट्र के मंत्री धनंजय मुंडे ने सरपंच संतोष देशमुख हत्याकांड में संलिप्तता के आरोप के चलते इस्तीफा दिया।

- सर्वियन यूरोपीय देश की ससंद में विपक्ष ने स्मोक बम फेंके हंगामा किया।

- भारत ने आस्ट्रेलिया को चैम्पियन ट्राफी की सेमीफाइनल में 4 विकेट से हराया।

■ 5 मार्च

- सपा विधायक अबू आजमी महा. विधानसभा से बजट के लिए निलंबित किया गया। उन्हें औरंगजेब की प्रशंसा महंगी पड़ी।

- स्पीकर सतीश महाना ने यू.पी. विधानसभा परिसर में पान मसाला गुटखा पर रोक लगाई।

- चैंपियन ट्राफी में भारत-न्यूजीलैंड का मैच फिक्स न्यूजीलैंड ने दक्षिण अफ्रीका को 50 रन से हराया।

■ 6 मार्च

- हिन्दी विश्वविद्यालय की कुलपति कुमुद शर्मा बनी।

- लखनऊः बब्बर खालसा का आतंकी लाजर मसीह को पुलिस ने दबौचा।

- पेशावरः पाक में भारत का एक और दुश्मन मेजर दानियाल की हत्या अज्ञात हमलावर ने की।

■ 7 मार्च

- पुनाः रासायनिक अवशेष मुक्त खेती पर कृषि महाविद्यालय में पहली प्रदर्शनी लगायी गई।

- नारायणपुरः लौह अयस्क खदान में बम फटने से 1 मजदूर की मौत हुई।

- भाजपा नेता सीता सोरेने पर उनके सहायक देवाशीष घोष ने उन पर पिस्तौल तानी।

■ 8 मार्च

- अभिनेता शाहरख खान, अजय देवगन, टाइगर श्राफ पर नोटिस जारी किया गया एक पान मसाले में कैंसर होने का दावा विज्ञापन के माध्यम से किया गया था जो झूठा था।

- मणिपुर में 4 संगठनों के 7 उग्रवादी गिरफ्तार हुए।

- इजराइली महिला सहित दो महिलाओं के साथ कर्नाटक के कोप्पल के हम्पी में बलात्कार कर नहर में फेंका।

■ 9 मार्च

- भारत ने चैम्पियन ट्राफी जीती न्यूजीलैंड को 4 विकेट से हराया।

-प्राची घपटन ने केक सजाकर अंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की।

- भारतीय नौसेना के पूर्व अधिकारी कुलभूषण जाधव को अगवा कराने वाले मुफ्ती शाह मीर की हत्या अज्ञात लोगों ने की।

■ 10 मार्च

- बोडेली (गुजरात): छोटा उदयपुर जिले में नरबलि का एक संदिग्ध मामला सामने आया खून मंदिर में चढ़ाया।

- महू (म.प्र): चैंपियन ट्राफी में जीत के जश्न मान रहे लोगों पर एक पक्ष ने हमला किया। 13 लोग गिरफ्तार हुए।

- गढवाः एक पटाखा की दुकान में आग लगी 5 जिंदा जले।

■ 11 मार्च

- इस्लामाबादः बलूच विद्रौहियों ने 500 यात्रियों वाली ट्रेन पर कब्जा किया। 150 फौजियो को बंधक बनाया 20 को गोली से उड़ाया।

- इमीग्रेशन और विदेशी विधेयक लोकसभा में पेश हुआ।

- पोर्टलुईः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मारीशस यात्रा पर गये।

■ 12 मार्च

- उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ एम्स से डिस्चार्ज हुए।

- जम्मूः राजौरी जिले में नियंत्रण रेखा के पार सीमा पर गोलीबारी से एक जवान घायल।

- यूक्रेनः 30 दिनों युद्ध विराम के लिए तैयार हुआ।

■ 13 मार्च

-दिल्लीः पूर्व मंत्री मनीष सिसोदिया एवं सत्येन्द्र जैन के खिलाफ केस की मंजूरी राष्ट्रपति ने दी।

- काठमांडूः नेपाल में राजशाही के समर्थन आंदोलन विशाल प्रदर्शन हुआ।

- होली से पहले उत्तरप्रदेश में सैकड़ों मस्जिदें ढकी।

■ 14 मार्च

- गिरिडीह (झारखंड) होली को लेकर दो पक्षों में दंगा भड़का।

- पटनाः ए.एस.आई के सिर पर धारदार हथियार से हमला हुआ।

- गिलासपुर (हिमाचल): बाबर ठाकुर कॉंग्रेस नेता के अज्ञात हमलावरों ने हत्या की।

■ 15 मार्च

- अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने कहा कि ग्रीन कार्ड नही है कौन रहेगा यह हम तय करेंगे।

- कर्नाटक सरकार ने सरकारी ठेके में 49% आरक्षण मुस्लिमों को देने की मंजूरी दी।

- आई.ए.एस का आंतकी अबू खदीजा ढेर हुआ।

■ 16 मार्च

- पाकिस्तान में हाफिज सईद के गुर्गे जिया 32 रहमान उर्फ नदीम की गोली मारकर हत्या कर दी गई।

- बेंगलुरुः अंतरीक्ष अनुप्रयोगों के लिए 32 विट के माइक्रो प्रोसेसर बनाकर इसरो ने सफलता पाई।

- प्रसिद्ध उड़िया कवि रमाकांत रथ का निधन हुआ।

■ 17 मार्च

- नागपुरः रात 8 बजे एक समुदाय की भीड़ ने उपद्रव किया पुलिस ने आंसु गैस के गोले दाग डीसीपी मिकेतम कदम सहित 30 पुलिस कर्मी घायल हुए।

- केरल हाईकोर्ट ने एक फैसले में कहा शिक्षक को रखने दें अनुशासन के लिए यह काफी है।

- केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्र शेखावत ने कहा कि हडप्पा लिपी समझने में अभी तक सफलता रहीं।

■ 18 मार्च

- नागपुरः 11 पुलिस थानों में कर्फ्यू लगा 70 उत्पातियों की पहचान हुई 51 लोग गिरफ्तार हुए।

- इजरायल ने गजा पर हमला किया 413 फिलिस्तानी मारे गये।

- पुदुचेरीः मुख्यमंत्री एन रंगा सामी ने दुकानों प्रतिष्ठानों को बोर्ड तमिल में करने की घोषणा की।

■ 19 मार्च

- 9 महा बाद अंतरीक्ष यात्री सुनीता विलियम्स धरती पर लौटी।

- पुणेः हिंजबडी के विप्रोसर्कत फेज

1 के पास एक बस में आग लगी 4 लोगों की मौत हुई 6 झुलसे।

- मेरठः 26 वर्षीय महिला ने प्रेमी के साथ मिलकर पति सौरभ राजपूत की हत्या की 15 टुकड़े किये।

■ **20 मार्च**

- बीजापुर (छत्तीसगढ़)ः दो मुठभेडों में 30 नक्सली मारे गये।

- महाराष्ट्र मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडनवीश ने गौतस्करों पर माकोका लगेगा।

- तुर्किये के विपक्षी नेता एक्रंम इमामोग्तर की गिरफ्तारी के विरोध में प्रदर्शन किया गया।

■ **21 मार्च**

- दिल्ली हाईकोर्ट के न्यायाधीश यशवंत वर्मा के बंगला में आग के बाद भारी कैश मिला।

- लंदनः हीथ्रो एयरपोर्ट पर आग लगने से 1300 फ्लाइट प्रभावित हुई।

- सुकामा (छत्तीसगढ़)ः इनामी नक्सली सहित 4 नक्सलियों ने आत्म समर्पण किया।

■ **22 मार्च**

- विनोद कुमार शुक्ल के नाम पर भारतीय ज्ञान पीठ के 59वें पुरस्कार की घोषणा हुई।

- महाराष्ट्र मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडनवीस ने कहा कि दंगाइयों से नुकसान भरपाई वसूली जायेगी।

- प्राकृतिक खेती वैज्ञानिक एवं गौ सवेक दिलीप कुलकर्णी ने गैरदुधारू जानवरों के संवर्धन के लिए सरकार से मांग।

■ **23 मार्च**

- नागपुरः दंगा के 6 दिन बाद कर्फ्यू हठा।

- संभल (उ.प्र.) जामा मस्जिद के सदर जफर अली को गिरफ्तार किया गया।

- इजरायल के हवाई हमले में हमास नेता सहित 19 लोग मारे गये।

■ **24 मार्च**

- मुंबईः कुणाल कामरा के टिप्पणी पर बबाल हुआ शिवसेना शिंदे ने हंगामा किया।

- तुर्की में सरकार विरोधी प्रदर्शन भड़के 1133 लोग गिरफ्तार किये गये है।

- पेशावरः 1938 में बना नाज सिनेमा घर को ध्वस्त किया गया।

■ **25 मार्च**

- दंतेवाडा (छत्तीसगढ़)ः सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में नक्सली ढेर।

- नागपुरः अभिनेता सोनू सूर की पत्नी सोनलसूप सड़क दुर्घटना में घायल हुई 3 अन्य घायल।

- पत्रकार प्रशांत कोरटकर को 3 दिन की पुलिस हिरासत में भेजा गया पर शिवाजी महाराज जी पर अपमान जनक टिप्पणी का आरोप है।

■ **26 मार्च**

- हेमांगी श्रीवास्तव को परमाणु शोध में मेरी स्कलोडो स्काक्यूरी कैलोशिप मिली।

- सपा सांसद राम जी लाल सुमन के घर पर करणी सेना ने हमला किया उनका राणा सांगा पर विविदित बयान मंहगा पड़ा।

-लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सांसदों को मर्यादा अनुरूप आचरण की नसीहत दी।

■ **27 मार्च**

- मुंबईः हाईकोर्ट ने कहा आत्महत्या की धमकी क्रूरता है तलाक का वैध आधार है।

- जयपुरः राज्यपाल हरिभाउ बागड़े ने कहा शब्द सम्पदा है सोच समझकर उपयोग करें।

-मुंबईः बांग्लादेशी किन्नर गिरफ्तार हुए।

■ **28 मार्च**

- म्यांमार और थाईलैंड में 7.7 के भूकम्प से बड़ी तबाही हुई 144 लोग मरे तथा सैकड़ों दबे।

-कोच्चीः केरल की अनुकुंज मोन पहली महिला बउंसर को मोहनलाल ने रखा।

-काठमांडूः नेपाल राजशाही के समर्थन हिंसक प्रदर्शन हुआ सेना तैनात की गई।

- कठुआ (जे.के.) मुठभेड़ में एक जवान शहीद हुआ अफसर समेत 5 घायल हुए।

■ **29 मार्च**

- यांगूनः म्यांमार में भूकंप से मृतकों की संख्या 1600 पहुँची। भारत ने मदद दी।

- मुंबईः डीसीपी सुधाकर पठारे की सड़क दुर्घटना में मृत्यु हुई।

- प्रयागराजः वायुसेना के सिविल इंजिनियर एस.गुन मिश्र की गोली मारका हत्या कर दी गई।

■ **30 मार्च**

- नागपुरः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा संघ अमर संस्कृति का अक्षय वृक्ष है।

- बीजापुर (छत्तीसगढ़)ः 50 नक्सलियों ने आत्म समर्पण किया।

- कटकः बेंगलूर गुवाहटी जा रही कामाख्या एक्सप्रेस बेपटरी हुई 11 की मौत 7 घायल हुए।

■ **31 मार्च**

- इटारसीः अहमदाबाद बरौनी एक्सप्रेस में आग लगी कोई हताहत नहीं हुआ।

- पाक के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के लिए नोबेल शांति पुरुस्कार के लिए नामित किया गया।

- दंतेवाड़ा (छत्तीसगढ़)ः 45 लाख की इनामी महिला नक्सली रेणुका ढेर।

इसे भी जानिये

गुजरात के मुख्यमंत्री

01	सिवराज सारायण मेहता	1960-1963
02	बलवंतराय मेहता	1963-1965
03	हितेन्द्र कन्हैया लाल देसाई	1965-1971
04	धनश्याम ओसा	1972-1973
05	चिमनभाई पटेल	1973-1974
06	बाबुभाई जे. पटेल	1975-1976-1980
07	माधव सिंह सोलंकी	1974-1977
08	अमरसिंह चौधरी	1985-1989
09	छाबिलदास मेहता	1994-1995
10	केशुभाई पटेल	1998-2001
11	सुरेश मेहता	1995-1996
12	शंकरसिंह वाघेला	1996-1997
13	दिलीप पारेख	1997-1998
14	नरेन्द्र मोदी	2001-2014
15	आनंदीबेन पटेल	2014-2016
16	विजय रूपानी जैन	2016-2021
17	भुपेन्द्रभाई पटेल	2021 अभी जारी

कविता

मोक्षमार्ग की श्रेष्ठ साधना

❊ संस्कार फीचर्स ❊

धर्म अचेलक सदा महान, इसका करते सब सम्मान
प्रकृति रूप निदोष भेष है, संग नहीं आरंभ लेश है
धर्म अहिंसा करे साकार, सहज शांति का है आधार
निश्चेल रूप में चोखा ध्यान, संग परिग्रह चिंता खान
चेल सहित नहीं मुक्ति होती, तपो साधना व्यर्थ ही होती
पाणिपात्र निश्चेल साधना, मोक्षमार्ग की श्रेष्ठ साधना

दिशा बोध

धूर्तता

1. स्वयं उसके ही शरीर के पंचतत्व मन ही मन उस पर हँसते हैं, जबकि वे पाखण्डी और चालबाजी को देखते हैं।
2. वह प्रभावशाली मुखमुद्रा किस काम की, जबकि अंतःकरण में बुराई भरी है और हृदय इस बात को जानता है।
3. एक कामपुरुष, जो तपस्वी जैसी तेजस्वी आकृति बनाये रखता है, वह उस गधे के समान है, जो सिंह की खाल पहने हुए घास चरता है।
4. उस आदमी को देखो, जो धर्मात्मा के वेश में छिपा रहता है और दुष्कर्म चिड़ियों को पकड़ता है।
5. दंभी आदमी दिखावे के लिए पवित्र बनता हैं और कहता है-''मैंने अपनी इच्छाओं, इन्द्रिय-लालसाओं को जीत लिया है', परन्तु अन्त में वह पश्चाताप करेगा और रो-रोकर कहेगा- ''मैंने क्या किया, हाय ! मैंने क्या किया''
6. देखो जो पुरुष वास्तव में अपने मन से तो किसी वस्तु को छोड़ता नहीं, परन्तु आहार-त्याग का आडम्बर रचता है और लोगों को ठगता है, उससे बढ़कर कठोर हृदय कोई नहीं है।
7. गुमची देखने में सुन्दर होती है, परन्तु उसकी दूसरी ओर कालिमा होती है। कुछ आदमी भी उसी तरह के होते हैं। उनका बाहरी रुप तो सुन्दर होता है, किन्तु अंतःकरण बिल्कुल कलुषित होता है।
8. ऐसे लोग बहुत है, जिनका हृदय तो अशुद्ध होता है, पर तीर्थों में स्नान करते हुए घूमते फिरते हैं।
9. बाण सीधा होता है और तम्बूरे में टेढ़ापन् होता है, इसलिए मनुष्यों को आकृति से नहीं, किन्तु उनको कामों से पहचानो।
10. जगत् जिससे घृणा करता है, यदि तुम उससे बचे हुए हो, तो फिर न तुम्हें जटा रखने की आवश्यता है और न सिर मुण्डन की।

सम्हालों प्रकृति से गति

सुनों, आप यात्रा के लिये कहीं जा रहे है। वाहन आपके पास अपना है। सड़क आपकी नहीं किन्तु सड़क सरकारी है। आप लोगो को आज्ञा मिली है। सड़क पर अपने कार्य हेतु चलने की आज्ञा है। गाड़ी आपकी बिल्कुल नयी है, सड़क भी नयी है, रोड जाम भी नहीं है सब कुछ सुविधा आपको मिली है, किन्तु सब कुछ होते हुये भी गति आपके हाथ में नहीं है। प्रदेश में तो लगेज को भी क्लेश पहुँचता है। गाड़ी-सड़क सब अच्छा होते हुये भी चलते-चलते गाड़ी की गति धीरे हो गयी क्योंकि सड़क पर कोहरा था। कोहरा अर्थात् को=कौन रहा नाम ही है।

अब क्या करें! दिन में भी रात की भांति लाइट का उपयोग कर रहे है। क्योंकि प्रकाश-पुंज सूर्य भी कोहरा में ढक गया। 3-4 हाथ भी नहीं दिख रहा उसको चीरकर लाइट आगे बढ़ती जा रही है। आप अपनी गाड़ी चला रहे है, आवाज आ रही है, प्रकाश के अभाव में आने-जाने वाले वाहन देखने में नहीं आ रहे है। अपने आप ही गति अवरूद्ध हो गयी। इसके उपरांत आगे चले, बादल बरसना प्रारम्भ हो गये। आप गति देना चाह रहे है, किन्तु दे नहीं पा रहे है। गाड़ी नयी, सड़क नयी किन्तु हमारी तकदीर ही ऐसी है। महाराज ने आशीर्वाद तो दिया था पर वह भी घटिया ही लगता है, बढ़िया से नहीं दिया ऐसा भाव मन में कर लेते हो। आप अपने कर्मो की ओर अवधारणा करे। चाहे गरीब हो अथवा अमीर हो, जवान हो अथवा वृद्ध हो, छोटा हो अथवा बड़ा हो, भारत हो अथवा विदेश हो सब को अपने कर्मो का फल अवश्य मिलता है। जब वर्षा प्रारम्भ हो गयी तो गाड़ी की गति धीमी हो गयी। उस गाड़ी के आगे भी वाइपर लगे होते है। उनके माध्यम से पानी साफ करते हुये यहाँ तक आ गये। आपकी दृष्टि को जो व्यवधान आ रहा था उसे वह वाइपर हटा देता है। वह भी तब जब बरसात कम हो-बौछार तेज हो तो वाइपर को भी बाधा आ सकती है। प्रतिकूल हो या अनुकूल हो उस समय कर्म पर दृष्टि रखें। हर्ष-विषाद नहीं होगा असंख्यात गुणी कर्म निर्जरा होती है।

व्यवधान धर्म के काम में भी हो सकता है। इस व्यवधान को आप विकल्प न करें। जीवन ही एक यात्रा है हमेशा यही समझे। प्रसिद्ध ही नहीं थे सिद्ध क्षेत्र है, जहाँ मुनिराज जा सकते है। भोपाल में 4माह के लिये यह यात्रा आयी। हमारी यात्रा रुक नहीं सकती। चलाकर यहाँ नहीं आयें यात्रा है- चातुर्मास आ गया-रुक गया। कहीं-कहीं 4 दिन का भी प्रवास अथवा कही 4 घण्टे का भी प्रवास हो जाता है।

भोपाल बहुत बड़ा है फिर भी लोग नाराज हो तो हम क्या करें? यह हबीबगंज भी चौक के अन्तर्गत ही है। चौक का ही है तो फिर हमारा-तुम्हारा क्षेत्र का क्या मतलब है बच्चों को समझाया जाता है किन्तु यहाँ कुछ बड़े बच्चें है, उन्हें समझते ही नहीं है। हम तो सदैव चलते ही रहते है। मोक्षमार्ग पर चल ही रहे है। हम मोक्षयात्री है। पट्टिका (मार्ग) को देखकर ही चलते है। कोई जल्दी कोई विलम्ब से लेकिन सब पहुँचते है। देखभालकर आप लोग भी चलते रहो। चलना तब तक अनिवार्य है जब तक मंजिल न मिले रास्ते में चले भटके नहीं। यह ऐसा पथ है जो सीधा जाता है-टेढ़ा मेड़ा है ही नहीं। भटका हुआ कहीं का कहीं पहुँचता है अतः सीधा रास्ता अपनाये तो बहुत अच्छा है समय हो गया है।

आत्मानंद सागर (पं. श्री रतनलाल जी) का समाधिमरण

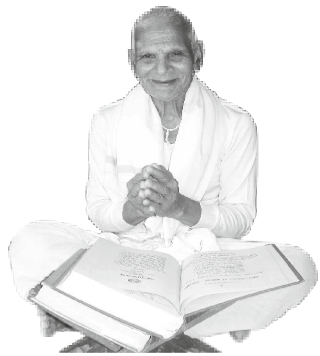

इंदौर- आचार्य श्री समयसागर महाराज के आशीर्वाद से मुनि श्री निर्णयसागर जी महाराज, मुनि श्री महिमासागरजी महाराज ससंघ, क्षुल्लक श्री अटलसागर जी महाराज के ब्र. जिनेश मलैया, ब्र. अनिल भैया, ब्र. अशोक भैया, ब्र. अभय भैया, ब्र. तरूण भैया, ब्र. हरिशचंद भैया, ब्र. विमल भैया आदि तथा उदासीन श्राविकाश्रम की समस्त ब्रह्मचारिणी बहनों के सान्निध्य में आत्मानंद सागर (पं. श्री रतनलाल जी) दशम प्रतिमाधारी का समाधिमरण 02 अप्रैल 2025 रात्रि 11 बजे हुआ। पिछले 14 दिन से जल उपवास चल रहा था तथा अष्टमी चतुर्दशी को निर्जल उपवास रहा। आपने आचार्य श्री समयसागर महाराज जी से 22 मार्च 2025 चैत्र कृष्ण अष्टमी के दिन नौ प्रतिमा के व्रत लेकर आपका नाम आत्मानंद सागर रखा गया। तथा 28 मार्च 2025 चैत्र कृष्ण चतुर्दशी को दशवी प्रतिमा के व्रत लिये थे। आपने 28 फरवरी 2025 अन्न का त्याग कर दिया था। तथा 19 मार्च 2025 को क्षेत्र का परिमाण भी कर लिया था। आपकी उत्कृष्ट समाधि समता पूर्वक हुई।

श्रमण शतक में मंगल भावना

❊ ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर ❊

प्रत्येक ग्रंथ का प्रारंभ मंगल भावना से होता है मंगल भावना का प्रयोजन निर्विघ्न ग्रंथ की समाप्ति एवं शिष्टाचार का पालन करना है। तथा इष्ट मोक्ष की प्राप्ति की भावना होती है। आचार्य विद्यासागर जी ने अपने ग्रंथ श्रमण शतक में मंगलाचरण के रूप में सर्वप्रथम वर्धमान स्वामी जी का स्तवन किया है, तदुपरान्त श्रुतकेवली भद्रबाहु के प्रति भक्ति प्रकट की है। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए आचार्य श्री ने कुन्दाकुन्दाचार्य का बहुत ही रमणीय स्तवन प्रकट किया है अपने गुरु ज्ञानसागर के प्रति मंगल भावों को प्रकट किया है। इसके साथ ही साथ सरस्वती माँ के प्रति अपनी भक्ति उपासना में निर्विकारी बनने की भावना व्यक्त की। इस तरह के मंगलाचरण विरली ही रचनाओं में दृष्टिगोचर होते हैं शब्दों के लालित्य के साथ भक्ति भावनामय भावपक्ष भी बहुत गंभीर है ऐसी रचनायें जिनमें अलंकार की छटा के साथ यमक और अनुप्रास जिस तरह इन मंगल छंदों में संस्कृत भाषा के साथ प्रस्तुत किये गये हैं उससे तो आचार्य श्री की काव्य शक्ति अपनी उच्चता के साथ प्रकट होती है। कवि और कविता की उदारता की झलक एक बार पाठक को अवश्य ही मोहित कर लेती है।

वर्धमान स्तवनः- आचार्य विद्यासागर जी ने श्रमण शतक का प्रारंभ ही वर्धमान स्वामी की भक्ति से प्रारंभ किया है। उन्होंने वर्धमान स्वामी को ज्ञान, लक्ष्मी और यश की प्राप्ति कराने वाले बताते हुए मान और माया से रहित बताया है। जिनके समक्ष देव नम्रीभूत हैं ऐसे वर्धमान स्वामी से आचार्य भगवन् ने प्रार्थना की है कि मेरे कर्म और जन्मजरा, मृत्यु रूपी रोगों को एक साथ शीघ्र ही नष्ट कर मुझे कल्याण रूपी अवस्था अथवा सुयश को प्राप्त करावें उसी का हिन्दी अनुवाद पद्यमय आपने इस प्रकार किया है।

योगी करे स्तवन भाव भरे स्वरों से जो है संस्तुत नरों असुरों सुरो से
वे वर्धमान गतमान मुझे बचावे, काटे कुकर्म मम मोक्ष विमो ! दिलावे।

इससे पूर्व संस्कृत में आचार्य श्री की मूल रचना इस तरह है

श्री वर्धमान ! माऽय अकलस्य नत सुराप्तमानमायः।
विर्धीश्चामानमाय मचिरेण कलयामानमाय ॥1॥

इस स्तवन में भक्ति रस का प्रवाह एवं अध्यात्म की प्रस्तुति अनोखी है। जिसे पढ़कर पाठक ध्यानस्थ अवश्य हो जाता है।

भद्रबाहु स्तवनः- इतिहास प्रसिद्ध महा-मण्डलेश्वर अखण्ड भारत के अंतिम सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के इतिहास तत्त्व को मंगल भावना में समाहित करते हुए पूज्यपाद आचार्य श्री ने चन्द्रगुप्त मुनि के गुरु भद्रबाहु स्वामी श्रुतकेवली को वन्दना निवेदित करते हुए अपनी भावना प्रकट की है। कि हे गुरुवर ! मैं भव रूपी समुद्र से पार हो जाऊँ और सिद्धत्व को प्राप्त करके, फिर कभी लौटकर न आऊँ। इस तरह से पुर्नजन्म से रहित सिद्ध पर्याय को प्राप्त इस भाव को

प्रस्तुत छंद में प्रगट किया है।

जो चन्द्रगुप्त मुनि के गुरु हैं, बली हैं
वे भद्रबाहु समाधि श्रुत केवली हैं
वदूँ उन्हें द्रुत भवोदधि पार जाऊँ
संसार में कदापि न लौट आऊँ

इसी तरह संस्कृत में भी आचार्य श्री ने अपने भावों को निबद्ध करते हुए इस प्रकार लिखा हैः

तमनिच्छन् पुनर्भवं नृपनतमुकुटमणिलसित पुनर्भवम्।
नत्वेच्छे पुनरभवं भद्रबाहुमहयपुनर्भवम् ॥

आचार्य कुन्दकुन्द देव के प्रति अपनी भक्ति भावना प्रकट करते हुए आचार्य श्री ने लिखा है जो भव्य जीव रूप कमलों के बन्धु हैं। वे उन्हें प्रमुदित करने वाले ही है जिन्होंने धर्मचक्र को धारण किया है जो समतारूपी भूमि की श्रेष्ठ पवित्रता को प्राप्त हैं और सम्यक् दर्शन ही जिनकी अद्वितीय निधि है। ऐसे कुन्कुन्दाचार्य को मैं नमस्कार करता हूँ। इस छंद में यमक अलंकार की अद्वितीय छटा दृष्टिगोचर हो रही है। क्योंकि शब्दों के खिलाड़ी आचार्य विद्यासागर जी का शब्दचयन अत्यंत मनोहर है।

हे कुन्दकुन्द मुनि ! भव्य सरोज बन्धु मैं बार-बार तव पाद सरोज वंदू।
सम्यक्त्व के सदन हो समता सुधा हे धर्मचक्र शुभ धार लिया ललाम ॥

प्रणमामि कुन्दकुन्दं भव्य पद्मबन्धुंधृतवृष कुन्दम्।गतं च समताकुंदं परमं सम्यक्त्यैक कुन्दम्॥3॥

आचार्य ज्ञानसागर जी की वंदना स्तुति करते हुए कवि ने उन्हें पाप रूपी ग्रीष्म ऋतु में सयाने जल बताया है तथा उनके केवलज्ञान पाने के लिए करने का संकल्प किया है। ज्ञानसागर जी की दो विशेषताएँ हैं-

1. सुधी गुरु हितैषी 2. शुद्धात्म में लीन हितोपदेशी

जो ज्ञानसागर सुधी गुरु हैं हितैषी, शुद्धात्म में निरत, नित्य हितोपदेशी
वे पाप ग्रीष्म ऋतु में जल है सयाने, पूंजू उन्हें सतत् केवल ज्ञान पाने॥

शुचौ स्वपदे शीतकं यो ज्ञानाब्धि सदुपदेशी तकम्।
निज-संपदेऽशीतकं यजेऽधशुचि विपदे शीतकम् ॥4॥

शारदा माँ अर्थात् जिनवाणी का स्तवन करते हुए आचार्य श्री ने कहा है, हे शारदे माँ ! मैं संसार रूपी सागर से भयभीत हूँ अतः हे माँ ! अब बिना देर किये अपने सेवक अर्थात् मेरी रक्षा करो। अतः यह दृष्टव्य हैंः-

हे शारदे ! अब कृपा कर दे जरा तो, तेरा उपासक खरा भव से डरा जो
माता ! विलम्ब करना मत मैं पुजारी, आशीष दो, बन सकूं बस निर्विकारी॥

अये ! सरस्वती। मातः संसारादहमतिभीतो मातः।
विलम्बं कलय मा त उपासकं प्रपालय माऽतः ॥5॥

श्रमण शतक ग्रंथ में गुणानुवादी अलंकार युक्त मंगल भावना सूत्र से एक स्वस्थ्य परम्परामय अभिव्यक्ति दी गई है जिसके प्रभाव से पूरा वातावरण मंगमलय बनेगा।

कहानी

प्रतिभा दब गई

लेखकः 105 एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

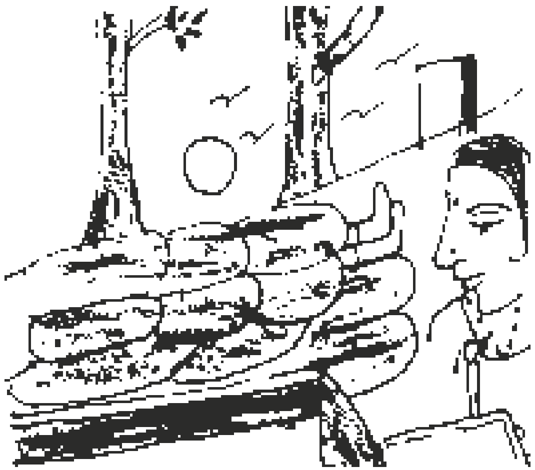

हर रोज की तरह गीता नगर की निवासी प्रतिभा स्वयं ही उपचार करने वाली एक परिचारिका थी हॉस्पिटल में प्रतिभा का नाम सबसे ज्यादा लिया जाता था उसे प्रत्येक रोगी इस नजर से देखता था कि यह नर्स अगर हमारे सामने खड़ी हो जायेगी तो आधे रोग आधी पीड़ा आदि दुख अपने आप समाप्त हो जायेंगे हर कार्य में निपुण शिक्षित और स्वास्थ्य के प्रति ध्यान देने वाली प्रतिभा का नाम अकोला शहर के प्रत्येक घर में उन लोगों के द्वारा लिया जाता था जो लोग प्रतिभा के पास कभी जाकर अपने इलाज कराने पहुंचे हो उसकी तन्मयता और रोगी के प्रति लगनशीलता यह बात कहती थी कि रोगी उसके एक बार के मुस्कान में ही आधी पीड़ा भूल जाता था तब किसी भी रोगी के पास वह जाती थी तो वह ऐसी कहानियां सुनाया करती थी ऐसी बात सुनाया करती थी कि रोगी अपने आप में यह समझने लगता था की अकेली मेरे लिए ही यह दुख या गम नहीं है दुनिया के हर व्यक्ति के पास रोज तकलीफ आती रहती है दुनिया में जितना दुख दर्द है उससे कम मेरा दुख और दर्द है इसलिए मुझे अपनी पीड़ा पर ज्यादा ध्यान न देकर दूसरों की पीड़ा पर ध्यान देना चाहिए अध्यात्म की दिशा में निरंतर बढ़ने वाली प्रतिभा एक मात्र परिचारिका ही नहीं थी वह एक गीतकार भी थी और गीत गायन में भी उसकी महारथ थी प्रायः सभी को वह आनंद फिल्म की स्टोरी अवश्य सुनाया करती थी वह कहती थी कि आनंद फिल्म जिसने देख ली हो और राजेश खन्ना के उस रूप को देखा हो जिसमें राजेश खन्ना ने अपने कैंसर होने के बावजूद भी अपनी

अठखेलिया अपना मनोरंजन अपना जीवन लक्ष्य कभी नहीं खोया हो ऐसे आनंद के उत्सव हमेशा मनाने वाले मौत को सुनकर के मौत की बातें सुनकर के कभी घबराते नहीं है प्रतिभा ने अपने प्रत्येक रोगी जो भी उसके संपर्क में आते थे उन सबसे एक ही बात कहती थी डोन्ट वरी डोन्ट करी डॉन्ट हरी क्योंकि प्रतिभा एक बार आचार्य विद्यासागर जी महाराज जी के चरण शरण में भी आई थी शिरपुर में और उस शिरपुर में आने के बाद उसने आचार्य श्री से दो प्रश्न किए थे कि दुनिया में कितना दर्द है कष्ट है गम है मैं अस्पताल में रहती हूँ तो आचार्य श्री बताइए मैं कैसे अपने रोगियों का उपचार करते हुए सांत्वना दू क्योंकि उपचार तो डॉक्टर करते हैं मैं उनके द्वारा बताई हुई इलाज करती हुँ लेकिन मुझे आचार्य श्री इस बात का मार्गदर्शन दीजिए आचार्य श्री ने उससे यही बात कही कि तुम अपने सभी रोगियों के लिए एक बात कहूँ डोन्ट वरी डोन्ट हरी डोन्ट करी घबराओ नही जल्दीबाजी मत करो ओर चिंता मत करो चिंता नहीं चिंतन करना चाहिए कष्ट चिंता से नहीं चिंतन से मिटते हैं प्रतिभा स्वयं में स्वस्थ रहने के लिए भी बहुत प्रयास करती थी और स्वयं के स्वास्थ्य के लिए वह जहां भोजन पर पूरा ध्यान देती थी वहीं प्रतिभा अपनी दिनचर्या पर भी पूरा ध्यान देती थी रोज सुबह उठकर मार्निंग वाक पर जाना प्रतिभा का दिनचर्या का एक बहुत बड़ा अंग था वह सदैव एक बात सोचा करती थी कि बीमारियां हर शरीर में आना है आती हैं और आती रहेंगी इन बीमारियों को कोई भी व्यक्ति रोक नहीं सकता है लेकिन बीमारियों से बचने के लिए केयर जरूर कर सकता है और वह प्रत्येक रोगी से एक बात कहती थी कि भाई साहब हजार दवायें पर एक दुआ जहां पर दवा काम करना बंद देती है पर दुआ काम करती है इसलिए अपने प्रभु परमात्मा की दुआ लो अपने गुरुओं की दुआ लो आशीर्वाद लो और उनके आशीर्वाद से आप आगे बढ़ते चलो प्रतिभा की इस बात को सुनकर के हर व्यक्ति सोचने लगता था।

अकेला मैं ही बीमार नहीं हुआ हूँ दुनिया में अस्पतालों में जाकर देखो दुनिया की हर अस्पताल में जितने रोगी नहीं है उनसे ज्यादा रोग के सोच में मरने वाले ज्यादा है रोग का चिंतन करते हैं कम मेरे परिवार का क्या मेरे बच्चों का क्या होगा मेरी बीबी का क्या होगा मेरे धंधे का क्या होगा मेरी नौकरी का क्या होगा इन सब बातों को सोचकर के व्यक्ति निश्चित तौर पर घबरा जाता है और घबरा कर वह अपने जीवन लक्ष्य को भूल जाता है अब बात यह आती है कि प्रतिभा की भजन गाने की जो आदत थी वह भजन प्रायः सुनाया करती थी और वह उसका एक प्रसिद्ध ओठों पर चलने वाला भजन था

क्योंकि रोगियों के वो बीपी भी नापती थी वह टेम्प्रेचर भी नापती थी इसके उपरांत उनका चार्ट भी बनाती थी सब कुछ करने के बाद वह प्रतिभा एक काम अवश्य करती थी कि अपने मोबाइल से या अपने मुंह से किसी भी रूप में वह कहती थी कि भजन में इतनी शक्ति है कि यह भजन आप उसे यमदूत को बहुत दूर कर देते हें भगवत भक्ति जितने भी आप करोगे उतने ही आप बीमारियों से दूर रहेंगे और भगवान जिसके हृदय में होता है उसके पास यमदूत नहीं आ सकता है जिसके पास यमदूत आना ही है आ जाये क्योंकि मृत्यु आत्मा की नहीं होती है वह गाती थी मैं हूँ आत्मा तु परमात्मा यह भजन तब लोग प्रतिभा के मुंह से सुनते थे तो वह एक बात अंदर सोचने लगती थी कि सचमुच में मैं आत्मा हूँ अमर हूँ क्यांकि कभी भी वे एक बात सोचती थी गीता के उसे इस लोक को भी सुनाया करती थी कि जिसमें यह कहा गया है न अस्तु न भावा जाई थी अभाव की उत्पत्ति नहीं होती है भाव का कभी नाश नहीं होता है सिर्फ परिवर्तन उसकी अवस्थाओं का होता है और अवस्थाओं के परिवर्तन को जो समझ लेता है वहीं निश्चित तौर पर जीवन जी सकता है प्रतिभा कि इन सब बातों को सुनकर के कभी कभी तो बड़े-बड़े डॉक्टर अस्पताल के प्रतिभा को अपने चेम्बर में बुला करके उसके मुंह से मै हूँ आत्मा परमात्मा का भजन सुना करते थे और वही एक गाना भी अपने अधरों पर बहुत ज्यादा लाती थी कि दुनिया में कितना गम है मेरा गम कितना कम है लोगों का गम देखा मैंने अपने गम भूल गई यह जब वह सुनती थी समझती थी और जीवन में उतार भी लेती थी ओर वह जीवन में उतार कर के बहुत अच्छी तरीके से सादा जीवन उच्च विचार रखने वाली प्रतिभा संगीत की ड्राइंग पेटिंग की प्रतिभा को भी अपने साथ सजोये रखती थी एक हाथ में वह ऐसे कार्टून बना देती थी और अपने मरीजों को दिखाती थी और उसके कार्टून देखकर के प्रत्येक रोगी मरीज हंस पड़ता था खिलखिलाकर के हंस पड़ता था और जब वह उसके कार्टून को देखती थी प्रतिभा कार्टून अपने बनाकर के लाती थी रोज एक न एक ऐसा कैसे कार्टून बनाकर लाती थी जिसे स्केच को देख के सब मरीज एक बात कहते थे मैडम हम सचमुच में आज तक इतने नही हंसे जितना आज आपने हसा दिया कभी वो राजनीति पर कार्टून बनाकर के लाती थी कभी समाज की विसंगतियों पर कभी कोई प्रतिभा सचमुच में प्रतिभावान थी लेकिन आज प्रतिभा जब सुबह के पांच बजे उठकर के अपने गीता नगर निवास से सैर करने निकले हिंगना रोड़ पर और वह खूब दूर तक चली गई जितनी दूर तक रोज जाती थी उससे भी थोडे से आगे गई उसे यह पता नहीं था कि हम लौट तो रहे है पर

घर पहुंचेगे कि नही यह वह नहीं कह पा रही थी परंतु वह चलती चली गई चलती चली जा रही थी कि अचानक उसका घर अब बस सिर्फ सौ मीटर दूर रहा था बस घर आने वाली ही था कि हिंगना रोड़ पर एक तुवर से भरा हुआ ट्रैक्टर सामने से चला आ रहा था प्रतिभा ने सोचा ट्रैक्टर है बीच रोड से जा रहा है वह रोड के किनारे चलने लगी रोड के किनारे जब चल रही थी तो प्रतिभा ने अपना कभी ऐसा नही सोचा होगा कि यह ट्रैक्टर का क्या होगा अचानक ट्रैक्क्टर में जुड़ी हुई ट्राली में जिसमें तुवर की बहुत बोरियां लदी थी यह भी कह सकते हैं कि उसमें क्षमता से ज्रुादा तुंवर की बोरियां लदी थी ।

अब जब क्षमता से ज्यादा होता है टर्न जब आ रहा था तो ड्राइवर ने क्या पता कैसे टर्न लिया कि उसकी टर्निंग लेने के बाद उसका अचानक संतुलन बिगड़ा और संतुलन बिगड़ने के साथ-साथ वह ट्रैक्टर अपनी स्थिति पर कायम नहीं रह सका गति ज्यादा थी भार भी ज्यादा था और उस ट्रैक्टर को देखकर के प्रतिभा ने अपने मन में यही सोचा कि लोग इतना ज्यादा क्यों लादते है पुलिस वाले हमेशा रोकते रहते हैं कि अधिक लोड़ करने पर चालान भी बनाते हैं फिर भी लोग न जाने क्यों इतना भार लाते हैं गति सीमा भी वहां पर लिखी थी बोर्ड लगा था बीस किलोमीटर की गति से चलाई लेकिन ट्रैक्टर सुबह का समय था मंडी जल्दी पहुंचना था क्योंकि मंडी में उसका नंबर लग जाता पहले लग जाता पहले बेचकर के निकल जाता यह प्रत्येक किसान के बीच में एक प्रतिस्पर्धा चलती रहती है उसी स्पर्धा के तहत ट्रैक्टर वाला भी लंबी लाइन से बचने के लिए कि मेरा ट्रैक्टर लंबी लाइनों में मंडी में न खड़ा रहे इसके लिए मैं जल्दी से जल्दी पहुंचना चाहता था गति ही उसकी मति मति अनुसार उसकी गति होती है और उसकी मति में सिर्फ एक बात थी कि मैं जल्दी से जल्दी पहुंची और वह जल्दी के चक्कर में खूब तेज भगा रहा था अचानक क्या आया कि ऐसा क्या हुआ कि उसका एक्सल टूट गया ट्रैक्टर का एक्सल टूट गया ट्रैक्टर टूटा और ट्रैक्टर के नीचे सारे तुवर की बोरिया गिर गई और उसी बोरियों की नीचे प्रतिभा भी आ गई आवाज चीख बहुत सारी सुनकर के घटना की जानकारी जिसको भी मिली वह दौड़ पड़ा क्योंकि प्रतिभा को बचाने के लिए सबका मन बना था और जेसी पता लगा कि नर्स बाई दब गई है।

लोगों ने उठाना शुरु किया जिनकी ताकत नहीं हुइ थी उन्होंने भी बोरियों उठा उठाकर के फेंकना शुरु किया और प्रतिभा को ऊपर निकालने का प्रयास किया कि प्रतिभा कब ऊपर निकले उसके लिए लोगों ने ताकत लगा दी चिल्ला चोट मच गई लेकिन बात सिर्फ इतनी सी थी कि

प्रतिभा को निकालकर के उसके लिए आगे बढ़ाना था तुरंत पुलिस थाने भी सूचना पहुंच गई की एक महिला तुवर की दाल की ट्राली पलटने से दब गई है पुलिस आई जेसीबी भी आ गई और जेसी बी ने आकर के तुरंत फटाफट बोरिया को निकालना शुरु किया बोरियां निकलती चली जा रही थी लेकिन एक बात अवश्य हुई की सुबह देखते देखते ही नौ बज गए और नो बजने के बाद सब लोगों ने प्रतिभा को देखा बोरियां हट चुकी थी प्रतिभा के परिवार के लोग भी आ चुके थे जल्दी से उसे एम्बुलेंस में रखा गया सोचा श्वास होगी सास की आस होगी लेकिन श्वास तो कब बंद हो गई पता नही चला पर अब लोगों ने तय किया कि प्रतिभा तो उभर गई जिंदगी से हार गई इसके वाबजूद भी लोगों ने आशा नही छोड़ी और हॉस्पिटल ले गये हॉस्पिटल में वही हॉस्पिटल जहां प्रतिभा रोगियों का दर्द दूर करती थी लेकिन प्रतिभा का दर्द दूर कोन करेगा इस बात को कोई बता नहीं पा रहा था बस डॉक्टर के पास जाते हुए प्रतिभा के लिए डॉक्टरों ने देख करके उसकी आंख की पलक को ऊपर किया पलक खुली की खुली रह गई डॉक्टर ने कह दिया बस हमें आज इस प्रतिभा को खोने का सिर्फ दर्द ही झेलना पड़ेगा अब प्रतिभा हमें दुबारा न तो गीत सुना सकती है ना वो हमें अब कार्टून दिखा सकती है और न वह प्रतिभा अब किसी भी मरीज किसी भी रोगी के दर्द को दूर कर सकती है डॉक्टर की बात सुनकर के प्रतिभा का परिवार अपना आपा खो बैठा और प्रतिभा के परिवार ने अपनी संपूर्ण आशा खो देने के बाद उस तुअर दाल के ट्रैक्टर वाले को ढूंढना शुरु किया लेकिन प्रतिभा की माँ ने एक बात कही कि तुम सब लोग व्यर्थ के झगड़े कर रहे हो एक ट्रैक्टर का चालक यदि मान लीजिए जेल में चला भी जायेगा इसको सजा भी हो जायेगी तो क्या प्रतिभा लौटकर के आ जायेगी प्रतिभा की मां की बात सुनकर के परिवार ठिठक गया और वह चालक भी सिर्फ आंसू बहाने के सिवा कुछ और नहीं कर पा रहा था लेकिन उसकी भी मजबूरी थी वह एक ही बात कह रहा था एक्सल टूट गया मैं नहीं कह सकता हूं ये अनहोनी केसे हो गई मैं नही कह सकता हूं होनी तो होके रहे अनहोनी न होय जाको राखे साइयां मार सके न कोय उनकी बात को सुनकर के प्रतिभा के दर्द को वियोग को सहन करने के सिवा कुछ भी नहीं था प्रतिभा के पिताजी ने कहा मेरी प्रतिभा अब मुझे मिलने वाली नहीं है इसलिए में सिर झुकाकर नियति के इस दंड को स्वीकार कर रहा हूं और नियति को कोई बदल नहीं सकता हैं बस बात को मैं स्वीकार कर रहा हूँ नियति ही मेरे लिए सब कुछ है और मैं नियति को प्रणाम करता हूँ और प्रतिभा को विदा देता हूँ।

हमारे गौरव

ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद का अवदान

जैन धर्मभूषण, धर्म दिवाकर आदि उपाधियों से विभूषित भगवान शीतलनाथ जो स्वयं एक संस्था थे। वे आदर्श कार्यकर्ता, कुरीतियों के निवारक, समाज शुद्ध एक अनेक विद्यालयों तथा छात्र के संस्थापक, स्थिति और वृदि करने वाले कई पत्रिकाओं के कुशल सम्पादक, ग्रंथों के आज्ञानुवादक आदि से उन्हों ने विरोधों कटु-आलोचनाओं वाक्प्रहारों व उपसर्गों को खुशी से सहन करते हुए सम्पूर्ण भारत वर्ष में श्रमण किया।

जीवनवृत्त: आपका जन्म सन् 1977 संवत् 1935 में लखनऊ शहर के मोहल्ला सराय भ- अलीखां के कालामहलन नाम से विख्यात हवेली में हुआ था। आपकी माता का नाम श्रीमती नारायणी देवी और पिता श्री मक्खनलाल था। आप चार भाई एवं एक छोटी बहन थी।

विद्याभ्यास: ग्रंथों के स्यादवादी इनके पितामह श्री मंगलसेन जी शीतल प्रसाद को 8 वर्ष की उम्र से अपने साथ कलकत्ता ले गये थे। यहीं पर अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त की। सन् 1896 में मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की और घर पर दादाजी से धार्मिक शिक्षा/संस्कार भी प्राप्त किये।

परिवार न पोषण: सन् 1893 में 15 वर्ष की उम्र में कलकत्ता निवासी छेदीलाल गुप्त की कन्या से विवाह हुआ। वैष्णव, संस्कारों में पत्नी अपनी सहधर्मिणी को शीतलदास जी ने जैन संस्कारों में ढालकर श्रद्धालु श्राविका बना दिया।

मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर आप लखनऊ लौट आये। यही पर घोप्र कम्पनी में एकाउन्टेंट की नौकरी की। वर्ष 1902 में रूड़की सिविल इंजीनियरिंग कॉलेज से एकाउन्टेटशिप का प्रमाण पत्र प्राप्त कर रूहेलखण्ड रेलवे में काम करने लगे। इस नौकरी से अतिरिक्त समय को स्वाध्याय और समाज सेवा में लगाते थे।

विरक्ति: इनके पिताश्री मक्खनलाल जी का सन् 1903 में देहावसान हो गया। अनन्तर सन् 1904 में एक मार्च को माता श्रीमती नारायणी देवी तथा 13 मार्च को 18 वर्षीय युवा भ्राता पन्नालाल के स्वर्ग सिधारने की घटना ने इन्हें संसार की असारता के प्रत्यक्ष दर्शन करा दिये। ज्ञानार्णव, कार्तिकेयानुप्रेक्षा आदि ग्रंथों के स्वाध्याय का मन पर काफी गहन प्रभाव था फिर भी, उठने वाली क्षोभ की तरंगे कभी भी इतनी बलबती हो जाती है कि आंखों से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगती। इस घटना से वैराग्य भी इतना कुष्ट हुआ कि सारे सांसारिक प्रलोभनों को त्याग कर 19 अगस्त 1905 में नौकरी से भी मुक्ति प्राप्त कर ली। इस समय तक अपने अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य कर लिये थे। वे दिगम्बर जैन अवध प्रान्तीय सभा के उपमंत्री, महासभा को प्रबंधकारिणी समिति के सदस्य आदि बनकर इनके अधिवेशनों में रचनात्मक एवं क्रियात्मक कार्य करने में सक्रिय रहे।

ब्रह्मचर्यव्रत: सोलापुर में 13 सितम्बर 1909 को ऐलक श्री पन्नालाल जी के केशलोंच

की तिथि निश्चित हुई। उस अवसर पर श्री शीतलप्रसाद जी ने ऐलक जी से ब्रह्मचर्य प्रतिभा धारण की।

जैन परिषद की स्थापना: सन् 1923 में जैन महासभा दिल्ली के अधिवेशन में रूदिवादिता और प्रगतिशील विचारकों में मतभेद हो जाने से ब्रह्मचारी जी के नेतृत्व में प्रगतिवादियों ने भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद की स्थापना की। इनसे प्रमुख थे बैरिस्टर चम्पतराय जी, श्री अजित प्रसाद जैन एवं बाबू कामताप्रसाद जी। इस परिषद ने समाज सुधार हेतु विशेष प्रस्ताव पारित किये।

संयुक्त प्रान्तीय सभा: ब्रह्मचारी जी की प्रेरणा से महासभा के कानपुर अधिवेश के अवसर पर सन् 1921 में संयुक्त प्रान्तीय सभा की स्थापना हुई। जिसने अत्यंत सुचारू रीति से कार्य किया।

बंगीय सार्वधर्म परिषद: आरा निवासी देवेन्द्र प्रसाद जी और पं. पन्नालाल जी ने ब्रह्मचारी जी की सलाह से सन् 1922 में बंगीय सार्वधर्म परिषद् की स्थापना हुई। इसका उद्देश्य बंगाली भाषा में जैन धर्म के साहित्य का प्रकाशन और प्रचार करना था।

सामाजिक अवदान: ब्रह्मचारी जी समाज में व्याप्त अंधविश्वास एवं रूढ़िवादिताओं को मिटाकर स्वच्छ समाज देखना चाहते थे। अत एव उन्होंने अनेक सुधार कार्य किये।

1. समाज में बालविधवाओं की दयनीय स्थिति देखकर उन्हें पयभ्रष्ट होने से बचाने के लिए बाल विधवा विवाह का समर्थन कर उसे श्रेयस्कार समझा।

2. जैन समाज के अंतर्जातीय विवाहें के प्रबल समर्थक रहे और इसका प्रचार किया।

3. समाज में व्याप्त शिक्षा विवाह, जिसमें इन्हें पूजापाठ से बंचित रखा जाता था, खुलकर विरोध और उन्मूलन किया।

4. मरण मोक्ष की समाधि पर विशेष बल दिया।

5. वे जैन समाज के सभी पंचायत से सुलझाने के पक्ष में रहे।

6. महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने हेतु वे संकल्पित थे। आपने महिलाश्रम दिल्ली एवं जैन बाल आश्रम आरा आदि विभिन्न महिला संस्थाओं की स्थापना की जिसमें बहिन मंगनबाई एवं ब्र. चन्दाबाई का उल्लेखनीय योगदान रहा।

7. संशोधित प्रतिष्ठा पाठ का सृजन कर बाहरी रूप से मेले आदि के बहिष्कार एवं प्रतिष्ठा के समय एक ही प्रतिभा के समर्थक थे।

सन् 1905 में तारण-तरण समाज के मूर्तिपूजा विरोधी विवाद को ब्रह्मचारी जी ने समाप्त किया।

आप सन् 1905 में श्री माणिकचन्द्र सेठ के अनुरोध पर बम्बई चले गये आपकी प्रेरणा से ही सेठ जी ने बम्बई, सांगली, आगरा, सोलापुर, कोल्हापुर, लाहौर आदि अनेक स्थानों पर धार्मिक संस्थाओं की स्थापना की।

साहित्यसृजन के भेद: ब्रह्मचारी जी के प्रयासों से अप्रैल सन् 1902 से जैन गजट आय के स्थान पर लखनऊ से पाक्षिक के रूप में मुद्रित होने लगा। 1 फरवरी 1905 से यह साप्ताहिक कर

दिया गया और सन् 1908 इसे ब्र. शीतलप्रसाद जी ने पं. श्री जुगलकिशोर जी गुरुवर को सौंप दिया।

सन् 1922 से ही जैन परिषद के मुख पत्र वीर का सम्पादन कार्य भी यह सम्पादक बाबू कामताप्रसाद जी के साथ किया। सन् 1926 में वे लखनऊ पधारे। वहां कुछ कार्य पुस्तकों के अंग्रेजी अनुवाद हेतु श्री अजितप्रसाद जी को प्रोत्साहित कर प्रकाशन किया। सन् 1927 में विभिन्न संस्थाओं के सभी पदों से त्यागपत्र दे दिया।

ब्रह्मचारी जी की यशस्वी लेखनी ने 78 ग्रंथों को निर्मित किया। इनमें बड़े ग्रंथ 20, छोटी पुस्तकों 24 और 22 ग्रंथो की हिन्दी टीकाएँ हैं।

इस प्रकार 40 वर्षीय ब्रह्मचर्यकाल में समाज को विपुल साहित्य सामग्री प्रदान की, जो उनके प्रतिदिन लगभग 12 घंटे स्वाध्याय एवं ज्ञानार्जन का प्रतिफल हैं। जैन धर्म राष्ट्र धर्म बन सकता है, यदि उसका प्रचार किया जाये। ऐसा उनका दृढ़विश्वास था। वे जैनधर्म का विदेशों में प्रचार-प्रसार करना चाहते थे, पर उनकी यह इच्छा अस्वस्थता के कारण पूर्ण न हो सकी। फिर भी आपने सप्तम प्रतिमाधारी श्रावक होने पर साधु सदृश विहार कर उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पश्चिम, सभी और धर्म प्रचार किया।

वे रेलयात्रा के लिए सदैव तैयार रहते थे। यात्रा के दौरान उपवास तथा तीसरे दर्जे की यात्रा का उपयोग करते थे। चलती ट्रेन मे बिना कोई कठिनाई के लेखनकार्य और सामायिकादि करते रहते थे। उनकी इस वृत्ति के कारण कुछ मनोविनोदी लोग उन्हें रेलकाय का जीव कहा करते थे।

उपाधिया: 28 दिसगम्बर सन् 1922 को स्याद्वाद महोत्सव काशी में डॉ. जैकोयी की अध्यक्षता में गुरुवर पंडित श्री गोपालदास जी बैरया के अनुमोदन पूर्वक ब्रह्मचारी श्री शीतलप्रसाद जी को (जैन धर्मभूषण) की उपाधि से सम्मानित किया गया।

7 नवम्बर 1924 को इटावा में सकल जैन शिक्षा प्रचारक समिति तथा जैन तत्त्व प्रकाशिनी सभा कीऔर से अभिनंदन पत्र तथा धर्म दिवाकर की उपाधि समर्पित की गई। पर वे उनसे निर्लिप्त रहे।

न्याधि एवंअन्त: अंत में कुछ वर्षों से बह्मचारी जी को वायुकंप का रोग हो गया, जिससे उनके हाथ कांपने लगे तथा अंगुलियां हिलती रहने के कारण लेखन कार्य प्रभावित हुआ। कुछ समय बाद तो पैर भी लडखड़ाने लगे। सन् 1938 में अंत तक बम्बई में चिकित्सा चलती रही। जुलाई 1940 में रूग्णावस्था में लखनऊ आये। यहां अजिताश्रम में भक्तों की सेवा। वैयावृत्ति से लाभ मिला। 6 जनवरी 1942 की रात्रि में गिर जाने के कारण कूल्हें ही हड्डी टूट गयी जिससे प्लास्टर बंधा। प्लास्टर के अंदर घाव हो जाने पर बेहोशी की दवा प्रयोग किये बिना ही ऑपरेशन कराया। रूग्णावस्था में भी दैनिक क्रियाओं को नियमित करते रहे।

अंतिम समय में श्रीयुत न्यायाचार्य महेन्द्रकुमारजी, बनारस वालों से धर्मोपदेश का श्रवण किया। 10 फरवरी सन् 1942 को आत्मानुभवानन्दसागर में गोते लगाते प्रातः 4 बजे उन्होंने अंतिम श्वांस ली।

ब्रह्मचारी श्री शीतलप्रसाद जी निःस्वार्थ-हितचिंतक और सुधारवादी समाजसेवक के रूप में जन-जन के हृदय में विराजमान हैं।

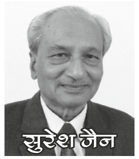

क्रमांक-50 वरिष्ठ नागरिक

प्रेम ही सुखी जीवन की राह है

बहुत हो चुका बचपन में लड़-झगड़कर सुलह हर ली, जवानी में लड़ाई-झगड़ा हुआ-बोल बुलावा हुआ- अहँ को चोट पहुँची, दूसरे के प्रति दिल में नफरत पैदा हो गई, जो उमर भर साथ चली। व्यापार में नुकसान बेटे-बेटियों की शादी, घर में कलह क्लेश, इसकी बहुत चिंता कर ली, अब बुढ़ापा आ गया, इन सबके होते चैन कहाँ से मिलेगा। बहुत हो गया, अब बौर नहीं बस।

सुख का यही रास्ता है कि नफरत को दिल से निकाल दें और चिंता को दिमाग में घर न करने दें ! प्रेम ही सुखी जीवन की राह है। टॉलस्टॉप ने एक बार कहा था जहां प्रेम है वही ईश्वर हे। यह बात सौ फीसदी सत्य है। हालांकि इसमें यह भी जोड़ा जा सकता है कि यहां ईश्वर और प्रेम है, वही सुख भी है। इस लिहाज से सुखी रहने के लिए एक व्यावहारिक सिद्धांत यह है कि हम प्रेम का अभ्यास करें।

सादगी से अपना जीवन जिए। दूसरों से कम की उम्मीद करो और उन्हें ज्यादा दो। नफरत और विद्वेष जैसे मनोविकारों को छोड़ अपने जीवन को प्रेम से भर दें। जीवन के इस सफर में खुशी बांटते चलो। खुद को भूल जाओ और दूसरों के बारे में सोचो ! दूसरों के साथ वैसा व्यवहार करो, जैसा आप अपने लिए चाहते हैं।

इन बातों को पढ़ने के बाद शायद आप यह कहें कि इसमें कुछ भी नया नहीं है। सच बात है, परंतु यह भी सत्य है कि अगर आपने इन्हें कभी अपनाया नहीं है, तो इनमें कुछ तो नया है। जब आप इसका अभ्यास करेंगे, तो सुखी और सफल जीवन का सबसे नया, सबसे ताजा और सबसे आश्चर्यजनक तरीका पायेंगे। इन सिद्धांतों का महत्व ही क्या है, अगर आपको यह सिद्धांत हमेशा से मालूम हों, परंतु आपने कभी इनका उपयोग न किया हो ? जीवन में इस तरह की चूक बहुत दुखद है। गरीबी में जिंदगी भर क्यों रहा जाए जब आपके दरवाजे की चौखट पर सोने की ईंटे रखी हुई हों ?

यह तो जीने का कोई समझदारी पूर्ण तरीका नहीं है। यह आसन फिलॉस की सुख की राह है। अब दिल से नफरत निकाल दें तथा दिमाग से चिंता, इन सिद्धांतों पर सिर्फ एक सप्ताह चलकर देखें और अगर इनसे आपको सच्चा सुख मिलना शुरु नहीं होता, तो आपका दुख बहुत ही गहराई में बैठा है। ऐसी हाल में सुख के इन सिद्धांतों को शक्ति देने और उन्हें असरदार बनाने के लिए आपको मानसिक रूप से भी मजबूत होना पड़ेगा।

किडनी में पथरी ? अब और नहीं ! किड़नी रोग पथरी लक्षण व उपचार

✻ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ✻

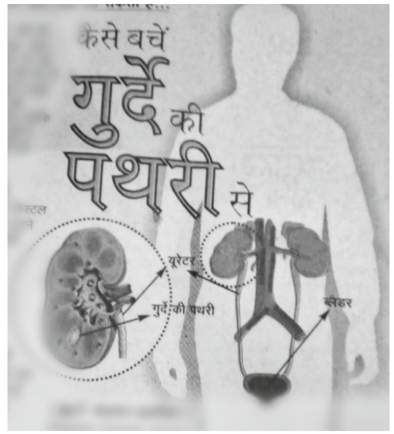

किडनी पेशाब नली व पेशाब की थैली में पथरी एक आम समस्या बनती जा रही हे। पहिले मनुष्य के जीवन काल में पथरी बनने की संभावना 5-10% तक होती थी किन्तु यह समस्या दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। जिन्हें एक बार पथरी बनती है। उनमें से 50% मनुष्यों में यह समस्या बार-बार होती है। यह रोग 30-60 वर्ष की उम्र होता है। बच्चों व वृद्धों में मूत्राशय की पथरी, जबकि वयस्कों में किडनी व मूत्रवाहक नली में पथरी बनने की शिकायत ज्यादा होती है। पथरी महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में अधिक होती है।

पीठ के रीढ़ के दोनों तरफ दो किडनी होती है। दाहिनी तरफ की 12वी पसली के नीचे तरफ उदर गहर और कुछ यकृत के पीछे पीठ की तरफ दाहिनी किडनी (Right Kidney) और बायी तरफ की 11वी पसली के नीचे तरफ उदर गहर कुछ प्लीहा के पीछे पीठ की तरफ वायी किडनी (Left Kidney) होती है। दाहिनी किडनी छोटी व मोटी होती है बायी किडनी की अपेक्षा थोड़ी नीचे रहती हैं। वयस्क किडनी का वजन लगभग 140 ग्राम तक होता है। कुछ मनुष्यों में जन्म से ही एक किडनी नही होती है या घोडे की नाल के आकार की किडनी होती है जिसे खरोंच लगने या कटने से चोट पहुंच सकती है। किडनी फली के आकार (Been-Snaped) की होती हे जो गहरे जामुनी रंग की होती है। किड़नी के शरीर से मूत्रनली जो किडनी से मूत्र को मूत्राशय (Bladder) में इकट्ठा होता है जो गोदाम के रूप में कार्य करता है। मूत्राशय से लगी हुई नली मूत्रमार्ग (Urethra) से मूत्राशय में अधिक इकट्ठा मूत्र इसी नली से बाहर निकलता है। यदि पथरी छोटी होती है तो वह किडनी से सहज रूप में मूत्र नली के रास्ते मूत्र से बाहर निकल जाती है और शरीर में किसी प्रकार की तकलीफ नही होती है, यदि पथरी बड़ी होती है तो मूत्राशय से आने के लिए जब मूत्रनली में प्रवेश करती है तो भयानक दर्द होता है इसी को मूत्र पथरी का दर्द (Renal Cotic) कहते हैं।

पथरी एक ठोस क्रिस्टल पिंड होती है जो मूत्र से छूटने वाले छोटे-छोटे कणों से विकसित होकर किडनी के भीतर बनती है। पथरी मुख्य रूप से तीन प्रकार की होती है। 1. कैल्शियम कार्बोनेट जो सफेद भुरभुरी सबसे आसानी से घुलने वाली होती है। 2. कैल्शियम फास्फेट यह चिकनी होती है, 3. कैल्शियम ऑक्सीलेंट और यूरिक एसिड पथरी जो ब्राऊनी खुरदरी व ब्राऊनी चिकनी होती है।

कारण- 1. पानी कम पीना तथा पेशाब की मात्रा में कमी, पेशाब के रास्ते में रूकावट, पेशाब का इन्फेक्शन।

2. अत्याधिक मोटापा, आंत की कुछ बीमारियाँ जिनमें दस्त लगते हैं, गठिया डायबिटीज, पैरा थायराइड, कुछ अनुवांशिक रोगों में यह रोग कुछ मनुष्यों में अधिक पाया जाता है।

3. अधिक मात्रा में नमक का उपयोग, मांसाहारी भोजन करना।

दर्द लक्षण- 1. दाहिनी या बांयी कोख (कमर) में तेज दर्द जो पेट के निचले भाग की तरफ जाता है, कुछ महिलाओं में यह दर्द प्रसव पीड़ा से भी अधिक दुखदायी होता है।

2. पेशाब जाने की तीव्र इच्छा, पेशाब में खून आना, पेशाब करते समय समय तकलीफ होना, मितली और उल्टी होना, पेशाब में जलन व बूंद-बूंद आना, बुखार आना।

3. कुछ पुरुषों में कभी-कभी दर्द लिंग या अंडकोष तक चला जाता है।

4. दर्द पानी की तरंगों के समान होता हुआ पीठ तरफ जाता है। दर्द वाली जगह को दबाने पर पहले घट जाता है पर बाद में किडनी की जगह असहनीय दर्द।

सावधानियाँ- 1. दिन में कम से कम 3 लीटर पानी पियें यदि आप गर्म वातावरण में रहते हैं या अत्यधिक व्यायाम या मेहनत का कार्य करते हैं तो उसकी मात्रा बढ़ा सकते हैं। भारी चीजें तेजी से नहीं उठावें।

2. भोजन में प्रतिदिन 3-5 ग्राम से ज्यादा नमक नहीं लेना, दूध व दूध से बने पदार्थ कम लेवें व दूध से मलाई निकालकर उपयोग में लेना।

3. पर्याप्त मात्रा में कैल्शियम होना चाहिए पर अत्याधिक कैल्शियम सप्लीमेंट या विटामिन लेवें। गोभी, मटर, टमाटर, प्याज, मशरूम, लहसुन, काजू, कद्दू, उड़द की दाल, चना, अंगूर, पालक, मैथी, धनियापत्ती, चौलाई की भाजी, बैंगन, भिन्डी का उपयोग न करें या सीमित मात्रा में करना।

4. नींबू, नारियल पानी, बादाम, भुट्टा, मूंग की दाल, गाजर, तरबूज का उपयोग लाभदायक है। सही मात्रा में फल सब्जी तथा फाइबर युक्त भोजन लेंवे।

5. सूखे मेवे, मांसाहार, लेंसदार पदार्थ, मद्यपान से दूरी बनायें, मोटापा नियंत्रित करना, बिना चिकित्सक की सलाह से ऐलोपैथी दवाईयों का उपयोग नहीं करना।

6. बदलती खान-पान शैली में सुधार, व्यस्ता व तनाव को दूर करें।

प्राथमिक उपचार- 1. अचनाक दर्द होने पर गर्म पानी में सूती कपड़ा भिगोकर सिकाई करें या गरम पानी को बोतल में भरकर दर्द वाली जगह को दबाकर रखें। खूब मात्रा में गरम पियें।

2. कुछ देर तक पीठ की तरफ झुकाकर बैठे रहने पर पथरी किड़नी में लौट जाने से दर्द कम हो जाता है।

उपचार- 1. कभी-कभी पथरी का दर्द स्वतः कुछ दिनों बाद कम हो जाता है जिससे रोगी सोचता है संकट कम हो गया है, जबकि वास्तव में ऐसा किडनी के अवरूद्ध होकर बंद हो जाने के

कारण होता है। इस परिस्थिति में यदि उपचार किया जाये तो किडनी स्थायी रूप से खराब हो सकती है और व्यक्ति की जान भी जा सकती है।

2. सभी चिकित्सा पद्धति में प्रारंभिक अवस्था में इलाज से आराम हो जाता है। 2-3 MM पथरी दर्द के साथ निकल जाती है किन्तु 5 MM से बड़ी पथरी मूत्रमार्ग (यूरेथा) में फस सकती है एवं 7-8 MM पथरी अति नुकसान दायक है। जिससे पेशाब में खून आता है जिसकी ऐलोपैथी पद्धति से सर्जरी करवाना ही उचित रहता है।

विशेष- होम्योपैथी पद्धति से पथरी आसान से निकल जाती है एवं पुनः दुवारा न होवे नियंत्रित किया जा सकता है योग्य व अनुभवी चिकित्सक की सलाह लेकर इलाज करना चाहिए।

पथरी धन चूर्ण-

1. यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जावें।

2. पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।

3. प्रथम खुराक लेने के बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जायें।

नोट- यह औषधिक निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)

फोनः 0731-3193601 मो.:8989505108, 6232967108

समय पर इलाज परहेल व सावधानियाँ रखने से इस रोग को मुक्ति मिल सकती है जिससे शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ्य होकर किडनी में पथरी ? अब और नहीं ! दर्द दूर रहेगा।

कविता

मिथ्यामत नहीं मानो

✲ संस्कार फीचर्स ✲

श्रुत अमृत का पान करो रे, विषय जहर को त्यागो
शिव भक्ति शिव शक्ति को, निज उर में पहचानो
सूची सूत्र सहित गर होती, कभी नहीं गुम पाजी
गर गुम जाये सूई सूत्र मय, शीघ्र पुनः मिल जाती
ज्ञान और वैराग्य की थाती, आगम महिला जानो
श्रुत अवतारी सम्यग्धारी, क्रोधी समाधि पावे
तीर्थंकर की वाणी सुनकर, भव का भ्रमण मिटावे
नय प्रमाण से तत्त्वज्ञान पा, मिथ्या मत नहीं मानो

हास्य तरंग

1. महिला डॉक्टर के पास जाकर कहती है कोरोना काल होने से घर पर आराम करने से मोटी हो गई। मुझे पतले होने की दवा चाहिए। डॉक्टर- परीक्षण करके बाद 100 गोली की दवाई देते है, महिला इसे कितनी व कब खाना है । डॉक्टर- ये गोलियां खाना नहीं उन्हें दिन में 100 बार जमीन पर बिखेरकर फिर एक-एक बार गिनकर भरना है।

2. पुलिस अधिकारी- कार चालक ने आपकी बाईक को तेजी से टक्कर मारी पर डबल सवारी होने के बाद बच गये बड़े भाग्यशाली हो ! रिपोर्ट खिलाने आये युवक ने कहा भगवान मेरे साथ था । पुलिस अधिकारी फिर पहले आपको जुर्माना भरना पड़ेगा । क्योंकि बाईक पर तीन सवारी बैठना कानून के खिलाफ है।

3. एक नेताजी चुनावी भाषण के दौरान कह रहे थे मैं ग्यारंटी के साथ कह सकता हूँ भिन्न-भिन्न जातियाँ और भिन्न-भिन्न भाषायें होते हुए भी भारत देश एक है। पत्रकार ने जानना चाहा कैसे ? नेताजी ने बताया जब में केरल में भाषण दे रहा था तो वहाँ लोग हंस रहे थे। आसम में भी लोग हंस रहे थे और आज कलकत्ता में भाषण दे रहा था तो भी वहाँ लोग हंस रहे थे।

4. एक प्रसिद्ध डॉक्टर की अचानक तबियत खराब हो गई, उन्होंने अपने सहायक से तत्काल दूसरे डॉक्टर को बुलाने को कहा । सहायक ने बड़ी विनम्रता से कहा आप तो खुद माने हुए डॉक्टर हो दूसरे डॉक्टर की क्या जरूरत है। डॉक्टर गुस्से में बोले तुझे नही मालूम कि मेरी फीस अधिक है।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

पाक कला

समोसा

सामग्री- 3 कच्चे केले
2 चम्मच हरी मिर्च, अदरक पेस्ट
1/2 चम्मच हल्दी पाउडर
1 चम्मच गरम मसाला
1/2 चम्मच धनिया पाउडर
स्वादानुसार नमक
1 नींबूरस
2 कप मैदा
3 चम्मच तड़के के लिये तेल
आवश्यकतानुसार तेल

विधि- मैदा के अंदर नमक डालकर उसका आटा गूंद लेंगे और साइड में रख देंगे अभी हम मसाला के तैयारी करते हैं समासो के लिये।

कच्चे केले को कुकर में पका लें फिर उसका छिलका निकाल कर उसको मैश कर लें एक कड़ाई में तेल गर्म करें उसके अंदर अदरक का पेस्ट और जीरा चटकायें फिर हल्दी पाउडर, गरम मसाला पाउडर, नमक, नींबू का रस, धनिया पत्ते डालकर अच्छे से मिक्स करें फिर उसको ठंडा करें।

कढ़ाई में तेल गर्म करने रखें आटे से रोटी बेलें उस रोटी को बीच से दो भाग कर ले मसाले का थोड़ा भाग लेकर रखें और उसको तिकाने आकार में फोल्ड कर लें। इस तरह से सभी को फोल्ड करके समोसे तैयार करने और गर्म तेल के अंदर डाले और हरी चटनी, सॉस के साथ परोसे।

बाल कहानी

शक काला जादू का

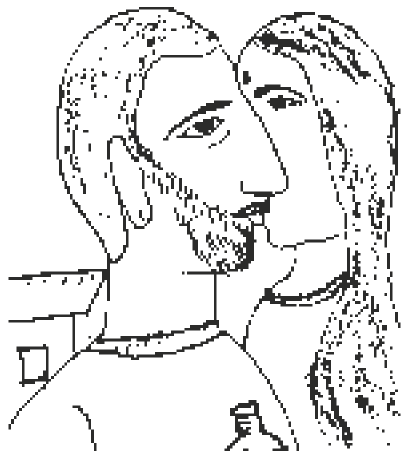

आंध्रप्रदेश के मेंडक जिला में सयामपेट तहसील में एक कटरियल नाम का एक गांव हैं हरे भर खेतों के बीच गांव अति रमणीय लगता है वह गाँव नदी के किनारे होने से इस गाँव की मनोहरता और भी अधिक महसूस होती है। गाँव में एक प्राथमिक स्कूल के सिवाय कोई भी शिक्षा के साधन नहीं अतः इस गांव में शिक्षा का अंधविश्वास ज्यादा है इस गाँव के लोग जादू टोना में अधिक उलझे रहते है। गाँव में कोई भी समझदार आदमी नहीं जो अंधविश्वास के अंधेरे से लोगों को बाहर निकालकर ज्ञान के प्रकाश में लाने वाला कोई नहीं दिखता है।

नवरात्री का पहला दिन था। गाँव के गणेश अण्णा साव की तबीयत बिगड़ रही थी उसने एक दिन पहले खूब शराब पीली थी। गणेश शराब का नशेडी था उसे शराब आदत लग चुकी थी। गणेश के लीवर में काफी सूजन आ चुकी थी। गणेश अब अपने पलंग पर ही पड़ा रहता था परंतु वह फिर भी शराब पीने से चूकता नहीं था। उसकी पत्नी लक्ष्मी के मन में डर लगा गया था कि उसके पति ज्यादा दिन तक साथ नही रह पायेंगे।

गणेश की पत्नी कुंती ने अपने देवर छुटकू से अब तुम्हारे अण्णा जी ज्यादा नहीं जी पायेंगे वे किसी के काले जादू के शिकार को चुके हैं छुटकू को अपनी भाभी पर पूरा विश्वास था उसने पूँछा कि भाभी अण्णा पर काला जादू कर कौन रहा है। कुंती ने कहा कि और कोई नहीं हमारी जिससे लड़ाई चल रही है। छुटकी ने कहा अच्छा वो कलूटी काली उसे मैं जिन्दा नहीं छोडूँगा।

छुटकू अपने दोस्तों को कलारी पर ले जाता और उन्हें छककर शराब पिलाता है वे सब मिलकर सावित्री को गाली देने लगते हैं और छुटकू आवेश में आकर कहीं से पेट्रोल लाता है और वह सावित्री की तरफ फेंकने लगता तब उसके दोस्त भी उसका देते है तो देखते ही सावित्री लपटों के चंगुल में घिर जाती है। गाँव के लोग जैसे तैसे आग बुझाते है कोई पुलिस तक सूचना देता है पुलिस आती है सावित्री को अस्पताल ले जाती है सावित्री इलाज के चलते दुनिया छोड़ देती है। सभी आरोपी जेल में स्थान पाते है। कुंती भी जेल जाती हैं । कुछ दिन बाद गणेश को कुंती की गलती समझ में आती है कि अनावश्यक संदेह में सावित्री मारी गई।

संस्कार गीत

जीवन का सपना

अनुशासन है जीवन अपना
सफल करें जीवन का सपना।
काम करें हम सभी समय पर
सुविधाओं पर नहीं ललचना ॥

1.
उन्नति में क्रम कभी न लांघे
चाहत अपनी संयत कर ले
नहीं महत्वाकांक्षी बने हम
नहीं सफलता पर इतराये
भ्रष्टाचारी नहीं बने हम
पद लो लुपता कभी न रखना

2.
न्यायमार्ग को कभी न छोडे
प्रण संयम को कभी न तोड़े
ईर्ष्यात्मु बन नहीं कुंडे हम
सत्य राह को कभी न मोड़े
लघु मार्ग पर ललचायें
मुश्किल में भी हिम्मत रखना

3.
कर्मवीर बन कर्म पथिक रह
अग्निपथ के राही बने हम
देश धर्म अरू तीर्थ रक्षा हेतु
नहीं हौसले पड़ें कभी कम
पग जल जाये पथ नत जाना
सही राह पर चलते रहना।

बाल कविता

संयम उपकरण

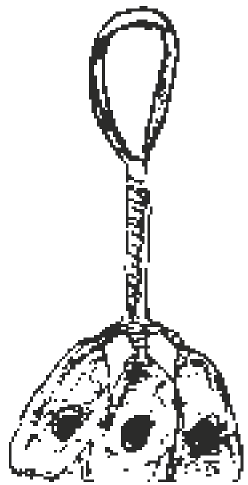

कोमल पंख मयूर तजे जब
उनका संग्रह होता है
सुंदर सुंदर मोर पंख से
संयम उपकरण बनता है
पिच्छी इसको कहते है
मुनि दिगम्बर रखते है
हलकी कोमल गहे न धूलि
रक्षा जीवों की करती
मुनि दिगम्बर धारे इसको
करूण रस में यह पगती
पिच्छी की महिमा जो समझे
वही दिगम्बर होता है
काम क्रोध मद संग छोड़कर
मुनि दिगम्बर होता है।

समाचार

दीक्षायें सम्पन्न

ऊन- आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में गणिनी आर्यिका श्री विशिष्ट श्री माताजी के करकमलों से 10 अप्रैल 2025 महावीर जयंती पर क्षुल्लिका विपथश्री माताजी, ब्र. जयश्री देवी छतरपुर की आर्यिका दीक्षा श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र ऊन में सम्पन्न हुई। जिनका नाम क्रमशः आर्यिका श्री विपथश्री माताजी, आर्यिका श्री विजयमति श्री माताजी रखा गया।

कुण्डलपुर- आचार्य श्री समयसागर महाराज जी के करकमलों से 30 मार्च 2025 रविवार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर दमोह (म.प्र.) में क्षुल्लक श्री औचिन्त्यसागर महाराज, क्षुल्लक श्री गहनसागरजी महाराज, क्षुल्लक श्री कैवल्यसागरजी महाराज, क्षुल्लक श्री सुदयसागर जी महाराज, क्षुल्लक श्री समुचितसागरजी महाराज, क्षुल्लक श्री उचितसागरजी महाराज, क्षुल्लक श्री उत्साहसागरजी महाराज, क्षुल्लक श्री अथाहसागर जी महाराज, क्षुल्लक श्री अमापसागरजी महाराज, क्षुल्लक श्री उद्यमसागरजी महाराज, क्षुल्लक श्री गरिष्ठसागरजी महाराज, क्षुल्लक श्री गौरवसागरजी महाराज को एलक दीक्षा दी गई जिनके नाम पूर्वानुसार ही रहें।

इंदौर- आचार्य श्री विशदसागर महाराज जी के करकमलों से एलक श्री विपिनसागर महाराज जी को जैनेश्वरी दीक्षा 11 अप्रैल 2025 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर मोदी जी की नसिया में दी गई। जिनका नाम मुनि श्री विपिनसागर जी महाराज रखा गया।

दिल्ली- आचार्य श्री सौभाग्यसागर जी महाराज के करकमलों से ब्र. दीक्षा दीदी की दीक्षा स्टेट बैंक ऑफ कॉलोनी दिल्ली में 10 अप्रैल 2025 महावीर जयंती के दिन सम्पन्न हुई। जिनका नाम आर्यिका श्री सौम्यमति माताजी रखा गया।

दिल्ली- आचार्य श्री सौभाग्यसागर जी महाराज जी के करकमलों से पश्चिम बिहार दिल्ली में 20 अप्रैल 2025 को ब्र. देवकी जैन दिल्ली की दीक्षा सम्पन्न हुई। जिनका नाम सुअवसरमति रखा गया।

अजमेर- आचार्य श्री वसुंनदी महाराज के करकमलों से 23 अप्रैल 2025 को बा. ब्र. सौम्या दीदी बम्हौरी, बा. ब्र. प्रज्ञा दीदी अजमेर, बा. ब्र.सुविज्ञा दीदी फिरोजाबाद, बा. ब्र. गुणज्ञा दीदी अजमेर, बा. ब्र. धर्मप्रभा दीदी मुंबई, बा. ब्र. विजयप्रभा दीदी बम्हौरी को दीक्षा दी गई जिनका नाम क्रमशः आर्यिका श्री प्रशांतनंदिनी माता जी, आर्यिका श्री प्रशस्तनंदिनी माताजी, आर्यिका श्री स्वभावनंदिनी माताजी, क्षुल्लिका श्री बोधिनंदिनी माताजी, क्षुल्लिका श्री सरलनंदिनी माताजी, क्षुल्लिका श्री विश्वासनंदिनी माताजी रखा गया।

बही पार्श्वनाथ मंदसौर- आचार्य श्री वर्धमान सागर महाराज के करकमलों से ब्र. राजेश जैन मेडता सिटी राजस्थान, ब्र. सुरेश जैन जयपुर को श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बही पार्श्वनाथ मंदसौर में मुनि दीक्षा दी गई। जिनके नाम क्रमशः मुनि श्री धेयसागर जी महाराज, मुनि श्री भुवनसागरजी महाराज रखा गया।

ऐतिहासिक आगमानी

जबलपुर- आचार्य श्री समयसागर महाराज जी के ससंघ की ऐतिहासिक आगमानी 07 अप्रैल 2025 सोमवार को संस्कारधानी जबलपुर में दीनदयाल चोकसे कमानिया गेट बड़ा फुवारा में हुआ। तथा अद्वितीय धर्मसभा आयोजित की गई।

पंचकल्याणक सम्पन्न

ऊन- आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी ससंघ के सान्निध्य में 07 से 12 अप्रैल पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र ऊन खरगोन (म.प्र.) में बाल. ब्र. प्रतिष्ठाचार्य धर्मचन्द्र शास्त्री अष्टापद नई दिल्ली के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ।

सिद्धवरकूट- आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 20 से 22 अप्रैल 2025 श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट खरगोन (म.प्र.) में लघु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ।

वर्ग पहेली 307

1	2			■	3		4	5
6		■	■	7		■	8	
9			10		■	11		■
■	■	■		■	12		■	
13	14	14ए	■	15		■	16	
17			■		■	18		■
	■	19	20		■	21		22
	■	■		■	23			
24				■	25			■

बाये से दाये

1. द्वादशांग श्रुत का पहला अंग -4
3. श्रुतज्ञान का बारहवा अंग -4
6. धारा, प्रवाह, पैनापन -2
7. वश में करने योग्य व्यक्ति -2
8. प्रति, हरि, प्रभु -2
9. मेवाड़ का ऐतिहासिक नगर -5
11. मनुष्य, आदमी, व्यक्ति -2
12. एक रसायनिक तत्त्व, रस राज -2
13. रस रसीला सहित रसमय स्वादिष्ट -3
15. जंगल, अरण्य, अटवी -2
16. पुराना धान, बकरा -2
17. मथना बिलौना अवगाहन -3
18. ख्वाहिश का पर्यायवाची -2
19. एक भारत की द्वीप, दबाना रोकना -3
21. रूका हुआ, बाधा युक्त -3
23. मति ज्ञान पूर्वक होने वाला अर्थ तरज्ञान, सुना हुआ ज्ञान -4
24. हाथी, गजेन्द्र -4
25. तृण, घास -3

ऊपर से नीचे

1. नीव, मूल, बुनियाद -3
2. भट्ट, चापलूस, भाद, बंधु -3
3. देखने योग्य सीन -2
4. राकट, गाड़ी -2
5. रेट, मूल्य -3
10. प्रभात सुबह -2
11. थोड़ा कम -3
12. पत्ता, तम्बूल, पृष्ठ, मुखशुद्धि का पत्ता -2
13. श्रुतज्ञान के चौथे अंग का नाम -3
14. कार स्यंदन बहल वाहन -4
14ए. प्रमाण संस्कृत -5
15. भार, बोझ, तौल -3
16. मर्यादा सहित ज्ञान, द्रव्यक्षेत्र काल आदि से मर्यादित ज्ञान -4
18. वायुगति, शीतलवायु -3
20. केवल सिर्फ मात्र -2
22. शरीर, देह, काया -2
23. कर्ण, ध्वनि सुनना बात कथन -2

वर्ग पहेली 306 का हल

1 स	न्म	2 ति	■	3 का	म	4 धे	5 नू	■
ह	■	6 मि	थ	क	■	7 नू	त	■
8 ज	9 ह	र	■	■	10 र	■	11 न	12 ल
■	म	■	13 सं	शे	व	14 र	■	ज
15 कुं	■	■	ब्ब	■	16 र	त	17 न	■
18 ड	19 ल	20 बौ	जी	■	■	21 ना	म	क
22 ल	ल	क	■	■	23 बा	री	क	■
24 पु	का	र	■	25 क	द	■	■	26 ना
27 र	र	■	28 क	म	र	■	29 पा	क

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

....

पंचकल्याण विधि-विधान सामग्री एवं हाथी स्वर्ण रथ आदि एक ही स्थान पर उपलब्ध

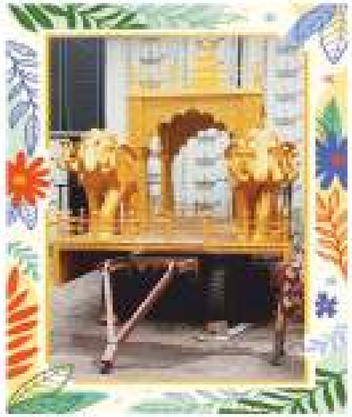

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर में गिफ्ट आयटम उपलब्ध हैं जिनमें घड़ी, शील्ड, पेन, बैग, बैच, आदि सामग्री तथा पंचकल्याणक, पूजन, विधान, शिलान्यास, गृह प्रवेश, गृह शुद्धि, शिविर आदि की सम्पूर्ण सामग्री एक साथ उपलब्ध रहती है। जैसे स्वर्ण शिला, रजत, ताम्रशिला, कील, कलश, पंचरत्न, स्वस्तिक, हार, मुकुट, कंठी, स्थापना पट्ट, पचरंगी झंडे, अष्ट मंगल द्रव्य, अष्ट प्रातिहार्य, पंचमेरु, पांडुक शिला, कलश, मंगल कलश, शिखर कलश, ध्वज दंड, दीपक बाक्स, दीपक चंदोवा, पालना, छत्र, चमर, भामंडल, सिंहासन, वंदनवार, धोती-दुपट्टा, सभी विधानों के मांडने धातु में एवं फ्लेक्स में उपलब्ध है।

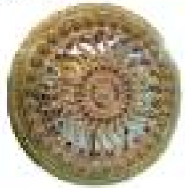

विभिन्न आकर्षक डिजाइनों में स्वर्ण कलश, रजत कलश (ओरिजनल चाँदी), ताम्र कलश आदि जो प्लास्टिक बॉक्स स्टैण्ड के साथ उपलब्ध हैं। जो कभी नहीं पड़ेंगे एवं तीन का सेट होने के बावजूद बिखरेंगे नहीं। चातुर्मास कलश का समय पर आर्डर करने पर बॉक्स के पीछे साधु के नाम, कौन सा चातुर्मास, स्थान, आयोजक आदि का नाम भी लिखवाया जा सकता है। तथा इन्दौर से सभी जगह के लिए बस सुविधा उपलब्ध है। जिसके द्वारा आप अपना आर्डर मंगवा सकते हैं।

संस्कार सागर पत्रिका पढ़ने हेतु Click on www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008